संसद में परमाणु ऊर्जा में निजी भागीदारी वाला विधेयक पारित
- 12

भारत में यूपीआई से लेन-देन में 33.5 प्रतिशत की वृद्धि
- 12

अमेरिका ताइवान को 10 अरब डॉलर के उन्नत हथियार बेचेगा भड़का चीन
- 13

श्रृंखला जीतने उतरेगा भारत सूर्यकुमार के प्रदर्शन पर होगी निगाह
- 14

आज का मौसम

21.0⁰ अधिकतम तापमान

10.0⁰ न्यूनतम तापमान

सूर्योदय 06.51

सूर्यास्त 05.20

अमृत विचार

लखनऊ

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण

लखनऊ बरेली कानपुर मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

पौष कृष्ण पक्ष अमावस्या, विक्रम संवत 2082

शुक्रवार, 19 दिसंबर 2025, वर्ष 35, अंक 320, पृष्ठ 14 ■ मूल्य 6 रुपये

कर्नाटक में हेटस्पीच पर सात साल की होगी जेल

बेलगावी, एजेंसी

- सरकार ने सख्त नया कानून किया पारित

कर्नाटक विधानसभा ने गुरुवार को हंगामे के बीच नफरत फैलाने वाले भाषण पर रोक से संबंधित एक विधेयक पारित कर दिया। घृणा भाषण और घृणा अपराध (रोकथाम) विधेयक देश का पहला ऐसा कानून है, जिसमें सात साल तक की जेल और एक लाख रुपये तक जुर्माने का प्रावधान है। इसे भाजपा के विधायकों के हंगामे के बीच पारित कर दिया गया।

मंत्रिमंडल ने इस विधेयक को चार दिसंबर को मंजूरी दी थी और 10 दिसंबर को गृह मंत्री जी. परमेश्वर ने इसे सदन में पेश किया था। मंत्री ने कहा कि बार-बार अपराध करने की स्थिति में 10 साल की जेल की सजा का प्रावधान घटाकर सात साल कर दिया गया है। विधेयक के अनुसार, ऐसी कोई भी अभिव्यक्ति, जो किसी भी पूर्वाग्रहपूर्ण हित को पूरा करने के लिए जीवित या मृत व्यक्ति, वर्ग या व्यक्तियों या समुदाय के समूह के खिलाफ चोट, शत्रुता या घृणा या दुर्भावना की भावना पैदा करने के इरादे से सार्वजनिक रूप से बोले गए या लिखित शब्दों में या संकेतों द्वारा प्रकाशित या प्रसारित की जाती है, वह घृणास्पद भाषण है।

भारत-ओमान व्यापार समझौता दोनों देशों को देगा ऊर्जा : मोदी

मस्कट, एजेंसी

- प्रधानमंत्री बोले- निवेश में नया विश्वास पैदा करने के साथ अवसरों के नए द्वार खोलेगा यह समझौता

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार को कहा कि भारत और ओमान के बीच व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता (सीईपीए) द्विपक्षीय संबंधों को नया विश्वास एवं ऊर्जा प्रदान करेगा और दोनों देशों में वृद्धि के अवसर भी पैदा करेगा। प्रधानमंत्री ने यहां आयोजित भारत-ओमान व्यापार शिखर सम्मेलन में यह बात कही।

उन्होंने अपने संबोधन में मांडवी से मस्कट तक दोनों देशों के बीच सदियों पुराने समुद्री व्यापारिक संबंधों का उल्लेख किया जो वर्तमान समय में जीवंत वाणिज्यिक आदान-प्रदान की आधारशिला हैं। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के 70 वर्ष पुराने कूटनीतिक संबंध सदियों से निर्मित विश्वास और मित्रता का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रधानमंत्री मोदी की मौजूदगी में भारत और ओमान ने मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौते के तहत वस्त्र, कृषि उत्पाद तथा चमड़े के सामान सहित भारत के 98 प्रतिशत निर्यात को ओमान में शुल्क-मुक्त पहुंच मिलेगी। इसे आधिकारिक तौर पर व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता (सीईपीए) कहा गया है। सीईपीए को भारत-ओमान के साझा भविष्य की रूपरेखा करार देते हुए प्रधानमंत्री ने व्यापार जगत के लोगों से इस समझौते की पूरी क्षमता का लाभ उठाने का आह्वान किया। प्रधानमंत्री ने कहा, आज हम एक ऐसा ऐतिहासिक निर्णय ले रहे हैं, जिसकी गूंज आने वाले कई दशकों तक सुनाई देगी। व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता (सीईपीए) हमारी साझेदारी को 21वीं सदी में नया विश्वास एवं नई ऊर्जा प्रदान करेगा। उन्होंने कहा कि यह समझौता द्विपक्षीय व्यापार को नई गति देगा, निवेश में नया विश्वास उत्पन्न करेगा और हर क्षेत्र में अवसरों के नए द्वार खोलेगा। प्रधानमंत्री मोदी ने पिछले 11 वर्षों में भारत की आर्थिक सफलता का उल्लेख करते हुए कहा कि अगली पीढ़ी के सुधारों, नीतिगत स्थिरता, सुशासन एवं निवेशकों के उच्च विश्वास के दम पर देश विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की राह पर अग्रसर है। कहा, भारत ने पिछले 11 वर्ष में न केवल नीतियों में बदलाव किया है, बल्कि अपने आर्थिक स्वरूप को भी बदल दिया है।

ओमान के सुलतान हैसम बिन के साथ प्रधानमंत्री मोदी।

मोदी को 'ऑर्डर ऑफ ओमान' सम्मान से नवाजा गया

मस्कट। ओमान के सुलतान हैसम बिन तारिक ने द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत बनाने में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के योगदान के लिए गुरुवार को उन्हें विशेष नागरिक सम्मान 'ऑर्डर ऑफ ओमान' से नवाजा। प्रधानमंत्री को ओमान की दो दिवसीय यात्रा के दौरान यह सम्मान दिया गया। तीन देशों के अपने दौरे के दौरान मोदी जॉर्डन और इंडोनेशिया की यात्रा कर चुके हैं। प्रधानमंत्री मोदी को इस सम्मान समेत दूसरे देशों में 28 से अधिक उच्चतम नागरिक सम्मान से नवाजा जा चुका है। हाल ही में उन्हें इथियोपिया में 'ग्रेट ऑनर निशां ऑफ इथियोपिया' और कुवैत में 'ऑर्डर ऑफ मुबारक अल-कबीर' से सम्मानित किया गया था। भारत और ओमान के बीच कूटनीतिक संबंधों की 70वीं वर्षगांठ के अवसर पर मोदी ओमान की यात्रा पर हैं।

ब्रीफ न्यूज

सुरक्षाबलों से मुठभेड़ में तीन माओवादी ढेर

सुकमा। छत्तीसगढ़ के सुकमा जिले में गुरुवार को सुरक्षाबलों और माओवादियों के बीच मुठभेड़ में एक महिला माओवादी समेत तीन माओवादी मारे गए। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि जिले के गोलापल्ली थाना क्षेत्र के जंगल और पहाड़ी में माओवादियों की मौजूदगी की जानकारी के आधार पर सुकमा जिला रिजर्व गार्ड (डीआरजी) के दल को माओवादी विरोधी अभियान में रवाना किया गया था। गुरुवार सुबह से सुरक्षाबलों और माओवादियों के बीच रुक-रुक कर गोलीबारी जारी है और इस मुठभेड़ में अभी तक एक महिला माओवादी समेत तीन माओवादियों के मारे जाने की सूचना है।

आयुर्वेदिक सिरप बनाने वाली अवैध फैक्टरी सील

इंदौर। मध्यप्रदेश के इंदौर जिले में प्रशासन ने आयुर्वेदिक सिरप बनाने वाली अवैध फैक्टरी गुरुवार को सील कर दी। अधिकारियों ने बताया कि मुखबिर की सूचना पर धरमपुरी गांव में आवासीय परिसर में संचालित फैक्टरी पर छापा मारा गया, जहां 30 से अधिक प्रकार के आयुर्वेदिक सिरप बनाए जा रहे थे। सुरेंद्र सिंह नामक व्यक्ति के निर्देशन में संचालित फैक्टरी में इन सिरप की गुणवत्ता जांचने के लिए कोई प्रयोगशाला नहीं थी और संचालक द्वारा सिरप के निर्माण में इस्तेमाल घटकों से जुड़े जरूरी दस्तावेज भी प्रस्तुत नहीं किए जा सके। सिरप की पैकेजिंग पर अलग-अलग कंपनियों के नाम पाए गए।

लोस में 'जी राम जी विधेयक' पारित

विपक्ष ने हंगामा कर जताया विरोध, शिवराज ने कांग्रेस पर बापू के आदर्श खत्म करने का लगाया आरोप

- आसन के समीप हंगामा कर रहे कुछ विपक्षी सदस्यों ने मंत्री के सामने कागज उछाले
- विधेयक को ग्रामीण रोजगार खत्म करने वाला कदम बताया

नई दिल्ली, एजेंसी

लोकसभा ने गुरुवार को विपक्ष के विरोध के बीच 'विकसित भारत-जी राम जी विधेयक, 2025' को पारित कर दिया। ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि कांग्रेस ने बापू के आदर्शों को मार दिया, जबकि मोदी सरकार ने उन्हें जिंदा रखा है। मनरेगा योजना की जगह नया विधेयक लाने और उसमें से महात्मा गांधी का नाम हटाने को लेकर विपक्ष के आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए चौहान ने कहा कि 'विकसित भारत-जी राम जी विधेयक, 2025' के माध्यम से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार महात्मा गांधी के आदर्शों को लागू करने और विकसित गांव की बुनियाद पर विकसित भारत बनाने के लक्ष्य की दिशा में काम कर रही है।

इससे पहले बुधवार को सदन में उक्त विधेयक पर देर रात तक चर्चा हुई और विपक्ष के अधिकतर सदस्यों ने इसे विभाग संबंधी संसदीय स्थायी समिति को विचार-विमर्श के लिए भेजने की मांग की। कांग्रेस नेता केसी वेणुगोपाल ने गुरुवार को मंत्री के जवाब से पहले यह मांग फिर से उठाई जिसे आसन की ओर से अस्वीकार कर दिया गया। इसके बाद विपक्षी सदस्यों की नारेबाजी के बीच चौहान ने अपना जवाब पूरा किया और उनके उत्तर के बाद सदन ने विपक्ष के कुछ सदस्यों के संशोधनों को खारिज करते हुए 'विकसित भारत-जी राम जी विधेयक, 2025' को ध्वनिमत से पारित कर दिया। इस दौरान आसन के समीप हंगामा कर रहे कुछ विपक्षी सदस्यों ने मंत्री के सामने कागज भी उछाले। चौहान ने कहा कि देश में 1960-61 में ग्रामीण जनशक्ति कार्यक्रम बनने से लेकर मनरेगा तक समय-समय पर विभिन्न योजनाएं बनती रही हैं। उन्होंने कहा कि इनसे उद्देश्य पूरा नहीं होता या थोड़ा ही लक्ष्य पूरा होता है तो नई योजनाएं लाई जाती हैं। मनरेगा के नाम में पहले महात्मा गांधी का नाम नहीं था और इसका नाम नरेगा था, लेकिन 2009 के लोकसभा चुनाव से पहले वोटों के कारण कांग्रेस को बापू याद आ गए और उनका नाम जोड़ा गया। चौहान ने आरोप लगाया, कांग्रेस नीत सरकार ने मनरेगा को भी ताकत के साथ लागू नहीं किया और पीएम ने इसे सही से क्रियान्वित किया। उन्होंने संप्रग और राजग सरकार के समय इस योजना के क्रियान्वयन की तुलना करते हुए कहा कि कांग्रेस के समय जहां 1660 करोड़ श्रम दिवस सृजित हुए थे, वहीं मोदी सरकार में 3210 करोड़ श्रम दिवस का सृजन किया गया।

मनरेगा की 'योजनाबद्ध हत्या' की जा रही

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने आरोप लगाया कि मनरेगा का सिर्फ नाम नहीं बदला जा रहा है, बल्कि इस योजना की 'योजनाबद्ध हत्या' की जा रही है तथा विदेशी धरती पर प्रधानमंत्री मोदी द्वारा महात्मा गांधी की प्रतिमाओं पर फूल चढ़ाया जाना सिर्फ दिखावा है। खरगे ने संसद परिसर में विपक्षी दलों के विरोध प्रदर्शन के बाद यह भी कहा कि मनरेगा का नाम बदलने के सरकार के कदम का कांग्रेस सड़क से संसद तक पुरजोर विरोध करेगी। संसद परिसर में कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी, खरगे, और कई अन्य विपक्षी दलों के सांसदों ने प्रदर्शन किया। विपक्षी सांसदों ने 'गरीबों का अधिकार वापस दो' और 'तानाशाही नहीं चलेगी' के नारे लगाए।

कांग्रेस पार्टी ने तो गांधी का नाम चुराने का पाप किया : शिवराज

केंद्रीय मंत्री ने कहा, कांग्रेस पार्टी ने तो गांधी का नाम चुराने का पाप किया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाद्रा ने सदन में कहा कि यह सरकार सनक में नाम बदल रही है। चौहान ने कहा, हम सनक में नाम नहीं बदल रहे, अपने परिवार के लोगों पर नाम रखने की सनक तो कांग्रेस की है। चौहान ने दावा किया कि कांग्रेस की सरकारों के समय सैकड़ों योजनाओं, इमारतों, उत्सवों, संस्थानों आदि के नाम गांधी परिवार के सदस्यों- जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी और राजीव गांधी के नाम पर रखे गए थे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस महात्मा गांधी का नाम लेकर ढोंग कर रही है और उसने तो देश के बंटवारे के दिन, कश्मीर को विशेष दर्जा दिये जाने के साथ, इंदिरा गांधी द्वारा आपातकाल लगाए जाने के दिन ही बापू के आदर्शों की हत्या कर दी थी।

रिटायरमेंट से पहले जजों का ताबड़तोड़ फैसले सुनाना दुर्भाग्यपूर्ण : शीर्ष कोर्ट

नई दिल्ली, एजेंसी

- ऐसा लगता है कि न्यायाधीश लास्ट ओवर में छक्के मार रहे हैं
- सेवानिवृत्ति से पहले कई आदेश पारित करने की प्रवृत्ति ठीक नहीं

शीर्ष कोर्ट ने सेवानिवृत्ति से ठीक पहले 'बहुत सारे आदेश' पारित करने की न्यायाधीशों की 'बढ़ती प्रवृत्ति' पर आपत्ति जताई और इसकी तुलना मैच के अंतिम ओवरों में बल्लेबाज द्वारा 'छक्के मारे जाने' से की। प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली उच्चतम न्यायालय की एक पीठ मध्य प्रदेश के एक प्रधान और जिला न्यायाधीश की याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें उन्होंने कथित तौर पर कुछ संदिग्ध न्यायिक आदेशों के संबंध में उनकी निर्धारित सेवानिवृत्ति से ठीक 10 दिन पहले उन्हें निलंबित करने के उच्च न्यायालय के सामूहिक फैसले को चुनौती दी थी।

न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची और न्यायमूर्ति विपुल एम पंचोली भी इस पीठ में शामिल थे। पीठ ने कहा, याचिकाकर्ता ने सेवानिवृत्ति से ठीक पहले छक्के लगाने शुरू कर दिए। यह एक दुर्भाग्यपूर्ण प्रवृत्ति है। मैं इस पर विस्तार से चर्चा नहीं करना चाहता। सीजेआई ने कहा, सेवानिवृत्ति से ठीक पहले न्यायाधीशों की बहुत सारे आदेश पारित करने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। मप्रदे के न्यायिक अधिकारी 30 नवंबर को सेवानिवृत्त होने वाले थे और उन्हें कथित तौर पर उनके द्वारा पारित दो न्यायिक आदेशों के कारण 19 नवंबर को निलंबित कर दिया गया।

सीजेआई ने न्यायिक त्रुटि और कदाचार के बीच अंतर स्पष्ट किया

सीजेआई ने न्यायिक त्रुटि और कदाचार के बीच अंतर स्पष्ट करते हुए कहा, उन्हें इसके लिए निलंबित नहीं किया जा सकता। लेकिन अगर आदेश स्पष्ट रूप से बेईमानी भरे हों तो क्या होगा? यह भी उल्लेख किया कि 20 नवंबर को उच्चतम न्यायालय ने मध्य प्रदेश सरकार को राज्य में न्यायिक अधिकारियों की सेवानिवृत्ति आयु 60 से बढ़ाकर 61 वर्ष करने का निर्देश दिया था।

इंडिगो के सीईओ बोले- बुरा वक्त बीत गया

मुंबई, एजेंसी

- कहा- नेटवर्क की 2200 फ्लाइट्स बहाल 10 दिन में 5 हजार फ्लाइट कैंसिल हुई थीं

इंडिगो के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) पीटर एल्बर्स ने गुरुवार को कर्मचारियों से कहा कि विमानन कंपनी ने परिचालन को सुचारू कर लिया है और सबसे बुरा दौर बीत चुका है।

उन्होंने कहा कि कंपनी का ध्यान अब खुद को मजबूत करने, मूल कारण का विश्लेषण और फिर से वापसी करने पर है। कर्मचारियों को भेजे गए एक वीडियो संदेश में एल्बर्स ने कहा कि व्यवधानों के बाद इंडिगो ने अपनी अधिकतर उड़ान सेवाओं को बहाल कर दिया है। घरेलू विमानन कंपनी में परिचालन संबंधी व्यवधान के कारण इस महीने की शुरुआत में उसकी 5000 उड़ानें रद्द हुईं जिससे हवाई अड्डे पर लाखों यात्रियों को असुविधा और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। एक समय ऐसा था जब दिन में इसकी 1600 उड़ाने रद्द की जा रही थीं। इंडिगो ने तब से धीरे-धीरे सेवाएं बहाल कर दी हैं। गुरुवार को 2,200 उड़ानें संचालित की गईं। विमानन कंपनी व्यवधान के कारणों की समीक्षा कर रही है। साथ ही प्रभावित ग्राहकों को मुआवजा देते हुए अपने परिचालन को सामान्य करने की दिशा में आगे बढ़ रही है। एल्बर्स ने कहा, तूफान से निकलकर हम फिर से उड़ान भरने की राह पर हैं। सबसे बुरा दौर बीत चुका है। उन्होंने कहा कि पिछले दो सप्ताह 'बहुत चुनौतीपूर्ण रहे हैं।

शीर्ष कॉलेजियम की पांच हाईकोर्ट में नए चीफ जस्टिस की सिफारिशें

नई दिल्ली/नैनीताल । सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने केंद्र सरकार से पांच अलग-अलग हाईकोर्ट में पांच न्यायाधीशों को मुख्य न्यायाधीश के रूप में पदोन्नत करने की गुरुवार को सिफारिशें की हैं। प्रधान न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली कॉलेजियम ने बैठक में यह निर्णय लिया। इलाहाबाद हाई कोर्ट के वरिष्ठ न्यायाधीश न्यायमूर्ति मनोज कुमार गुप्ता को वर्तमान मुख्य न्यायाधीश की सेवानिवृत्ति के बाद

- जस्टिस मनोज गुप्ता के उत्तराखंड हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस की अनुशंसा

उत्तराखंड हाईकोर्ट मुख्य न्यायाधीश नियुक्त करने की सिफारिश की गई है। मुंबई हाईकोर्ट की न्यायमूर्ति रेवती पी मोहिते डेरे को मेघालय जबकि इसी अदालत के न्यायमूर्ति एमएस सोनाक को झारखंड हाईकोर्ट में पदोन्नत करने की अनुशंसा की गई है।

'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' के मूर्तिकार राम सुतार का 100 वर्ष की आयु में निधन

नोएडा/मुंबई। केवड़िया स्थित विशालकाय 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' और संसद परिसर में स्थापित गांधी की प्रतिष्ठित प्रतिमा सहित कई ऐतिहासिक प्रतिमाओं के निर्माता प्रख्यात मूर्तिकार राम सुतार का बुधवार देर रात नोएडा स्थित उनके आवास पर निधन हो गया।

सुतार के पुत्र अनिल सुतार ने बताया कि उनकी आयु 100 वर्ष थी और वह उम्र संबंधी बीमारियों से पीड़ित थे। मूर्तिकार राम सुतार के निधन पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सहित देश की कई प्रमुख हस्तियों ने शोक व्यक्त किया और कहा कि उनकी रचनाएं 'भारत के इतिहास और संस्कृति की प्रभावशाली अभिव्यक्ति है'। महाराष्ट्र के धुले जिले में 19 फरवरी, 1925 को एक साधारण परिवार में जन्मे सुतार ने मुंबई के जेजे स्कूल ऑफ आर्ट एंड आर्किटेक्चर में स्वर्ण पदक हासिल किया। उन्हें 1999 में पद्म श्री और 2016 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

घर के बाहर खेल रही बालिका को उठा ले गया तेंदुआ

संवाददाता, बहराइच

अमृत विचार : कतर्नियाघाट वन्य जीव प्रभाग के सुजौली रेंज अंतर्गत अयोध्यापुरवा गांव में गुरुवार की शाम करीब साढ़े छह बजे घर के बाहर खेल रही एक बालिका को तेंदुआ उठा ले गया। बालिका की चीख सुनकर परिजनों व ग्रामीणों ने लाठी-डंडे लेकर उसका पीछा किया। बालिका को जबड़े में दबाकर तेंदुआ एक गन्ने के खेत में जा घुसा। ग्रामीणों की तलाश के दौरान काफी देर बाद गन्ने के खेत में बालिका का क्षत-विक्षत शव मिला।

घटना की सूचना पाकर वन विभाग की टीम व स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंच गयी थी। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। डीएफओ सूरज कुमार ने इस घटना की पुष्टि की है। अयोध्यापुरवा गांव निवासी आलमीन (7) पुत्री मुनव्वर शाम के समय अपने घर के बाहर खेल रही थी। तभी गन्ने के खेत से निकलकर आया तेंदुआ उसे जबड़े में दबाकर उठा ले गया। यह देख परिजनों ने शोर मचाया लेकिन तब तक तेंदुआ बालिका को ले जाने में सफल रहा। परिजनों ने काफी देर तक ग्रामीणो की मदद से बालिका की खोजबीन शुरू की। घर से कुछ दूरी पर स्थित गन्ने के खेत में बालिका का क्षत-विक्षत शव पड़ा मिला। घटना के बाद से परिजनों का रो रोकर बुरा हाल है और ग्रामीणों में दहशत व्याप्त हो गयी है। घटना की सूचना पर वन विभाग व सुजौली पुलिस घटनास्थल पर पहुंची।

शीतकालीन सत्र आज से | सर्वदलीय बैठक में सीएम ने दिया आश्वासन, बोले- सुझावों के अनुरूप समाधान निकालने का प्रयास करेगी सरकार

सरकार सभी चर्चाओं में लेगी भाग, विपक्ष के हर प्रश्न का देंगे सकारात्मक जवाब

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- विधानसभा अध्यक्ष ने सत्र के सुचारु संचालन के लिए सभी दलों से सहयोग का अनुरोध किया

अमृत विचार : उत्तर प्रदेश विधानसभा के शीतकालीन सत्र से पहले गुरुवार को विधान भवन में हुई सर्वदलीय बैठक को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सभी विपक्षी दलों को आश्वस्त किया कि सरकार सभी चर्चाओं में न केवल भाग लेगी, बल्कि विपक्ष के हर प्रश्न का सकारात्मक जवाब भी मिलेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार सुझावों के अनुरूप समाधान निकालने का प्रयास करेगी। विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने शीतकालीन सत्र के सुचारु संचालन के लिए सभी दलों से सहयोग प्रदान करने का अनुरोध किया। इस दौरान सदन की कार्यवाही के निर्बाध संचालन के लिए सभी दलों से सहयोग का आश्वासन मिला।

विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि सभी के सहयोग से ही सदन चलता है। विधानसभा के विगत सत्र में अनेक महत्वपूर्ण मुद्दा पर सकारात्मक चर्चा परिचर्चा हुई। सभी दलों के सहयोग से जनोपयोगी मुद्दों पर तार्किक, तथ्यपरक एवं गुणवत्तापूर्ण चर्चा के माध्यम से जनसमस्याओं का सार्थक समाधान किया जा सकता है। नेता सदन योगी आदित्यनाथ ने कहा कि सदन जनाकांक्षाओं को रखने का महत्वपूर्ण माध्यम है। वर्तमान सत्र में हमें महत्वपूर्ण मुद्दों के साथ ही, विधेयकों पर सार्थक चर्चा करने का अवसर प्राप्त होगा। विधेयकों पर चर्चा करते समय उनके वास्तविक कॉन्सेप्ट व स्वरूप को सदन में प्रस्तुत किया जाना आवश्यक है। विस के पिछले सत्र में विकसित उप्र विजन डॉक्यूमेन्ट/2047 पर लगातार 27 घंटे सार्थक चर्चा पर आईआईटी कानपुर के साथ मिलकर यूपी विजन डॉक्यूमेन्ट बनाया जाएगा। इस चर्चा को पुस्तक का स्वरूप प्रदान किया जा रहा है। संसदीय कार्य मंत्री सुरेश खन्ना ने कहा कि मुख्यमंत्री के नेतृत्व में प्रदेश ने प्रत्येक क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है।

सर्वदलीय बैठक में उपस्थित मुख्यमंत्री योगी व अन्य।

कई मुद्दों पर गरमा सकता है विधानमंडल

लखनऊ। राज्य विधानमंडल का शीतकालीन सत्र शुक्रवार से शुरू होने जा रहा है। सत्र कई मुद्दों पर गरमा सकता है। उप्र. विधानमंडल का शीतकालीन सत्र 24 दिसंबर तक चलने वाले इस सत्र में वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए अनुपूरक बजट समेत कई महत्वपूर्ण विधायी प्रस्तावों पर चर्चा बाद मंजूरी दी जाएगी। सदन में प्रदूषण और कोडीनयुक्त कफ सिरप के मुद्दे पर विपक्ष सरकार को कटघरे में भी खड़ा कर सकता है। एसआईआर पर भी हंगामा संभव है। कार्यवाही के पहले दिन घोसी से सपा विधायक रहे सुधाकर सिंह के निधन पर शोकसभा प्रस्ताव के बाद स्थगित कर दी जाएगी। शनिवार और रविवार को अवकाश के चलते सदन की कार्यवाही नहीं होगी। सोमवार 22 दिसंबर को विधानसभा में वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए अनुपूरक बजट को मंजूरी के लिए प्रस्तुत किया जाएगा। उसी दिन वंदे मातरम् पर चर्चा भी संभव है। इसके बाद 23 दिसंबर को विधायी कार्य संपन्न होंगे। 24 दिसंबर को अनुपूरक बजट पर विस्तृत चर्चा होगी।

अमृत विचार

लखनऊ, शुक्रवार, 19 दिसंबर 2025

दो बूथों पर गणना प्रपत्र जमा करने वाले सावधान, दर्ज होगी एफआईआर

संवाददाता, प्रतापगढ़।

अमृत विचार : जनपद के दो बूथों पर गणना प्रपत्र जमा करने वाले वोटर एक बूथ से गणना प्रपत्र वापस ले सकते हैं। गणना प्रपत्र वापस लेने वाले वोटरों पर कोई कार्रवाई नहीं होगी, लेकिन दो बूथों से फार्म भरने वाले वोटरों के खिलाफ एफआईआर दर्ज होगी।

मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान में वोटरों ने यदि अब तक किन्हीं कारणों से गणना प्रपत्र नहीं भर सके हैं तो 26 दिसंबर

• 26 दिसंबर तक का मिला समय जमा कर सकेंगे गणना प्रपत्र

तक ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों से गणना प्रपत्र जमा किया जा सकता है। जिले के करीब 25 लाख वोटरों में तकरीबन 21 लाख वोटरों के गणना प्रपत्र शत-प्रतिशत ऑनलाइन कर दिया गया है। वहीं, यदि किसी वोटरों का नाम दो बूथों पर दर्ज है और उसने दोनों बूथों पर गणना प्रपत्र भरकर जमा कर दिया है तो एक बूथ से गणना प्रपत्र वापस लेना होगा। चुनाव आयोग के निर्देश पर त्रुटि रहित मतदाता सूची तैयार करने में जिला प्रशासन जुटा है। अगर किसी का नाम वर्ष 2003 की मतदाता सूची में है लेकिन 2025 की सूची में नहीं है तो ऐसे वोटरों को फार्म छह भरना होगा। फार्म भरकर बीएलओ के पास वोटर जमा कर सकते हैं। जिला निर्वाचन अधिकारी शिव सहाय अवस्थी ने बताया कि नए वोटरों के साथ जिन मतदाताओं का नाम 2025 की मतदाता सूची में नहीं है। वह फार्म छह भरें। जानकारी होने के बावजूद दो बूथों पर गणना प्रपत्र जमा करने वाले वोटरों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। एफआईआर दर्ज कराई जाएगी।

सभी एक्सप्रेस-वे पर 20 से 40 किमी तक घटी गति सीमा

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: घने कोहरे और धुंध के मौसम में सड़क दुर्घटनाओं की बढ़ती आशंका को देखते हुए उत्तर प्रदेश एक्सप्रेस-वे औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यूपीडा) ने सभी एक्सप्रेस-वे पर कार, जीप और हल्के वाहन वाहनों की अधिकतम गति सीमा 100 किमी में 20 से 40 किमी कटौती कर दी है। इसी तरह बस और मल्टी-एक्सल यात्री वाहन और मालवाहक पर भी गति सीमा घटाई गई है। यह नई व्यवस्था 19 दिसंबर से 15 फरवरी तक प्रभावी रहेगी।

• यूपीडा का फैसला, 19 दिसंबर से 15 फरवरी तेज रफ्तार पड़ेगी भारी, नियम तोड़ने पर सख्त कार्रवाई के संकेत

यूपीडा के अनुसार, सर्दियों में दृश्यता कई बार 50 मीटर से भी कम रह जाती है। ऐसे में तेज़ रफ्तार न केवल वाहन चालक के लिए, बल्कि अन्य यात्रियों के लिए भी जानलेवा साबित हो सकती है। इसी खतरे को देखते हुए एक्सप्रेस-वे पर चलने वाले सभी श्रेणी के वाहनों के लिए समयवार और वाहन-प्रकार आधारित गति सीमा तय की गई है। यूपीडा ने साफ किया है कि यह गति सीमा अस्थायी लेकिन अनिवार्य है और कोहरे की स्थिति समाप्त होने तक लागू रहेगी। यूपीडा ने एक्सप्रेस-वे पर सरप्राइज पेट्रोलिंग, डेली मॉनिटरिंग और 24x7 एम्बुलेंस तैनाती के निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही एक्सप्रेस-वे पर फॉग लाइट्स, रिफ्लेक्टिव बोर्ड, डेलिनेटर और रोड स्टड्स की संख्या बढ़ाई जा रही है, ताकि कम दृश्यता में भी रास्ता स्पष्ट दिखे। अधिकारियों का कहना है कि नियमों का पालन न करने वालों पर कानूनी कार्रवाई की जा सकती है, क्योंकि यह केवल यातायात नियम नहीं, बल्कि जीवन सुरक्षा से जुड़ा मामला है।

अब इस तरह होगी रफ्तार

- कार, जीप और हल्के वाहन (एम-1 श्रेणी) – सुबह 8 बजे से रात 8 बजे तक : 80 किमी/घंटा, रात 8 बजे से सुबह 8 बजे तक : 60 किमी/घंटा
- बस और मल्टी-एक्सल यात्री वाहन (एम-2 व एम-3) - दिन में : 60 किमी/घंटा, रात में : 50 किमी/घंटा
- मालवाहक वाहन – दिन में : 50 किमी/घंटा-रात में : 40 किमी/घंटा

चालकों से अपील बरतें सावधानी

- कोहरे में हाई बीम का प्रयोग न करें।
- वाहन के बीच सुरक्षित दूरी बनाए रखें।
- अचानक ब्रेक लगाने से बचें।
- फॉग लाइट का उपयोग करें।

न्यूज ब्रीफ

स्वच्छता अभियान से अटल को श्रद्धांजलि

अमृत विचार, लखनऊ : भारत रत्न, पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती के शताब्दी वर्ष के समापन अवसर पर मुख्यमंत्री योगी के निर्देशानुसार 25 दिसंबर को पूरे प्रदेश में विशेष और व्यापक स्वच्छता अभियान चलाया जाएगा। इसके माध्यम से अटल के स्वच्छ, सशक्त और आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने का संदेश जन-जन तक पहुंचाया जाएगा। 18 से 22 दिसंबर के बीच जनपद स्तर पर निबंध लेखन, भाषण, चित्रकला और कविता पाठ जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी। वहीं 25 दिसंबर को लखनऊ स्थित लोकभवन में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की उपस्थिति में मुख्य कार्यक्रम आयोजित होगा। संस्कृति विभाग के तत्वावधान में 25 दिसंबर की शाम उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ में भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसमें काव्य पाठ प्रतियोगिता के विजेता कवि अपनी रचनाओं के माध्यम से अटल के कवि व्यक्तित्व को श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

रेपर्टवा फेस्टिवल का उद्घाटन

अमृत विचार, लखनऊ : पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने कहा कि रेपर्टवा जैसे महोत्सव उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक विविधता और रचनात्मक प्रतिभा को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाते हैं। पर्यटन मंत्री, गुरुवार को राजधानी के जनेश्वर मिश्र पार्क में 'रेपर्टवा फेस्टिवल 2025' के 13वें सीजन का दीप प्रज्ज्वलित कर महोत्सव का उद्घाटन किया। चार दिवसीय रेपर्टवा फेस्टिवल 18 से 21 दिसंबर तक जनेश्वर मिश्र पार्क में आयोजित किया जा रहा है। इसमें स्थानीय कलाकारों के साथ-साथ देशभर की कला प्रतिभाएं अपनी प्रस्तुतियों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध करेंगी।

पार्क का नामकरण स्वामी करपात्री जी के नाम पर करने की मांग

प्रतापगढ़। अमृत विचार : सदर विधायक राजेन्द्र कुमार मौर्य और भाजपा जिलाध्यक्ष आशीष श्रीवास्तव ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर चिलबिला के निर्माणाधीन जैव विविधता पार्क का नाम करण स्वामी करपात्री जी के नाम पर करने की मांग की है। पत्र में कहा गया है कि स्वामी करपात्रीजी भारतीय दर्शन, सनातन संस्कृति, राष्ट्रचेतना एवं सामाजिक मूल्यों के महान प्रतीक थे। उनका सम्पूर्ण जीवन सांस्कृतिक पुनर्जागरण, राष्ट्रहित एवं प्रकृति संरक्षण के लिए समर्पित रहा। ऐसे में जन भावनाओं के दृष्टिगत पार्क का नाम स्वामी करपात्री जी जैव विविधता उद्यान रखा जाना चाहिए। इससे युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कृति, पर्यावरण संरक्षण एवं राष्ट्र सेवा की प्रेरणा मिलेगी।

ओवरब्रिज निर्माण को लेकर जिलाधिकारी को सौंपा ज्ञापन

कार्यालय संवाददाता, बाराबंकी : **अमृत विचार।** भारतीय किसान यूनियन हरपालगुट के जिलाध्यक्ष विक्रांत सैनी के नेतृत्व में गुरुवार को गन्ना संस्थान में धरना प्रदर्शन किया गया और कलेक्ट पहुंचकर जिलाधिकारी शशांक त्रिपाठी को ज्ञापन सौंपा गया। प्रमुख मांग थी बंकी रेलवे क्रॉसिंग पर ओवरब्रिज का निर्माण। जिलाधिकारी ने किसानों को आश्वासन दिया कि ओवरब्रिज के लिए एनओसी भेज दी गई है और उत्तर प्रदेश सरकार ने इसे मंजूरी दे दी है, जल्द ही निर्माण कार्य शुरू होगा। किसान नेताओं ने धान खरीद में देरी और नहरों में कटाव से हुई फसल क्षति पर भी चिंता जताई और मुआवजे की मांग की। इस अवसर पर किसान नेता लालजी यादव, के.के. गुड्डू यादव, शिवमोहन वर्मा, अरविंद यादव, जैद अंसारी सहित सैकड़ों किसान मौजूद थे।

संस्कृति में ही निहित राष्ट्र की आत्मा : योगी

भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय के शताब्दी महोत्सव में मुख्यमंत्री बोले- संस्कृति से कटते ही राष्ट्र हो जाता है निस्तेज

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि किसी भी राष्ट्र की आत्मा उसकी संस्कृति में बसती है। यदि राष्ट्र से उसकी संस्कृति को अलग कर दिया जाए तो वह निस्तेज हो जाता है और अपनी पहचान खो देता है। उन्होंने कहा कि कलाकार भी राष्ट्र निर्माण का सशक्त माध्यम है। सरकार से पूरी मदद आश्वासन देते हुए योगी ने कहा कि कला एक ईश्वरीय गुण है, जिसकी अवमानना नहीं होनी चाहिए।

मुख्यमंत्री योगी गुरुवार को भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय में शताब्दी महोत्सव के उद्घाटन के बाद बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि जैसे आत्मा के बिना शरीर निष्प्राण हो जाता है, उसी प्रकार संस्कृति से विहीन राष्ट्र खंडहर में बदल जाता है। योगी ने यह शताब्दी समारोह केवल एक संस्थान का उत्सव नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक चेतना, स्वर, लय और परंपरा की निरंतरता का उत्सव है। उन्होंने कहा कि भारत की कला, संगीत और लय ने विषम परिस्थितियों में भी अपनी पहचान बनाए रखी, यही कारण है कि सनातन संस्कृति आज भी विश्व को दिशा देने में सक्षम है। उन्होंने कलाकार की कला को ईश्वरीय गुण बताते हुए कहा कि इसका सम्मान होना चाहिए और किसी भी विधा से जुड़े कलाकार को प्रोत्साहन दिया जाना आवश्यक है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय ने बीते 100 वर्षों में भारतीय संगीत, नृत्य, नाट्य और ललित कलाओं को संरक्षित ही नहीं किया, बल्कि उन्हें आधुनिक शैक्षणिक व्यवस्था से जोड़कर प्रतिष्ठा भी दिलाई। उन्होंने स्पष्ट किया कि एक संस्कृति कर्मी भी राष्ट्र निर्माण में उतना ही योगदान देता है, जितना कोई अन्य क्षेत्र का नागरिक। इस अवसर पर उन्होंने संस्थान के संस्थापक पं. विष्णु नारायण भातखण्डे को श्रद्धांजलि अर्पित की।

मुख्यमंत्री योगी ने वर्ष 1940 में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा लिखे गए उस पत्र का उल्लेख किया। उन्होंने कुलपति प्रो. माण्डवी सिंह द्वारा तैयार किए गए विश्वविद्यालय के कुलगीत और लोगो 'नादाधीनं जगत्' की भी सराहना की। मुख्यमंत्री ने कहा कि ओंकार सृष्टि का पहला स्वर है और नाद योग इसकी वैज्ञानिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पुष्टि करता है। योगी ने कुम्भ 2019 और महाकुम्भ 2025 का उल्लेख करते हुए कहा कि यह मिथक टूट गया है कि युवा अपनी संस्कृति से दूर हो रहे हैं।

लखनऊ : भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष के उद्घाटन समारोह में डाक विभाग के विशेष आवरण का विमोचन करते मुख्यमंत्री योगी, कुलपति प्रो. मांडवी सिंह व अन्य।

कलाकारों को सशक्त मंच दे रही सरकार

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार कलाकारों को सुरक्षित, सम्मानित और सशक्त वातावरण देने के लिए प्रतिबद्ध है। भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय इस दिशा में सरकार का महत्वपूर्ण साझेदार है। उन्होंने विश्वविद्यालय के नए प्रस्तावित परिसर, आधुनिक ऑडिटोरियम, ओपन थिएटर और पुराने परिसर को संग्रहालय के रूप में विकसित करने की योजना की भी जानकारी दी। इस अवसर पर 100 वर्षों की यात्रा पर आधारित कॉफी टेबल बुक 'ए लिगेसी ऑफ एक्सिलेंस', डाक विभाग के विशेष आवरण और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ किया गया।

भातखंडे विवि की पूर्व छात्रा पद्मश्री मालिनी अवस्थी को सम्मानित करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ।

ये पूर्व छात्र-छात्रा किए गए सम्मानित

डॉ. पूर्णिमा पाण्डेय (कथक), पद्मश्री मालिनी अवस्थी (लोक गायिका), दिलराज कौर (शास्त्रीय गायन), केवल कुमार (संगीत संयोजक)

40.19 लाख नए वोटर मतदाता सूची में जुड़े

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव-2026 की तैयारियों के तहत कराए गए मतदाता सूची वृहद पुनरीक्षण-2025 के बाद उत्तर प्रदेश में मतदाताओं की संख्या बढ़ी है। पुनरीक्षण के बाद मतदाता सूची में 40.19 लाख नए वोटर जुड़े हैं, जिससे प्रदेश में कुल मतदाताओं की संख्या बढ़कर 12.69 करोड़ हो गई है। वर्ष 2021 के पंचायत चुनाव में यह संख्या 12.29 करोड़ थी।

राज्य निर्वाचन आयुक्त राज प्रताप सिंह ने गुरुवार को प्रेस वार्ता में बताया कि नए मतदाताओं में बड़ी हिस्सेदारी युवाओं की है। इनमें लगभग 15 लाख ऐसे मतदाता हैं, जिन्होंने 18 वर्ष की आयु पूरी कर पहली बार मतदाता सूची में जगह बनाई है। उन्होंने बताया कि 18 से 23 वर्ष आयु वर्ग के मतदाताओं की कुल संख्या अब 1.05 करोड़ हो चुकी है, जो पंचायत चुनावों में युवाओं की बढ़ती भागीदारी का संकेत है।

राज्य निर्वाचन आयुक्त ने स्पष्ट किया कि पुनरीक्षण के दौरान 1.41 करोड़ नाम मतदाता सूची से हटाए गए हैं। इनमें ऐसे मतदाता शामिल हैं, जिनका नाम एक से अधिक स्थानों पर दर्ज था, जिनका निधन हो चुका है या जो स्थायी रूप से अन्यत्र स्थानांतरित हो गए हैं। उन्होंने कहा कि यह प्रक्रिया मतदाता सूची को अधिक शुद्ध, पारदर्शी और त्रुटिरहित बनाने के उद्देश्य से की गई है।

उन्होंने बताया कि पुनरीक्षण शुरू करने से पहले वर्ष 2021 की मतदाता सूची में शामिल सभी 12.29 करोड़ मतदाताओं को स्टेट वोटर नंबर (एसवीएन) आवंटित किया गया। इसके बाद ई-बीएलओ एप और गणना प्रपत्रों के माध्यम से घर-घर जाकर मतदाताओं का सत्यापन किया गया। जिन मतदाताओं के नाम एक से अधिक बार पाए गए, उन्हें सूची से विलोपित किया गया।

राज प्रताप सिंह ने कहा कि एसवीएन किसी भी मतदाता को जीवन में केवल एक बार ही दिया जाएगा। यदि किसी मतदाता का नाम सूची से हटाया जाता है, तो उसका एसवीएन नंबर फ्रीज कर दिया जाएगा और भविष्य में किसी अन्य को आवंटित नहीं होगा। इससे फर्जी और दोहरे मतदाताओं पर पूरी तरह रोक लगेगी। उन्होंने बताया कि पंचायत चुनाव मतदाता सूची का प्रारंभिक प्रकाशन 23 दिसंबर को किया जाएगा। इस अवधि में मतदाता दावे और आपत्तियां दर्ज करा सकेंगे। सभी आपत्तियों के निस्तारण के बाद 6 फरवरी को मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन किया जाएगा।

पंचायत चुनाव

- नई सूची में जुड़े करीब 15 लाख पहली बार वोट डालने वाले युवा
- कुल मतदाता बढ़कर हुए 12.69 करोड़
- वृहद पुनरीक्षण के बाद 1.41 करोड़ नाम हटे, 23 दिसंबर को प्रारंभिक प्रकाशन : राज्य निर्वाचन आयुक्त

खादी प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के बाद चरखे पर हाथ आजमाते मंत्री सुरेश खन्ना।

रोजगार सृजन कर रही खादी: खन्ना

राज्य ब्यूरो, लखनऊ। वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने कहा कि खादी भारत की स्वतंत्रता, स्वदेश और स्वावलंबन का प्रतीक है। खादी एवं ग्रामोद्योग विभाग स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देने के साथ रोजगार सृजन में अहम भूमिका निभा रहा है। संसदीय कार्यमंत्री गुरुवार को केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय परिसर में 10 दिवसीय खादी महोत्सव-2025 का फीता काटकर उद्घाटन करने के बाद संबोधित कर रहे थे। उन्होंने महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर प्रदर्शनी का अवलोकन किया। स्वदेशी, स्वरोजगार और आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को साकार करने की दिशा में उप्र. खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड के तत्वावधान में 18 से 27 दिसंबर तक आयोजित होने वाली मंडल स्तरीय खादी एवं ग्रामोद्योगी प्रदर्शनी-2025 की प्रशंसा की।

23 व 24 दिसम्बर को होगी सांसद खेल स्पर्धा

संवाददाता, प्रतापगढ़। अमृत विचार : सांसद खेल स्पर्धा का आयोजन स्पोर्ट्स स्टेडियम में 23 व 24 दिसंबर को किया जाएगा। इसमें एथलेटिक्स, कबड्डी, वॉलीबॉल, कुश्ती और बैडमिंटन खेल शामिल है। उक्त सभी खेलो में सब जूनियर बालक/ बालिका, जूनियर बालक/ बालिका और सीनियर बालक/ बालिकाओं की प्रतियोगिता होगी। पोर्टल पर अपने पंजीकरण करने वाले एवं प्रतिभाग के इच्छुक खिलाड़ी अपनी सूचना जिला खेल कार्यालय में 21 दिसम्बर तक या हैंडबॉल प्रशिक्षक सचिन शुक्ल एवं कबड्डी प्रशिक्षक जय प्रकाश यादव को अवश्य दे दें। जिला क्रीड़ाधिकारी पूनम लता राज ने बताया कि बिना पंजीकरण के खिलाड़ी प्रतियोगिता में प्रतिभाग नहीं कर पाएंगे।

प्रधानाचार्य समेत तीन पर एफआईआर दर्ज

मदरसा नियुक्ति फर्जीवाड़ा : मृतक आश्रित कोटे में दो बार लॉकडाउन में की गई नियुक्ति

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: प्रदेश के बलरामपुर जिले में मदरसा जामिया अनवारूल उलूम, तुलसीपुर में कनिष्ठ सहायक की नियुक्ति को लेकर सामने आया फर्जीवाड़ा अब गंभीर प्रशासनिक लापरवाही और संभावित भ्रष्टाचार की ओर इशारा कर रहा है। लॉकडाउन जैसी आपात अवधि में की गई इस नियुक्ति ने अल्पसंख्यक कल्याण विभाग की भूमिका पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं। 25 मई 2020 को मो. हसन रजा को मदरसा जामिया अनवारूल उलूम में सहायक शिक्षक आलिया के पद पर नियुक्त किया गया। नियुक्ति के दौरान प्रस्तुत शपथ पत्रों की प्रामाणिकता पर संदेह हुआ, जिसके बाद पूरे मामले की जांच शुरू हुई।

बलरामपुर के तुलसीपुर थाने में जिला अल्पसंख्यक अधिकारी यशवंत मौर्या ने तहरीर दी। जिसमें बताया कि मो. हसन रजा की नियुक्ति 25 मई 2020 को मदरसा जामिया अनअवारूल उलूम में सहायक शिक्षक आलिया के पद पर हुई। उनके द्वारा जमा किये गये दस्तावेज पूरी तरह से संदेहास्पद दिखे। जिसकी जांच कराई गई। मो. हसन रजा ने दो शपथ पत्र दिये। जिसमें एक को खुद ही फर्जी बताया। जांच में सामने आया कि पहले शपथ पत्र में हसन रजा के पास आवश्यक योग्यता न होने की बात कही गई थी, जबकि बाद में दिए गए दूसरे शपथ पत्र में पहले को फर्जी बताया गया। इस विरोधाभास ने मामले को और संदिग्ध बना दिया। विधि विज्ञान प्रयोगशाला (फोरेंसिक) से कराई गई जांच में यह स्पष्ट हुआ कि विवादित शपथ पत्र पर किए गए हस्ताक्षर मो. हसन रज़ा के वास्तविक हस्ताक्षरों से मेल नहीं खाते। रिपोर्ट के अनुसार, यह फर्जी शपथ पत्र मदरसे के लिपिक अजीज अहमद अंसारी द्वारा अपने हाथ से लिखा गया था। खुलासे के बाद मदरसा प्रधानाचार्य मेराज अहमद, लिपिक अजीज अहमद अंसारी सहित अन्य संबंधित व्यक्तियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर ली है।

विभागीय अधिकारियों की कार्यशैली पर सवाल

मामले में यह भी आरोप है कि एक ही व्यक्ति को दो बार मृतक आश्रित कोटे में नियुक्त किया गया। यह गंभीर अनियमितता तत्कालीन जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी पवन कुमार सिंह और तत्कालीन रजिस्ट्रार मदरसा बोर्ड आरपी सिंह की भूमिका पर सवाल खड़े करती है। हालांकि शासन के पत्रों में विभागीय अधिकारियों की कार्यशैली पर सवाल उठाए गए हैं, लेकिन अब तक उनके खिलाफ कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है।

नशा मुक्त भारत अभियान के तहत जनजागरूकता कार्यक्रम आयोजित

कार्यालय संवाददाता, बाराबंकी

अमृत विचार। जिलाधिकारी के निर्देशानुसार समाज कल्याण विभाग द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के तहत वृहस्पतिवार को जहांगीराबाद एजूकेशनल ट्रस्ट ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स, तहसील नवाबगंज में जनजागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

मुख्य अतिथि प्रभारी नारकोटिक्स सेल अनूप शुक्ला रहे। कार्यक्रम में अनिल कुमार श्रीवास्तव (हास्य कवि), सुबोध श्रीवास्तव, राजेन्द्र कुमार, आनन्द श्रीवास्तव, रईसुल हसन इन्द्र कुमार, पुष्पेन्द्र यादव, समरेन्द्र सिंह, री विनोद कुमार, मेजर जनरल विकास सैनी, डा. जावेद एहसन, डा. फैजान आरिफ, डा. पंकज कुमार, अब्दुल नावेच खान, डा. मो. कलीम, विवेक सिंह, मों. अरशद, शोएब अकरम खान, देवाशीष मिश्रा, मिस जुवेरिया और छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुआत निदेशक द्वारा अतिथियों का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत से हुई। आनन्द श्रीवास्तव ने छात्रों को तम्बाकू, सिगरेट और अन्य मादक पदार्थों के शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक नुकसान के बारे में जानकारी दी। हास्य कवि अनिल कुमार श्रीवास्तव ने कविताओं के माध्यम से नशे के हानिकारक प्रभाव पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि ने सभी छात्रों, स्टाफ और अतिथियों को नशे के विरुद्ध शपथ दिलाई।

80 आंगनबाड़ी सेविकाओं को दिया गया प्रशिक्षण

सूरतगंज, बाराबंकी। महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा पोषण एवं स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से गुरुवार को प्रखंड कार्यालय के सभागार में पोषण भी, पढ़ाई भी कार्यक्रम के अंतर्गत दूसरे बैच की तीन दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन खंड विकास अधिकारी देवेंद्र प्रताप सिंह ने किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में फतेहपुर एवं सूरतगंज ब्लाक की कुल 80 आंगनबाड़ी सेविकाओं ने प्रतिभाग किया। प्रभारी सीडीपीओ पूनम गुप्ता ने बताया कि यह प्रशिक्षण 0 से 3 वर्ष के बच्चों के प्रारंभिक बाल्यकाल विकास तथा 3 से 6 वर्ष के बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा को सशक्त एवं गुणवत्तापूर्ण बनाने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है। मास्टर ट्रेनर नीतू सिंह, संध्या पाल एवं मनोरमा देवी ने प्रोजेक्टर के माध्यम से सेविकाओं को प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल, ऑनलाइन उपस्थिति पंजीकरण, प्री टेस्ट व पोस्ट टेस्ट की प्रक्रिया के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

जिलाध्यक्ष ने पंचायत सचिवों से की चर्चा

हैदरगढ़, बाराबंकी। पंचायत सचिवों द्वारा किए जा रहे सत्याग्रह के स्थगित होने के बाद गुरुवार को ग्राम विकास अधिकारी एसोसिएशन के समन्वय समिति के जिलाध्यक्ष अजीत कुमार सिंह ब्लॉक हैदरगढ़ पहुंचे और सचिवों से मुलाकात कर आंदोलन को लेकर विचार विमर्श किया। अजीत कुमार सिंह ने बताया कि 1 से 15 दिसंबर तक चले सत्याग्रह को प्रांतीय नेतृत्व ने शासन से सकारात्मक वार्ता के बाद स्थगित किया है। सचिवों की मांगों पर विचार का पूरा आश्वासन मिला है। इस अवसर पर सचिव पवन कुमार, ज्ञान सिंह, ज्ञान प्रकाश सिन्हा, हर्षित, शिव कुमार, पूजा, अनुराग, जिला मंत्री विनय शुक्ला, प्रफुल्ल वर्मा और हरिमोहन सक्सेना सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

डीएम ने रैन बसेरे का किया निरीक्षण

संवाददाता, प्रतापगढ़।

अमृत विचार : कड़ाके की ठंड और शीतलहर के मद्देनजर डीएम शिव सहाय अवस्थी ने गुरुवार सुबह शहर के रोडवेज बस अड्डा, रेलवे स्टेशन सहित सार्वजनिक स्थलों का भ्रमण कर अलाव और रैन बसेरों की हकीकत जानी। इस दौरान रोडवेज बस अड्डा और रेलवे स्टेशन पर रहने वाले गरीब और असहायों को कंबल दिया।

डीएम ने रोडवेज बस स्टैंड पर बने रैन बसेरा व अलावा का निरीक्षण किया। बस अड्डे पर बने रैन बसेरा में गद्दे और रजाई की व्यवस्था नहीं थी। डीएम ने एआरएम रोडवेज को गद्दे और रजाई की व्यवस्था कराने का निर्देश दिया। इसके बाद डीएम ने एआरएम कार्यालय में उपस्थिति पंजिका का अवलोकन किया। निरीक्षण के दौरान अलाव जलाने के लिए पालिका के कर्मचारी लकड़ी गिरा रहे थे। डीएम ने रोडवेज बस अड्डा और रेलवे स्टेशन पर रहने वाले जरूरतमंदों को कंबल वितरित किया। तुलसीसदन (हादीहाल) में बनाए गए रैन बसेरा का निरीक्षण कर उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी ली। हादीहाल में पुरूष व महिला के लिए अलग-अलग रैन बसेरा बनाया गया है। यहां बेडों की संख्या बढ़ाने का निर्देश दिया।

जरूरतमंद को कंबल वितरित करते डीएम शिव सहाय अवस्थी। अमृत विचार

• दिए आवश्यक दिशा- निर्देश

प्रेमी और उसकी चार बहनें गिरफ्तार

ममता हत्याकांड : संदीप ने ही परिवार के साथ रची थी साजिश, माता-पिता की तलाश में पुलिस

कार्यालय संवाददाता, बाराबंकी

पुलिस की गिरफ्त में प्रेमी और उसकी बहनें। ● अमृत विचार

अमृत विचार : ममता हत्याकांड की परत दर परत खुलती जा रही हैं। पहले हो चुकी शादी बचाने के लिए और ममता के दबाव से पिण्ड छुड़ाने के लिए ही हत्या की साजिश रची गई थी। इस घटना को पूरे परिवार ने मिलकर अंजाम दिया था। मृतका के भाई की तहरीर पर दर्ज मुकदमे के आधार पर पुलिस ने प्रेमी व उसकी चार बहनों को जेल भेज दिया है। माता पिता की तलाश जोरों पर है।

बताते चलें कि मूल रूप से गोरखपुर की रहने वाली ममता शादी के बाद लखनऊ के हंसखेड़ा में पति शिवेन्द्र के साथ रह रही थी। सोमवार की आधी रात वह अचानक बाराबंकी के मसौली थाना अंतर्गत ग्राम शहाबपुर में रहने वाले प्रेमी संदीप यादव के घर पहुंच गई। जहां मंगलवार की सुबह उसका खून से लथपथ शव घर के एक तालाबंद कमरे में मिला। पास ही कुल्हाड़ी भी मिली। पुलिस के हत्थे परिजन भी चढ़ गए क्योंकि मृतका के भाई अभिषेक की तहरीर पर पुलिस ने ममता की हत्या की रिपोर्ट दर्ज की और पांच आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। माता-पिता के फरार होने के चलते हत्याकांड का खुलासा गुरुवार को नहीं हो सका पर जल्द ही हत्या का राजफाश होने वाला है।

सूत्रों ने बताया कि संदीप ममता प्रेम प्रकरण की भनक धौकलपुर स्थित संदीप के ससुराल पक्ष को ठीक से हो चुकी थी और बेहद नाराज ससुराल पक्ष शादी में दिया गया दान दहेज वापस करने का दबाव बना रहा था।

इसी प्रकार ममता भी अपने प्यार का हवाला देकर शादी का दबाव बना रही थी। दोतरफा दबाव संदीप के लिए कम चुनौतीपूर्ण नहीं था। इसीलिए उसने परिवार संग साजिश रची और ममता को अपने घर बुलवा लिया। संदीप के माता पिता व बहनें भले ही खुद को बचाने के लिए बहाने बनाती रहीं पर आखिरकार यह सच सामने आ ही गया कि हर सदस्य की भूमिका ममता की हत्या में थी। संदीप ने अपनी भूमिका भी तय कर रखी थी।

इस संबंध में एएसपी उत्तरी विकास चंद्र त्रिपाठी ने बताया कि पांच आरोपी गिरफ्तार कर जेल भेजे जा चुके हैं। जल्द ही वारदात का खुलासा किया जाएगा।

न्यूज ब्रीफ

दो बच्चों को घर में छोड़ विवाहिता लापता

टिकैतनगर, बाराबंकी, अमृत विचार : क्षेत्र में दो अलग-अलग गुमशुदगी के मामले सामने आए हैं। दोनों मामलों में परिजनों ने कोतवाली में शिकायती पत्र देकर गुमशुदगी दर्ज कराई है। पहला मामला एक गांव का है, जहां की युवती ने पुलिस को बताया कि उनकी बहन 17 दिसंबर की सुबह ऑनलाइन आवेदन कराने के लिए टिकैतनगर जाने की बात कहकर घर से निकली थी, लेकिन वापस नहीं लौटी। परिजनों द्वारा काफी खोजबीन की गई, लेकिन उसका कोई सुराग नहीं लग सका। उसका मोबाइल फोन भी स्विच ऑफ बताया जा रहा है। दूसरी घटना में एक पति ने पुलिस को बताया कि उनकी पत्नी 16 दिसंबर को सुबह करीब 11 बजे बिना किसी को बताए घर से चली गईं। वह घर पर अपनी 5 वर्षीय पुत्री और 3 वर्षीय पुत्र को छोड़ गईं। परिजनों ने रिश्तेदारी और मायके समेत संभावित स्थानों पर तलाश की, लेकिन उसका पता नहीं चल सका।

चौकीदारों को सीओ ने वितरित किये कंबल

फतेहपुर, बाराबंकी, अमृत विचार : कड़ाके की ठंड को देखते हुए फतेहपुर कोतवाली परिसर में ग्राम चौकीदारों के लिए कंबल वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सीओ जगत राम कनौजिया ने सभी चौकीदारों को ठंड से बचाव हेतु कंबल वितरित किए। इस अवसर पर सीओ ने कहा कि ग्राम चौकीदार पुलिस व्यवस्था की रीढ़ की हड्डी हैं, क्योंकि उनका गांवों से सीधा जुड़ाव होता है और गांव में घटित घटनाओं की जानकारी सबसे पहले उनके माध्यम से पुलिस तक पहुंचती है। उनकी सतर्कता और सक्रियता से अपराध नियंत्रण और शांति बनाए रखने में मदद मिलती है। सीओ ने चौकीदारों को सर्दियों में स्वस्थ और सुरक्षित रहने की सलाह दी ताकि वे अपने कर्तव्यों का निर्वहन पूरी निष्ठा से कर सकें।

युवक पर जानलेवा हमला, फायरिंग

बाराबंकी, अमृत विचार : नगर कोतवाली क्षेत्र में गुरुवार को ड्यूटी पर जाते समय एक युवक पर दिनदहाड़े फायरिंग की गई और बाद में गला दबाकर जान से मारने की कोशिश की गई। पीड़ित ने कोतवाली पुलिस में शिकायत की है। मसौली के गुरेला निवासी दीपक ने पुलिस को बताया कि वह गुरुवार दोपहर ड्यूटी के लिए घर से निकला था। असैनी मोड़ पर सत्यदेव उर्फ केशवराम व उसका पुत्र मुकेश व उसकी पत्नी पूजा ने पीछा किया। आरोप है कि सत्यदेव ने कट्टे से फायर किया। जान बचाने के लिए दीपक पुल पर न चढ़कर नीचे उतर गया, जहां आरोपियों ने मारपीट की। सत्यदेव ने गला दबाकर जान से मारने की कोशिश की।

दो होटलों में आपत्तिजनक स्थिति में मिले पांच जोड़े

बाराबंकी, अमृत विचार : गुरुवार को पुलिस व प्रशासन की टीम ने शहर स्थित दो होटलों पर छापेमारी की। यहां पर कमरों में पांच जोड़े आपत्तिजनक स्थिति में मिले। छापा पड़ते ही जोड़ों में हड़कंप मच गया। पुलिस ने इन्हे लिखा पढ़ी कर छोड़ दिया है। वहीं दोनों होटल सील कर दिए गए हैं।

कार्रवाई के वक्त आस पास से एकत्र लोगों ने बताया कि यहां पर यह गंदा काम लंबे समय से चल रहा था। शहर से सटे कस्बा बड़ेल क्षेत्र के फतहाबाद में होटल विकास इन व आदि होटल हैं। गुरुवार को सीओ नगर संगम कुमार, नायब तहसीलदार, नगर कोतवाल सुधीर सिंह व चौकी इंचार्ज के साथ यहां पर औचक छापा मारा गया तो रिसेप्शन पर मौजूद स्टाफ में हड़कंप मच गया। मौजूद रजिस्टरों की जांच की गई तो उनमें किसी तरह की लिखा पढ़ी नहीं मिली। इसके बाद होटल के अंदर कमरों के दरवाजे खुलवाए गए। तो दोनों होटलों में अलग-अलग कमरों में करीब पांच जोड़े आपत्तिजनक हालत में मिले। इनसे पूछताछ की गई तो सभी हड़बड़ा गए। बताया कि मोटी रकम देकर वह सब यहां ठहरे थे। पुलिस ने इन सभी का नाम पता दर्ज कर लिया पर बालिग व सहमति होने के चलते कार्रवाई नहीं की जा सकी। पुलिस ने संचालकों से बात की पर वह कोई अभिलेख नहीं दिखा सके। पुलिस ने दोनों ही होटल सील करवा दिए हैं। बताते चलें कि इन होटलों के पास ही आवासीय विद्यालय तो है ही साथ ही स्थानीय नागरिक लगातार होटलों की संदिग्ध गतिविधियों की शिकायत कर रहे थे।

राजस्व वादों का निस्तारण कर वसूली में लाएं तेजी : डीएम

बाराबंकी, अमृत विचार : गुरुवार को जिलाधिकारी शशांक त्रिपाठी की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट परिसर स्थित लोकसभागार में राजस्व, कर-करेतर और प्रवर्तन कार्यों से संबंधित समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में विभागवार राजस्व वसूली, प्रवर्तन कार्यों की स्थिति और निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की विस्तृत समीक्षा की गई। जिलाधिकारी ने सभी तहसीलों में लंबित वादों के निस्तारण, अवैध अस्पतालों, खनन, गन्ना तौल केंद्र, धान क्रय केंद्र और नहरों में प्रवर्तन कार्यों की प्रभावी निगरानी के निर्देश दिए। उन्होंने परिवहन विभाग में अनुबंधित बसों द्वारा नियमों का उल्लंघन करने वालों पर जुर्माना वसूलने, व्यापार-कर, मार्ग-कर और अन्य राजस्व देयकों की वसूली को प्राथमिकता देने पर जोर दिया। शशांक त्रिपाठी ने धारा 24, 34, 38, 67, 80 और 116 से संबंधित मामलों के समयबद्ध निस्तारण, खतौनी में अंश निर्धारण, रियल-टाइम खतौनी और ई-परवाना से जुड़े कार्यों में तेजी लाने तथा शिकायतों का पारदर्शी समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

क्लैट में आर्या व आयुषी ने हासिल की सफलता

आर्या जायसवाल।

आयुषी रावत।

बाराबंकी, अमृत विचार : कॉमन लॉ एडमिशन टेस्ट में श्री साईं इंटर कॉलेज शुक्लाई की दो छात्राओं ने सफलता हासिल की है। आर्या जायसवाल ने ऑल इंडिया रैंक 1096 तथा आयुषी रावत ने ऑल इंडिया रैंक 3091 हासिल की है। दोनों छात्राएं वर्तमान में मानविकी (ह्यूमैनिटीज) संकाय से आईएससी (कक्षा 12वीं) बोर्ड परीक्षा 2026 की तैयारी कर रही हैं। विद्यालय प्रबंधक डी.के. वर्मा ने छात्राओं की सफलता को उनकी कड़ी मेहन का परिणाम बताते हुए इसे विद्यालय और जिले के लिए गर्व का विषय बताया।

स्वेटर वितरण व करियर गाइडेंस कार्यक्रम आयोजित

छात्राओं को यूनिफॉर्म वितरित करतीं डॉ. पूनम सिंह। ● अमृत विचार

देवा, बाराबंकी, अमृत विचार : राजकीय हाई स्कूल मित्तई में प्रधानाचार्या दीपमाला वर्मा के नेतृत्व में गुरुवार को स्वेटर वितरण एवं करियर गाइडेंस कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि राजकीय जिला पुस्तकालय की पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. पूनम सिंह रहीं। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को स्वेटर वितरित किए गए। साथ ही बालिकाओं को यूनिफॉर्म भी प्रदान की गई। करियर गाइडेंस सत्र में मुख्य अतिथि ने विद्यार्थियों को प्रज्ञान पोर्टल से अध्ययन, सोशल मीडिया के सीमित एवं सकारात्मक उपयोग व तनाव प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर मार्गदर्शन दिया। कार्यक्रम का संचालन पंख नोडल अनीता रावत ने किया। अंत में मुख्य अतिथि ने विद्यालय परिसर का भ्रमण किया, आरोग्य वाटिका में पौधारोपण किया।

प्रतियोगिता में 180 विद्यार्थियों ने दिखाया नवाचार

छात्रा को सम्मानित करते बीएसए। ● अमृत विचार

देवा, बाराबंकी, अमृत विचार : राष्ट्रीय आविष्कार अभियान के अंतर्गत विज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन प्रतिभा शिक्षा निकेतन में किया गया। मुख्य अतिथि बीएसए नवीन कुमार पाठक रहे, जबकि अध्यक्षता बीईओ सुनील कुमार गौड़ ने की। विशिष्ट अतिथि किसान इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य अशोक कुमार एवं प्रतिभा शिक्षा निकेतन के प्रधानाध्यापक इंद्र कुमार वर्मा रहे। देवा के उच्च प्राथमिक व कंपोजिट विद्यालयों के 180 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान उ.प्रा.वि. धौरमऊ की साक्षी, द्वितीय उ.प्रा.वि. माधवपुर की खुशी, तृतीय उ.प्रा.वि. धौरमऊ के आनंद, चतुर्थ कंपोजिट विद्यालय टिकरिया की दिव्या रावत और पंचम स्थान पर उ.प्रा.वि. बबुरी गांव के राजकुमार रहे। चयनित विद्यार्थियों को ट्रॉफी, प्रमाण पत्र एवं साइंस किट देकर सम्मानित किया गया।

किसान पाठशाला का शुभारंभ करते राज्यमंत्री। ● अमृत विचार

पाठशाला में राज्यमंत्री ने किसानों से किया संवाद

रामसनेहीघाट, बाराबंकी, अमृत विचार : बनीकोडर के शाहपुर मुरारपुर में गुरुवार को किसान पाठशाला का आयोजन हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि राज्य मंत्री सतीश चंद्र शर्मा रहे। कार्यक्रम में भाजपा जिला उपाध्यक्ष दिलीप मिश्र, उप निदेशक कृषि धीरेंद्र सिंह, जिला कृषि अधिकारी राजित राम, भूमि संरक्षण अधिकारी कुर्सी विनोद कुमार यादव सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे। लगभग 300 स्थानीय कृषक, पशुपालक और महिला कृषक कार्यक्रम में शामिल हुए। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई। उप निदेशक कृषि धीरेंद्र सिंह ने कृषकों को कृषि विभाग की योजनाओं और रबी मौसम में कृषि निवेशों की जानकारी दी। कृषि वैज्ञानिक डॉ. अर्चित शुक्ला ने प्राकृतिक और जैविक खेती, डॉ. अभिषेक रंजन ने मिलेट्स के बारे में जानकारी दी।

11वीं के छात्र ने फांसी लगा दी जान

बाराबंकी, अमृत विचार : पल्हरी इलाके में 11वीं के छात्र का शव घर में फंदे से लटका मिला। घटना का पता लगते ही परिजन बदहवास हो गए। पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा है।

सूरज पाल नगर पालिका में बतौर सफाई कर्मचारी तैनात है। उसका पुत्र प्रभात कुमार (19) 11वीं का छात्र था। पिता के अनुसार गुरुवार की दोपहर वह प्रभात की तलाश करने लगे पर वह घर में नहीं दिखा। इस बीच सूरज ने प्रभात का कमरा बंद देखा। पिता ने खिड़की से अंदर झांका तो देखा कि प्रभात का शव पंखे में साड़ी से बने फंदे से लटका हुआ था। शोर मचने पर परिजन एकत्र हुए वहीं ग्रामीणों का जमावड़ा लग गया।

तीन स्थानों से लाखों का माल चोरी

● चोरों ने शराब ठेका, दुकान और घर को बनाया निशाना

रामसनेहीघाट, सूरतगंज, बाराबंकी, अमृत विचार : रामसनेहीघाट व मोहम्मदपुर खाला थाना क्षेत्र में चोरों ने बुधवार रात में तीन बड़ी चोरियों को अंजाम किया। दो दुकानों व एक नए बने घर पर धावा बोल चोर सामान, जेवर व नकदी उड़ा ले गए। सभी घटनाओं की रिपोर्ट पुलिस ने दर्ज कर ली है।

नगर पंचायत रामसनेहीघाट में कस्बा भिटरिया स्थित देशी शराब के ठेके पर चोरों ने शटर और भीतर लगे लोहे के दरवाजे का ताला तोड़कर प्रवेश किया। चोर यहां से करीब 60 हजार रुपये से अधिक की नकदी और एक स्कैनर ले उड़े। इसके साथ ही ठेके के अंदर बनी कैंटीन से चार हजार रुपये नकद, पान मसाला और सिगरेट भी चोरी कर ली। सबूत मिटाने की नीयत से चोरों ने ठेके में लगे चार सीसीटीवी कैमरों में से तीन को तोड़कर नष्ट कर दिया। हालांकि एक कैमरा सुरक्षित रह गया, जिसमें दो संदिग्ध युवक कैद हैं। फुटेज में दोनों ने चेहरे कपड़े से ढके रखे हैं।

इसी रात चोरों ने पास ही स्थित अल्ताफ की टायर दुकान को भी निशाना बनाया। दुकान से एक दर्जन टायर, रिंच-पाना सहित अन्य कीमती उपकरण चोरी कर लिए गए। पीड़ित दुकानदार ने अलग से तहरीर देकर पुलिस से कार्रवाई की मांग की है। लगातार हो रही चोरी की घटनाओं से व्यापारियों में भारी आक्रोश है। कोतवाली प्रभारी अंकित त्रिपाठी ने बताया कि मामले की गंभीरता से जांच की जा रही है और सीसीटीवी फुटेज के आधार पर संदिग्धों की पहचान कर जल्द गिरफ्तारी की जाएगी। मोहम्मदपुर खाला थाना क्षेत्र के ग्राम भुलभुलियापुर मजरे जगतपुर वासी शिवकुमार पुत्र श्यामलाल रावत के घर बुधवार रात चोर आम के पेड़ पर चढ़कर छत के रास्ते घर में घुस आए। चोरों ने घर में रखी बक्से से एक जोड़ी चांदी की पायल, छह मीना, एक जोड़ी सोने की टप, एक सोने की माला तथा नकदी चोरी कर लिए।

पीड़ित के अनुसार उनका मकान हाल ही में बना है, जिसमें अभी खिड़की-दरवाजों के पल्ले नहीं लगे हैं। इसी का फायदा उठाकर चोर वारदात को अंजाम देकर फरार हो गए।

तीन दिवसीय खेल और वार्षिक समारोह संपन्न

छात्र-छात्राओं को प्रमाणपत्र वितरित करते राज्यमंत्री। ● अमृत विचार

रामसनेहीघाट, बाराबंकी, अमृत विचार : स्व. जगन्नाथ बक्स सिंह की पुण्यतिथि के अवसर पर जेबीएस ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस में आयोजित तीन दिवसीय खेल प्रतियोगिता एवं वार्षिक समारोह गुरुवार को सम्पन्न हुआ। अंतिम दिन कबड्डी, खो-खो, वॉलीबॉल, रस्साकशी, ऊंची कूद, लंबी कूद और गोला-चक्का फेंक के फाइनल मुकाबले कराए गए, जिसमें बालक एवं बालिका वर्ग के प्रतिभागियों ने खेल भावना और अनुशासन का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। राज्य मंत्री, खाद्य एवं रसद विभाग सतीश चंद्र शर्मा मुख्य अतिथि रहे, जबकि विधायक कुर्सी सकेंद्र वर्मा और जिला प्रभारी एवं एमएलसी लखनऊ खंड स्नातक अवनीश सिंह पटेल विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। संस्थापक एमएलसी अंगद कुमार सिंह, प्रबंधक पूनम सिंह, मैनेजिंग डायरेक्टर आकाश सिंह और ग्रुप डायरेक्टर आकांक्षा सिंह ने अतिथियों का स्वागत और सम्मान किया। विजेताओं और उपविजेताओं को पदक, प्रमाणपत्र और ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विद्यार्थियों ने नृत्य, गीत और नाट्य प्रस्तुतियों के माध्यम से अपनी प्रतिभा दिखाई।

कांग्रेसियों ने भाजपा कार्यालय घेरा

प्रदर्शन करते कांग्रेस पदाधिकारी और कार्यकर्ता। ● अमृत विचार

बाराबंकी, अमृत विचार : पूर्व सांसद डॉ. पीएल पुनिया के नेतृत्व व जिलाध्यक्ष मो. मोहसिन की अगुवाई में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने गुरुवार को यंग इंडियन प्रकरण में भाजपा द्वारा कांग्रेस नेतृत्व पर की गई ईडी कार्रवाई को न्यायालय द्वारा अवैध ठहराए जाने पर भाजपा कार्यालय का घेराव किया।

डॉ. पीएल पुनिया ने कहा कि झूठे केस की राजनीति भाजपा द्वारा की जाती है, लेकिन कांग्रेस इन साजिशों से डरने वाली नहीं है। कार्यक्रम में कांग्रेस महासचिव एवं अवध प्रांत प्रभारी प्रदेश धीरज गुज्जर, युवक कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव ज्ञानेश शुक्ला, पूर्व प्रदेश सचिव शिव शंकर शुक्ला, जिलाध्यक्ष मो. मोहसिन, प्रवक्ता के.सी. श्रीवास्तव, नगर अध्यक्ष राजेन्द्र वर्मा, आदर्श पटेल, शिव बहादुर वर्मा, अजीत वर्मा, सुरेश चन्द्र बैसवार, इरफान कुरैशी, शबनम वारसी, विजयपाल गौतम, राम हरख रावत, अखिलेश वर्मा, अरविन्द वर्मा, संजीव मिश्रा, रमेश कश्यप, मोईनुद्दीन अंसारी, अरशद, एड. साहिता खातून, सिकन्दर अब्बास रिजवी, पंकज यादव, सूरज रावत, अजय रावत, गोपी कनौजिया सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

सीएचसी में लगेगी इंटरलॉकिंग टाइल्स

मसौली, बाराबंकी, अमृत विचार : सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बड़ागांव के कायाकल्प की दिशा में पहल शुरू हो गई है। सीएचसी परिसर को आधुनिक और सुव्यवस्थित बनाने के लिए इंटरलॉकिंग टाइल्स लगाने का कार्य शुरू किया गया है। गुरुवार को विकास एवं स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर प्रस्तावित कार्यों का स्थलीय निरीक्षण किया और आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बीडीओ संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कार्य की गुणवत्ता का ध्यान रखने के निर्देश दिए। सीएचसी अधीक्षक डॉ. राधेश्याम गौड़ ने बताया कि इंटरलॉकिंग टाइल्स से बारिश के मौसम में जलभराव की समस्या समाप्त होगी।

पावर एंजेल्स सशक्तीकरण प्रशिक्षण का समापन

मसौली, बारांबंकी, अमृत विचार : ब्लॉक संसाधन केंद्र बड़ागांव मसौली में बालिका शिक्षा एवं मीना मंच से जुड़े संदर्भदाताओं के लिए दो दिवसीय पावर एंजेल्स सशक्तीकरण प्रशिक्षण का समापन खंड शिक्षा अधिकारी जानेंद्र कुमार गुप्ता ने किया। प्रशिक्षण शिविर बालिकाओं के सर्वांगीण विकास, जीवन-कौशल संवर्धन, नेतृत्व क्षमता निर्माण और सामाजिक समता को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में प्रगति के पंख और अरमान मॉड्यूल, शिक्षक संदर्शिका और टूल-10 से संबंधित विषयों पर गहन विमर्श हुआ।

बीईओ जानेंद्र कुमार ने कहा कि मीना मंच बालिकाओं को आत्मनिर्भर, नेतृत्व क्षम बनाने का सशक्त माध्यम है, और पावर एंजेल्स की भूमिका इसमें अत्यंत महत्वपूर्ण है। यूनिसेफ के प्रह्लाद पीटर ने मीना मंच के प्रभाव को और मजबूत करने पर जोर दिया। प्रशिक्षक वैशाली और राघवेंद्र प्रताप सिंह ने कार्यक्रम में सहभागियों को मार्गदर्शन प्रदान किया। ब्लॉक मीना मंच नोडल शिल्पी वर्मा, गरिमा मिश्रा और समन्वयक विनोद वर्मा ने संचालित किया।

कार्यक्रम | विभिन्न प्रतियोगिताओं में छात्र-छात्राओं ने उत्साह के साथ लिया भाग

स्पोर्ट्स मीट में बच्चों ने दिखायी प्रतिभा

कार्यालय संवाददाता, बाराबंकी

बालाजी किड्स प्ले स्कूल के विजेता। ● अमृत विचार

अमृत विचार : बालाजी ग्रुप ऑफ स्कूल्स द्वारा आयोजित आठवीं स्पोर्ट्स मीट उड़ान के 18वें दिन गुरुवार को विभिन्न शाखाओं में खेल व रचनात्मक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

कंपनी बाग एवं सिविल लाइन शाखा में प्रारंभिक वर्ग के बच्चों के लिए कलरिंग प्रतियोगिता, जबकि बालाजी सत्य प्रेमी नगर एवं बालाजी अकैडमी बंकी ब्रांच में सैक रेस, टेबल टेनिस व कबड्डी प्रतियोगिताएं आयोजित हुईं। बालाजी किड्स प्ले स्कूल में प्ले ग्रुप कलरिंग में नितिजा नितिन श्रीवास्तव व तीसा सेठ प्रथम, दर्श पोद्दार व समीक्षा सोनी द्वितीय तथा रेवांश निगम व सम्राट सोनी तृतीय रहे। बालाजी सत्य प्रेमी नगर ब्रांच में सैक रेस (ग्रुप ए) लड़कों में कृतार्थ (कंपैशन हाउस) प्रथम, सिद्धांत (इनॉवेशन हाउस) द्वितीय व श्रीखंड (क्रिएटिविटी हाउस) तृतीय रहे। लड़कियों में राशि (क्रिएटिविटी हाउस) प्रथम, फरवा (इनॉवेशन हाउस) द्वितीय व असरा (क्रिएटिविटी हाउस) तृतीय रहीं।

कबड्डी में लड़कों की टीम बी व लड़कियों की टीम ए विजेता रही। बालाजी अकैडमी, बंकी ब्रांच में सैक रेस लड़कों में हम्ज़ा (हार्मनी हाउस) प्रथम, ओम (इंटीग्रिटी हाउस) द्वितीय, आदर्श (करेज हाउस) तृतीय रहे। लड़कियों में मानवी, दिशा व दिव्याशी (विजडम हाउस) विजेता रहीं। टेबल टेनिस में हर्षित सिंह (हार्मनी हाउस) प्रथम, अभय वर्मा (इंटीग्रिटी हाउस) द्वितीय व अदनान (विजडम हाउस) तृतीय रहे। कबड्डी में लड़कियों की टीम बी व लड़कों की टीम ए विजेता रही।

पेट्रोल पंप पर खड़े दो ट्रकों से 220 लीटर डीजल चोरी

सूरतगंज, बाराबंकी, अमृत विचार : बुधवार रात पेट्रोल पंप के पास खड़े दो ट्रकों से लगभग दो सौ बीस लीटर डीजल चोरी कर लिया गया। सुबह ट्रक पर पहुंचे चालकों को इसका पता लगा। वहीं पुलिस का कहना है कि डीजल चोरी नहीं हुआ बल्कि शराब ठेके पर विवाद हुआ था, जो शांत करा दिया गया। जानकारी के अनुसार मोहम्मदपुर खाला थाना अंतर्गत कस्बा निवासी रोहित राजपूत ने बताया कि वह लखनऊ निवासी शुभम तिवारी का ट्रक चलाता है। बुधवार को सूरतगंज में माल उतारकर देर रात में कस्बा स्थित पेट्रोल पंप पर ट्रक खड़ा कर घर चला गया। गुरुवार सुबह जब वह ट्रक पर पहुंचा तो डीजल टैंक का ताला टूटा मिला और डीजल टपकने के निशान कुछ दूरी तक सड़क तक मिले। उस ट्रक के पीछे खड़ी हुई लखनऊ निवासी हर्षित सिंह की ट्रक का भी डीजल गायब मिला। दोनों के ड्राइवरों ने सूचना मोटर मालिकों को दी। कोतवाल आशुतोष मिश्रा ने बताया कि डीजल चोरी की कोई सूचना नहीं मिली। देर रात कुछ ड्राइवर शराब ठेका जबरन खुलवा शराब मांग रहे थे। सूचना पर पुलिस गई थी। समझा-बुझाकर विवाद शांत कराया गया था।

श्रद्धांजलि सभा/ब्रह्म भोज

बड़े दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि हमारे पूज्य पिता जी

श्री रविन्द्रनाथ कुनार

का देहांत 10.12.2025 हो गया उनका
क्षौर कर्म दिनांक 19.12.2025 (शुक्रवार) को
श्रद्धांजलि सभा एवं ब्रह्म भोज दिनांक 20.12.2025 (शनिवार) को
शमशान बंधु, संबंधी एवं अन्य भोज दिनांक 21.12.2025 (रविवार) को
दोपहर 1.00 बजे से
मैत्रायी क्लब, नार्थ ऑफिस पारा, डोरंडा, रांची में
आयोजित किये जायेंगे

श्रद्धावनत
सबीता कुनार (धर्मपत्नी)
पार्थो कुनार - श्वेता कुनार (पुत्र-पुत्रवधु)
अरिंदम कुनार - सुनीति कुनार (पुत्र-पुत्रवधु)
अदित्य कुनार, आयुष कुनार (पौत्र)
एवं समस्त परिवार
+91 9631660415/9897100010/9582209092

अमृत विचार

लखनऊ, शुक्रवार, 19 दिसंबर 2025

न्यूज ब्रीफ

महिला क्रिकेट प्रतियोगिता स्थगित

उन्नाव, अमृत विचार। जिला क्रिकेट एसोसिएशन के महामंत्री पीके मिश्रा ने बताया कि जिला क्रिकेट एसोसिएशन जालौन द्वारा उरई में आयोजित होने वाली राज्य स्तरीय सीनियर महिला क्रिकेट प्रतियोगिता अपरिहार्य कारणों से स्थगित कर दी गयी है।

शराब पीने से मना करने पर युवक ने दी जान

उन्नाव। सदर कोतवाली क्षेत्र के डीएसएन कालेज रोड एबीनगर मोहल्ला निवासी नीरज शुक्ल (38) पुत्र स्व. कृष्ण मोहन शहर के आवास विकास कालोनी स्थित एक लॉज में नौकरी करता था। वह शराब का लती था। इसके चलते अक्सर घर में कहासुनी होती थी। बुधवार रात वह नशे में घर लौटा तो फिर से कहासुनी हुई। पत्नी रुचि, सास आशा व 6 साल के बेटे कान्हा के साथ खाना खाकर दूसरे कमरे में चली गई। वहीं नीरज अपने कमरे में चला गया। गुरुवार सुबह मां किसी काम से बेटे के कमरे में गई तो उसका शव प्रेस की लीड के फंदे से लटका देख शोर मचाया। इस पर पड़ोसी एकत्र हो गए। पत्नी ने घटना की सूचना सिविल लाइन मोहल्ला स्थित अपनी ससुराल में रहने वाले बड़े भाई सूरज को दी। उसी की सूचना पर पहुंची पुलिस ने जांच कर शव मोर्चरी भेजा। फोरेंसिक टीम ने भी जांच की। बेटे की मौत से मां, पत्नी व बड़ा भाई बेहाल रहा। बड़े भाई ने बताया कि फरवरी में पिता की कैंसर से मौत हुई थी। भाई के प्रार्थनापत्र पर पुलिस ने पोस्टमार्टम कराया। जिसमें हैंगिंग से मौत होने की पुष्टि हुई। कोतवाली प्रभारी चंद्रकांत मिश्र ने बताया कि शव का पोस्टमार्टम कराया गया है। परिजनों का कोई आरोप नहीं है।

नीरज (फाइल फोटो)।

किशोरी व महिला के हत्यारोपियों को पुलिस ने दबोचा

उन्नाव। सोहरामऊ थानाक्षेत्र के लालाखेड़ा गांव में जमीनी विवाद में भाभी की हत्या करने के आरोपी देवर को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। इसी तरह उसी दिन बिहार क्षेत्र में जंगल में किशोरी की गला घोंटकर हत्या हुई थी। किशोरी के हत्यारोपी को भी पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेजा था। बता दें कि बीते मंगलवार सोहरामऊ थानाक्षेत्र के लालखेड़ा गांव निवासी रामू पुत्र गंगाराम ने जमीनी विवाद को लेकर हुई कहासुनी में अपनी भाभी सुनीता (45) के सिर पर लोहे के सब्बल से वार कर दिया था। इसमें उसकी मौत हो गई थी। पति नरेश की तहरीर पर पुलिस रिपोर्ट दर्ज कर रामू की तलाश कर रही थी। सोहरामऊ एसओ अरविंद पांडेय ने बताया कि पुलिस की टीमें आरोपी की तलाश में लगी थीं। तभी मुखबिर से मिली सूचना पर एसआई लक्ष्मी प्रसाद ने फोर्स के साथ गुरुवार दोपहर एक बजे नयाखेड़ा तिराहा के पास से रामू को दबोचा लिया। उसकी निशानदेही पर आलाकत्ल भी बरामद हुआ है। बीते मंगलवार को ही बिहार थानाक्षेत्र के हुलासीखेड़ा कुतुबपुर गांव निवासी किशोरी की गांव के बाहर जंगल में दुपट्टे से गलाघोंट कर हत्या हुई थी। पिता ने पड़ोसी अमरजीत पर बेटी की हत्या करने का शक जताया था। रिपोर्ट दर्ज कर पुलिस आरोपी की तलाश कर रही थी। एसओ बिहार राहुल सिंह बताया कि मुखबिर से मिली सूचना पर पुलिस टीम ने अमर जीत पुत्र रामशंकर को गांव के बाहर आंबेडकर पार्क से पकड़ लिया। पुलिस ने दोनों आरोपियों को कोर्ट में पेश किया। जहां से उन्हें जेल भेजा गया।

शशांक ने पाई 46वीं रैंक

माता-पिता के साथ शशांक।

बांगरमऊ। प्रतिभा किसी संसाधन की मोहताज नहीं होती। इसे सच कर दिखाया है बांगरमऊ के मेधावी शशांक पटेल ने। नगर के मोहल्ला कस्बा टोला के शशांक ने संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित भारतीय इंजीनियरिंग सेवा परीक्षा में 46वीं रैंक हासिल कर जिले का मान बढ़ाया है। शशांक के पिता अविनाश मोहन वर्मा वर्तमान में हरदोई के माधौगंज ब्लॉक में सहायक विकास अधिकारी के पद पर तैनात हैं। शशांक की प्रारंभिक शिक्षा कस्बे के बाल विद्या मंदिर में हुई। मेधावी छात्र होने के नाते उन्होंने कानपुर से इंटरमीडिएट व फिर मदन मोहन मालवीय इंजीनियरिंग कॉलेज गोरखपुर से बीटेक (इलेक्ट्रॉनिक्स) की पढ़ाई प्रथम श्रेणी में पूरी की। इस समय वह कन्नौज स्थित कांशीराम पॉलिटेक्निक कॉलेज में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने किसी भी कोचिंग का सहारा नहीं लिया।

नहीं हुए सूर्यदेव के दर्शन, दिन भर रहा कोहरा

हाईवे और एक्सप्रेसवे पर लाइट जलाकर धीमी गति से गुजरे वाहन, दृश्यता घटकर मात्र 20 मीटर रह गई

संवाददाता, उन्नाव

अमृत विचार। गुरुवार सुबह से शहर व जिले भर में घना कोहरा छाया रहा। जिससे सामान्य जनजीवन प्रभावित हुआ। जिले भर में तड़के सुबह से ही घने कोहरे के कारण सड़कों पर दृश्यता घटकर मात्र 20 मीटर रह गई। इससे वाहन चालकों को परेशानी का सामना करना पड़ा और वाहन धीमी गति से रेंगते हुए चलते दिखे।

बुधवार की तुलना में गुरुवार का मौसम अधिक ठंडा रहा। गुरुवार सुबह जिले का न्यूनतम तापमान 11 डिग्री सेल्सियस और अधिकतम 19 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। सुबह के समय करीब 8 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से ठंडी हवाएं चलीं। जिससे ठंड व कोहरे का प्रभाव और बढ़ गया। मौसम विभाग ने अगले तीन दिनों तक घने कोहरे की संभावना जताते हुए अलर्ट जारी किया है। घने कोहरे का सबसे अधिक असर नेशनल हाईवे व एक्सप्रेस-वे पर देखा गया। इन मार्गों पर ट्रक, बस, कार व दोपहिया वाहन बेहद धीमी गति से चल रहे थे। कई स्थानों पर चालकों को आगे का रास्ता स्पष्ट दिखाई नहीं दे रहा था। इसके कारण उन्हें हेडलाइट और फॉग लाइट जलाकर सावधानी पूर्वक यात्रा करनी पड़ी। बाजारों व सड़कों पर लोगों की आवाजाही कम रही। लोग केवल जरूरी कार्य होने पर ही घरों से निकले। स्कूल जाने वाले बच्चों और दफ्तर जाने वाले कर्मचारियों को भी कोहरे के कारण देरी का सामना करना पड़ा। अधिकारियों ने अपील कि है कोहरे के दौरान तेज रफ्तार से वाहन न चलाएं, सुरक्षित दूरी बनाए रखें और लाइट का प्रयोग अवश्य करें।

कचहरी पुल पर कोहरे के बीच निकलते वाहन सवार। अमृत विचार

परीक्षा केंद्रों में शिकायत हो तो वेबसाइट पर दर्ज करें आपत्ति

बोर्ड परीक्षा

उन्नाव, अमृत विचार। माध्यमिक शिक्षा परिषद उप्र प्रयागराज के सचिव भगवती सिंह ने कहा कि वर्ष 2026 की हाईस्कूल व इंटर की परीक्षाओं हेतु ऑनलाइन प्रविधि से प्रस्तावित परीक्षा केंद्रों (विद्यालय छात्र आर्यटन सहित) की सूची डीएम की अध्यक्षता में गठित जन पदीय केंद्र निर्धारण समिति के अनुमोदन के बाद परिषद की वेबसाइट upmsp.edu.in पर 17 दिसंबर को अपलोड/ प्रदर्शित कर दी गई है। डीआईओएस सुनील दत्त ने बोर्ड सचिव द्वारा जारी किए गए निर्देशों के क्रम में कहा कि परिषद की वेबसाइट पर अपलोड, प्रदर्शित परीक्षा केंद्रों (विद्यालय छात्र आवंटन सहित) के संबंध में यदि कोई आपत्ति या शिकायत हो तो इस संबंध में छात्र, अविभावक, प्रधानाचार्य, प्रबन्धक कारणों व साक्ष्यों सहित संबंधित विद्यालय अपनी आईडी से अपना प्रत्यावेदन ऑनलाइन परिषद के पोर्टल upmsp.edu.in पर 22 दिसंबर तक दे दें। इसके बाद कोई प्रत्यावेदन मान्य नहीं होगा।

सरकारी भूमि कब्जाने वालों पर करें सख्त कार्रवाई : डीएम

उन्नाव, अमृत विचार। जिलाधिकारी गौरांग राठी की अध्यक्षता में पन्नालाल सभागार में राजस्व कार्यों से संबंधित बैठक आयोजित हुई। इसमें जिलाधिकारी ने कहा कि एसडीएम, तहसीलदार, नायब तहसीलदार समय लगाकर कोर्ट में चल रहे वादों को अवश्य सुनें।

जिलाधिकारी ने निर्देश दिये कि पट्टा व तालाब आवंटन की कार्यवाही प्राथमिकता से की जाय। कृषक दुर्घटना योजना के कोई प्रकरण लंबित न रहें। प्राथमिकता से किया जाए। इसमें लापरवाही न हो। स्वामित्व योजना से संबंधित कार्य गंभीरता से और समय से पूर्ण किया जाय। कहा कि सभी एसडीएम इसे ध्यान दें। एंटी भू-माफिया के तहत अभियान चलाकर कार्य करें। जो सरकारी जमीन पर कब्जा करे उसे चिन्हित कर कार्रवाई करें। राजस्व विभाग के लापरवाह कर्मचारियों को चिन्हित कर कार्यवाही करें। लापरवाह राजस्व कर्मियों को कड़ी कार्यवाही करने की हिदायद देते हुए कहा कि किसी भी स्थिति में बख्सा नहीं जाएगा। धान खरीद निर्धारित लक्ष्य के अनुसार हो। बड़े किसानों से संपर्क कर क्रय केंद्र पर धान लाने के लिए कहा जाए। मुख्यमंत्री डैशबोर्ड, जाति प्रमाणपत्र, पैमाइश व अन्य राजस्व सम्बन्धी कार्यों की जानकारी लेकर समय से सभी कार्यों को पूर्ण करने के निर्देश एसडीएम व तहसीलदार को दिये।

कोहरे को लेकर डीएम सख्त, गूगल मीट से दिये निर्देश

उन्नाव, अमृत विचार। सर्दियों के मौसम में बढ़ते कोहरे व धुंध के कारण होने वाले सड़क हादसों को रोकने के लिए डीएम गौरांग राठी ने गुरुवार को गूगल मीट के माध्यम से जिला प्रशासन व पुलिस अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। इसमें डीएम ने स्पष्ट किया कि यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों और सड़क पर अवैध अतिक्रमण करने वालों के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई जाएगी।

डीएम ने एआरटीओ को निर्देशित किया कि डंपर, ट्रक व ओवरलोड वाहनों के खिलाफ विशेष अभियान चलाकर अधिक से अधिक चालान किए जाएं। उन्होंने हाईवे किनारे स्थित ढाबा संचालकों को चेतावनी दी कि सड़कों पर वाहन खड़े होने या अवैध कट पाए जाने पर धारा 133 के तहत जुर्माना व कानूनी कार्यवाही की जाएगी। उन्होंने सभी एसडीएम व सीओ को स्वयं मौके पर जाकर निरीक्षण करने के निर्देश दिए। कहा कि दुर्घटना बाहुल्य क्षेत्रों को चिन्हित कर वहां स्पीड लिमिट के स्लोगन और चेतावनी बोर्ड लगवाएं। उन्नाव-हरदोई रोड पर खराब हो चुके रिफ्लेक्टर, डिवाइडर व रेडियम पट्टी तत्काल ठीक कराएं। लखनऊ-आगरा एक्सप्रेस-वे की हवाई पट्टी पर कैमरा व लाइटिंग की व्यवस्था को दुरुस्त रखने पर विशेष ध्यान दिया जाए। स्कूलों में सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान चलाकर सुनिश्चित करें कि सभी स्कूल बसें मानकों के अनुरूप ही चलें। शीतलहर के दृष्टिगत डीएम ने सभी एसडीएम व ईओ को निर्देश दिए कि नगर निकायों और ग्रामीण बाजारों व चौराहों पर पर्याप्त अलाव जलवाएं। निराश्रितों व असहायों को नियमित रूप से कंबल वितरण किया जाए। हाईवे पर तैनात एम्बुलेंस सेवाओं को 24 घंटे मुस्तैद रहने के निर्देश दें। बैठक में एसपी जयप्रकाश, सीडीओ कृतिराज, एडीएम, एएसपी, पीडब्ल्यूडी व अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी शामिल रहे।

जरूरतमंदों को कंबल बांटते डीएम गौरांग राठी। अमृत विचार

- अवैध कट व ओवरलोड वाहनों पर होगी कड़ी कार्रवाई

डीएम ने जरूरतमंदों को बांटे कंबल

बढ़ती ठंड व शीतलहर को देखते हुए बुधवार रात डीएम व एसपी ने जिले के रैन बसेरों व अलाव व्यवस्था का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान हनुमान मंदिर के पास मिले 10 असहाय व जरूरतमंदों को डीएम ने कंबल वितरित कर उन्हें रैन बसेरों में शरण लेने के लिए प्रेरित किया। इस दौरान डीएम ने अफसरों को निर्देश दिए कि जिले में कोई भी व्यक्ति खुले आसमान के नीचे सोता न मिले। उन्होंने नगर पालिका को एक वाहन आरक्षित रखने का आदेश दिया ताकि एक रैन बसेरा भरने पर आगंतुकों को तुरंत दूसरे स्थान पर शिफ्ट किया जा सके। सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को निरंतर भ्रमण कर पर्याप्त अलाव और कंबल वितरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं।

एसपी ने एक्सप्रेस-वे का किया निरीक्षण, दिये निर्देश

संवाददाता, उन्नाव

अमृत विचार। घने कोहरे के कारण बढ़े सड़क हादसों को लेकर एसपी ने लखनऊ- आगरा एक्सप्रेस-वे का निरीक्षण किया। उन्होंने एक्सप्रेस-वे से संपर्कित पुलिस चौकियों के कर्मियों को रात्रि में अधिक अलर्ट रहने के निर्देश दिए। जिससे हादसा होने पर तुरंत मदद पहुंचाई जा सके।

दिसंबर के दूसरे पखवाड़े से शुरू हुआ कोहरा यातायात के लिए अवरोध साबित हो रहा है। इसके चलते एसपी जय प्रकाश सिंह ने एएसपी दक्षिणी प्रेमचंद व सीओ संतोष सिंह के साथ लखनऊ-आगरा एक्सप्रेस-वे का निरीक्षण किया। उन्होंने एक्सप्रेस-वे के पास बांगरमऊ कोतवाली की प्रीतमपुरा व देवखरी पुलिस चौकी, बेहटा मुजावर थानाक्षेत्र की खमोली हवाई पट्टी का निरीक्षण कर ड्यूटी पर तैनात पुलिस कर्मियों को सतर्कता बढ़ाने, रात्रि गश्त प्रभावी रखने, वाहनों की गति नियंत्रण, रिफ्लेक्ट व ब्लिंकर का प्रयोग करवाने के निर्देश दिए। कहा कि आपात स्थिति में त्वरित कार्रवाई करें। कोहरे में यातायात सुचारु रखने के साथ यात्रियों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है। किसी भी दुर्घटना की स्थिति में तत्काल सहायता उपलब्ध कराए।

एक्सप्रेस-वे का निरीक्षण करते एसपी जय प्रकाश सिंह। अमृत विचार

- कोहरे के दौरान सतर्क रहने के मातहतों को दिये निर्देश

कांग्रेस कार्यकर्ताओं को हिरासत में लिया

उन्नाव, अमृत विचार। गुरुवार को कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने राहुल गांधी व सोनिया गांधी के खिलाफ कथित मनी लॉन्ड्रिंग मामले को फर्जी बताते हुए प्रदर्शन किया। कांग्रेस जिलाध्यक्ष सुरेंद्र कुशवाहा के नेतृत्व में सैकड़ों कार्यकर्ता कांग्रेस कार्यालय से प्रदर्शन कर भाजपा कार्यालय जा रहे थे तभी पुलिस ने उन्हें रोक लिया।

पुलिस के अनुसार कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने बिना अनुमति के प्रदर्शन व मार्च निकालने का प्रयास किया। इसी के मद्देनजर पुलिस ने कांग्रेस कार्यालय के बाहर बैरिकेडिंग लगाकर प्रदर्शनकारियों को आगे बढ़ने से रोका। इस दौरान कांग्रेस कार्यकर्ताओं व पुलिस के बीच हल्की नोकझोंक भी हुई। प्रदर्शनकारी लोकतंत्र बचाओ व ईडी का दुरुपयोग बंद करो जैसे नारे लगा रहे थे।

प्रदर्शन करते कांग्रेस कार्यकर्ता। अमृत विचार

ट्रांसफार्मर लगाने के दौरान घंटों रही बंद विद्युत सप्लाई

संवाददाता, शुक्लागंज, उन्नाव

अमृत विचार। पोनी रोड और राजधानी मार्ग से जुड़े इलाकों में बिजली व्यवस्था सुचारु रखने के लिए विद्युत विभाग ने कोतवाली गेट के पास अतिरिक्त 100 केवीए क्षमता का ट्रांसफार्मर लगाया। ट्रांसफार्मर लगाने के दौरान फीडर-3 और 4 की आपूर्ति घंटों तक बंद रही। जिससे ठंड में हजारों उपभोक्ताओं को परेशानी का सामना करना पड़ा।

अब तक पोनी रोड तिराहा पर लगे 400 केवीए ट्रांसफार्मर से पोनी रोड व गांधी नगर राजमार्ग क्षेत्र के सैकड़ों घरों को आपूर्ति की जा रही थी। क्षमता से अधिक लोड होने से आएदिन ट्रांसफार्मर फुंकने की समस्या रहती थी। गुरुवार सुबह 11 बजे कार्यदायी संस्था ने हाइड्रा मशीन से पोल पर ट्रांसफार्मर लगाया। इसके बाद दोपहर साढ़े 12 बजे फीडर 3 व 4 की आपूर्ति बंद कर ट्रांसफार्मर कनेक्शन जोड़ने का कार्य किया गया। दोपहर में रोस्टिंग समाप्त होने के बाद साढ़े तीन बजे सप्लाई बहाल की गई। तब जाकर उपभोक्ताओं ने राहत की सांस ली। एसडीओ राजेन्द्र प्रसाद ने बताया कि अतिरिक्त ट्रांसफार्मर लगने से गांधी नगर व राजमार्ग क्षेत्र के उपभोक्ताओं को अब सुचारु आपूर्ति मिल सकेगी।

रिपोर्ट दर्ज होने पर माने परिजन

संवाददाता, उन्नाव

अमृत विचार। सदर कोतवाली क्षेत्र के गलगलहा गांव में विवाद के बाद अधेड़ का शव फंदे से लटका मिला था। परिजन गांव के एक परिवार पर घर में चढ़ाई कर अपमान करने से क्षुब्ध होकर आत्महत्या किए जाने के आरोप लगा गुरुवार को डीएम व एसपी ऑफिस पहुंच गए। घंटों समझाने के बाद आत्महत्या के लिए प्रेरित करने की धारा में रिपोर्ट दर्ज होने पर पैनल से पोस्टमार्टम कराया गया।

बता दें कि सदर कोतवाली क्षेत्र के गलगलहा गांव निवासी रामशंकर (55) पुत्र स्व. मुन्नी लाल मजदूरी करता था। बुधवार को उसका शव गांव के बाहर घर से एक किमी आगे जंगल में पेड़ पर गमछे के फंदे से लटका मिला था। बेटे की सूचना पर पहुंची पुलिस ने जांच की। बड़े बेटे कौशल ने आरोप लगाया कि उसके घर के बाहर गांव की एक महिला से शौच को लेकर विवाद हुआ। इसके बाद महिला के परिजनों ने घर पर चढ़ाई कर गाली गलौज कर जान से मारने की धमकी दी थी। इससे आहत होकर उन्होंने फांसी लगा ली। बताते हैं कि महिला ने रामशंकर पर छेड़छाड़ का आरोप भी लगाया था। गुरुवार को मगरवारा चौकी प्रभारी रवि शंकर पांडेय ने पंचनामा की कार्रवाई कर शव का पोस्टमार्टम कराने की तैयारी शुरू की। लेकिन बेटे व अन्य परिजनों ने इंकार कर दिया। वे डीएम व एसपी ऑफिस पहुंच गए। इस पर कोतवाली प्रभारी ने उन्हें पीएम रिपोर्ट के आधार पर कार्रवाई की बात कही लेकिन वे नहीं माने।

बहुत समझाने पर बेटे कौशल की तहरीर पर पुलिस ने गांव के पूती पुत्र अरुण, उसके बेटे अजय, परिवार के पप्पू, राहुल रज्जन पुत्र कल्लू पर आत्महत्या के लिए उकसाने व एससीएसटी एक्ट में रिपोर्ट दर्ज की। इसके बाद डॉ. शोएब नासिर व डॉ. देवेंद्र कुमार ने शव का पोस्टमार्टम किया। इसमें हैंगिंग से मौत होने की पुष्टि हुई। कोतवाली प्रभारी चंद्रकांत मिश्रा ने बताया कि बेटे कौशल की तहरीर पर 5 लोगों पर रिपोर्ट दर्ज हुई है। मामले की जांच की जा रही है।

- गलगलहा में अधेड़ की आत्महत्या का मामला

दुष्कर्म के दोषी को 22 साल का कारावास

उन्नाव, अमृत विचार। किशोरी से दुष्कर्म के आरोपी को कोर्ट ने दोषी ठहराते हुए 20 साल की सजा सुनाई। साथ ही उस पर 22 हजार का जुर्माना भी लगाया है।

मौरावां थानाक्षेत्र के एक गांव निवासी व्यक्ति ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि 15 जनवरी-2019 को वह पत्नी के साथ एक रिश्तेदार के घर गया था। घर पर उसकी नाबालिग बेटी अकेली थी। इसका फायदा उठाकर थानाक्षेत्र के मदाखेड़ा हिलौली निवासी बबलू उर्फ बाबू लाल घर में घुस आया और बेटी से दुष्कर्म किया। शाम को लौटने पर बेटी ने आपबीती बताई। पुलिस ने किशोरी को मेडिकल कराकर कोर्ट में बयान दर्ज कराए। 17 जनवरी-2019 को रिपोर्ट दर्ज कर उसे जेल भेजा। साक्ष्य एकत्र कर 14-दिसंबर 2019 को आईओ ने चार्जशीट दाखिल की। गुरुवार को मुकदमे की अंतिम सुनवाई के बाद शासकीय अधिवक्ता चंद्रिका प्रसाद वाजपेई की दलील व साक्ष्य के आधार पर न्यायाधीश विवेकानंद विश्वकर्मा ने दोषी को 20 साल की सजा सुनाई।

अनदेखी | मगरवारा में डाउन लाइन पर स्लीपर मिलने के बाद भी नहीं जागा विभाग

ट्रैक किनारे पड़े सीमेंटेड स्लीपर बने खतरे की घंटी, विभाग अंजान

संवाददाता, शुक्लागंज (उन्नाव)

अमृत विचार। मगरवारा के डाउन रेलवे ट्रैक पर बुधवार रात डाउन लाइन की रेल पटरी पर सीमेंटेड स्लीपर पड़े होने के कारण तेजस एक्सप्रेस को गंगाघाट रेलवे स्टेशन पर करीब 27 मिनट तक खड़ा रहना पड़ा। गनीमत रही कि समय रहते कंट्रोल को सूचना दी गई और तेजस को रोका गया। जिससे एक बड़ा हादसा टल गया। हालांकि इस गंभीर घटना के बाद भी रेलवे विभाग की लापरवाही सामने आ रही है। क्योंकि गंगाघाट रेलवे स्टेशन पर अभी भी सीमेंटेड स्लीपर पड़े हुये हैं।

मगरवारा की घटना के बावजूद गंगाघाट रेलवे स्टेशन और उसके आसपास ट्रैक के किनारे बड़ी संख्या में सीमेंटेड स्लीपर पड़े हुए हैं। स्टेशन के अप और डाउन लाइन के किनारे स्लीपर बेतरतीब ढंग से ट्रैक के पास रखे हैं, जो किसी भी समय पटरी पर पहुंच सकते हैं। जिससे कोई अनहोनी हो सकती है। यात्रियों का कहना है कि स्टेशन और ट्रैक के आसपास स्लीपर पड़े है। जिससे कभी भी कोई अनहोनी हो सकती है। मगरवारा जैसी घटना के बाद भी विभाग का न चेता जाना रेलवे प्रशासन की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े करता है। इस मामले में आरपीएफ ने रेलवे की लापरवाही मानते हुए ज्वाइंट रिपोर्ट तैयार कर आरपीएफ लखनऊ मुख्यालय भेज दी है। वहीं गंगाघाट रेलवे स्टेशन के एसएस शकील ने बताया कि ट्रैक के किनारे पड़े सीमेंटेड स्लीपरों को हटाने के लिए रेल पथ विभाग को अवगत करा दिया गया है और जल्द ही ट्रैक को सुरक्षित किया जाएगा।

- स्लीपर प्रकरण में ज्वाइंट रिपोर्ट बनाकर आरपीएफ लखनऊ मुख्यालय भेजी गई

गंगाघाट रेलवे स्टेशन पर ट्रैक के किनारे पड़े सीमेंटेड स्लीपर। अमृत विचार

मगरवारा घटना से मचा हड़कंप

बुधवार रात मगरवारा के डाउन ट्रैक पर सीमेंटेड स्लीपर पड़े होने से तेजस एक्सप्रेस को गंगाघाट स्टेशन पर 27 मिनट तक रोका गया। घटना ने रेलवे की सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

स्लीपरों से यात्रियों को भी परेशानी

अप व डाउन लाइन किनारे पड़े सीमेंटेड स्लीपरों के कारण यात्रियों को प्लेटफार्म 1 से 4 तक जाने में ट्रैक पार करना पड़ता है। स्लीपर बिखरे होने से यात्रियों को चलने में दिक्कत होती है और हादसे की आशंका बनी रहती है। इसकी अनदेखी नहीं होनी चाहिए।

आरपीएफ जांच में सामने आई लापरवाही

आरपीएफ इंस्पेक्टर हरीश कुमार मीणा ने बताया कि जांच में रेलवे की लापरवाही मिली है। लूप लाइन के पास गिट्टी लोडिंग का कार्य जेसीबी से हो रहा था। जेसीबी के पिछले हिस्से की ठोकर लगने से सीमेंटेड स्लीपर पटरी पर पहुंच गया। जिसकी ज्वाइंट रिपोर्ट लखनऊ मुख्यालय भेजी गई है।

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि श्रीमती रुशदा अंसारी पत्नी अब्दुल रशीद निवासी मोहल्ला दरगाह शरीफ बाँगरमऊ जिला उन्नाव ने पालिका कार्यालय मे दिनाँक 17-10-2025 को अपने आवेदन पत्र के साथ रजिस्टर्ड बैनामा, आधार कार्ड की छायप्रति व शपथ पत्र प्रस्तुत कर यह उल्लेख किया है कि प्रार्थिनी ने मोहल्ला दरगाह शरीफ बाँगरमऊ का भवन नम्बर 295 को भवन विक्रेता श्री मोहम्मद नसीम पुत्र स्व0 वशीर निवासी मोहल्ला दरगाह शरीफ बाँगरमऊ जिला उन्नाव से जरिये रजिस्टर्ड बैनामा दिनांक 12-12-2023 को क्रय कर लिया है। जिसमे बड़े भाग की माप पूरब 27 फिट पश्चिम 33 फिट उत्तर 50 फिट दक्षिण 50 फिट व छोटे भाग की माप पूरब 25 फिट पश्चिम 27 फिट उत्तर 15 फिट दक्षिण 17 फिट कुल माप 1918 वर्गफीट या 178.08 वर्गमीटर उक्त भवन की चौहदी निम्नलिखित है। पूरब- रास्ता इण्टर लाक चौड़ा 15 फिट पश्चिम- मकान सत्तार आदि उत्तर- प्लाट कमरुद्दीन दक्षिण- रास्ता इण्टर लाक चौड़ा 9 फिट प्रार्थिनी ने अपने उपरोक्त क्रय किये गए भवन को नगर पालिका कर पंजिका में कर की अदायगी के लिए अपने नाम से दर्ज किये जाने की मांग की है। पत्रावली पर उपलब्ध साक्ष्य आवेदन पत्र,रजिस्टर्ड बैनामा, शपथ पत्र,आधार कार्ड की छायाप्रति के आधार पर यदि उक्त नामान्तरण प्रकिया को पूर्ण किये जाने मे किसी को कोई भी आपत्ति है। तो वह विज्ञापन प्रकाशन से 30 दिन के अन्दर उक्त भवन से सम्बंधित सर्वमान्य रजिस्टर्ड साक्ष्य सहित मेरे समक्ष उपस्थित हो कर वह अपनी आपत्ति दर्ज करवा सकता है। बाद मियाद गुजर जाने पर किसी भी आपत्ति पर कोई विचार नही किया जायेगा और उपरोक्त नामान्तरण प्रकिया को आवेदनकर्ता के पक्ष मे पूर्ण कर दिया जायेगा तत्पश्चात नगर पालिका परिषद बाँगरमऊ की कोई जिम्मेदारी न होगी।

अधिशाषी अधिकारी
नगर पालिका परिषद, बाँगरमऊ उन्नाव

न्यूज ब्रीफ

नेशनल हेराल्ड केस में कोर्ट के फैसले से कांग्रेसियों में खुशी

शुक्लागंज, उन्नाव। नेशनल हेराल्ड मामले में सुप्रीम कोर्ट द्वारा सोनिया गांधी व राहुल गांधी के खिलाफ लगे आरोपों को खारिज किए जाने पर नगर कांग्रेस कमेटी गंगाघाट ने हर्ष व्यक्त किया। गुरुवार को इंदिरा नगर में आयोजित कार्यक्रम के दौरान कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने एक-दूसरे का मुंह मीठा कर खुशी मनाई। कांग्रेस नेता मयंक बाजपेयी ने कहा कि माननीय अदालत के फैसले ने साबित कर दिया है कि मोदी सरकार झूठ और नफरत की राजनीति कर रही है। सत्य को परेशान किया जा सकता है, लेकिन पराजित नहीं किया जा सकता। यह फैसला सत्ता पर सत्य की जीत है। इस अवसर पर दूधनाथ वर्मा, दयाशंकर शुक्ल, रामकिशोर पाल, बाबूलाल गुप्ता, विश्वनाथ दास, संजय सिंह, पिंटू तिवारी, अकबाल अवस्थी, विचित्र वीर सिंह मौजूद रहे।

36 मुर्गियों और कार के साथ चोर को दबोचा

फतेहपुर चौरासी, उन्नाव। प्रभारी निरीक्षक ज्ञानेंद्र कुमार ने बताया कि बीती रात नगर पंचायत फतेहपुर चौरासी के मोहल्ला सुभाषनगर पूर्वी निवासी शरीफ ने दर्ज कराई रिपोर्ट में कहा कि उसके मुर्गी फार्म से सफेद कार सवार 3 अज्ञात चोर 48 मुर्गियां चुरा ले गए हैं। दरोगा धीरेंद्र प्रताप सिंह ने मुखबिर की सूचना पर गुरुवार सुबह साढ़े 10 बजे गांव बहादुर खेड़ा मोड़ के पास से गांव चिरंजू पुरवा निवासी सरोज को सफेद कार व 36 मुर्गियों के साथ पकड़ लिया। गांव के ही संदीप व शिवम मौके से फरार हो गए। जिनकी तलाश में दबिश दी जा रही है। जल्द ही मामला साफ हो जाएगा।

मंडल रेल प्रबंधक ने परखी रेलवे की सुरक्षा और संरक्षा व्यवस्था

अप और डाउन रूटों पर पड़ने वाले कई रेलवे फाटकों का जायजा लिया, दिए निर्देश

संवाददाता, हरदोई

अमृत विचार। उत्तर रेलवे मुरादाबाद मंडल के मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम) संग्रह मौर्य ने गुरुवार को हरदोई से काकोरी तक रेल खंड का निरीक्षण किया। यह निरीक्षण मुख्य रूप से रेल सुरक्षा और संरक्षा व्यवस्था को परखने के उद्देश्य से किया गया था। डीआरएम ने निरीक्षण के दौरान अप और डाउन दोनों रूट पर पड़ने वाले कई रेलवे फाटकों का जायजा लिया, जिनमें कोढ़ा स्थित रेलवे फाटक भी शामिल रहा।

निरीक्षण के समय अधिकारियों को सुरक्षा मानकों को लेकर आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए गए।निरीक्षण कार्यक्रम के तहत डीआरएम संग्रह मौर्य करना स्टेशन और मसीत स्टेशन के मध्य सई नदी पर बने रेलवे पुल पर भी पहुंचे। उन्होंने पुल पर उतरकर करीब बीस मिनट तक गहन निरीक्षण किया। इस दौरान पुल की संरचनात्मक स्थिति, ट्रैक की मजबूती और सुरक्षा उपायों की समीक्षा की गई। संबंधित विभागों को आवश्यक सुधार और सतर्कता बरतने के निर्देश भी दिए गए, ताकि भविष्य में किसी प्रकार की तकनीकी या संरक्षा संबंधी समस्या उत्पन्न न हो।डाउन लाइन में डीआरएम बालामऊ स्टेशन पर उतरे, जहां उन्होंने यात्री सुविधाओं की स्थिति का अवलोकन किया और उन्हें और बेहतर करने के निर्देश दिए। हालांकि, स्थानीय यात्रियों और रेल उपयोगकर्ताओं का कहना है कि निरीक्षण के दौरान जो अपेक्षाएं थीं, वे धरातल पर पूरी होती नजर नहीं आईं। यात्रियों को उम्मीद थी कि डीआरएम स्वयं स्टेशनों पर रुककर उनकी समस्याओं को समझेंगे और सुविधाओं में ठोस सुधार की पहल करेंगे।

सुरक्षा मानकों की बात सिर्फ कागजों तक : रेलवे के नियमों के अनुसार इस तरह के कार्यों के दौरान प्लेटफार्म के प्रभावित हिस्से को घेरना और यात्रियों के लिए वैकल्पिक रास्ता तय करना अनिवार्य होता है। लेकिन मौके पर इन नियमों की खुलेआम अनदेखी की गई। यह स्थिति तब और गंभीर हो जाती है, जब यह सब एक वरिष्ठ अधिकारी के निरीक्षण वाले दिन सामने आए।

यात्रियों का कहना है कि अक्सर सुरक्षा मानकों की बात सिर्फ कागजों तक सीमित रहती है। वास्तविकता में ठेकेदार और जिम्मेदार अधिकारी आंख मूंदकर काम कराते हैं। लोगों ने मांग की है कि इस लापरवाही की जांच हो और दोषियों पर सख्त कार्रवाई की जाए।

महज औपचारिकता बनकर रह गया निरीक्षण

हरदोई और सांडिला रेलवे स्टेशनों पर डीआरएम ने विंडो इंस्पेक्शन कर निरीक्षण की औपचारिकता पूरी कर ली। विशेष रूप से हरदोई स्टेशन को लेकर यात्रियों में काफी उम्मीदें थीं। लोगों को लगा था कि डीआरएम यहां उतरकर स्टेशन परिसर, चल रहे निर्माण कार्यों और यात्री सुविधाओं की वास्तविक स्थिति देखेंगे तथा यात्रियों से सीधा संवाद करेंगे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। यात्रियों को उस समय निराशा हाथ लगी जब डीआरएम की विशेष ट्रेन अप और डाउन दोनों दिशाओं में केवल अधिकारियों को चढ़ाने और उतारने के लिए ही रुकी। आम यात्रियों को न तो अपनी समस्याएं रखने का अवसर मिला और न ही उनकी शिकायतों पर कोई प्रत्यक्ष सुनवाई हो सकी। इससे यात्रियों में यह चर्चा रही कि निरीक्षण अधिकतर कागजी और औपचारिक बनकर रह गया। कुल मिलाकर, सुरक्षा निरीक्षण भले ही अपने तय कार्यक्रम के अनुसार संपन्न हुआ हो, लेकिन यात्रियों की अपेक्षाएं और उम्मीदें पूरी नहीं हो सकीं। लोगों का मानना है कि यदि शीर्ष अधिकारी स्टेशन पर उतरकर जमीनी हकीकत देखते और यात्रियों से संवाद करते तो निरीक्षण का उद्देश्य और अधिक सार्थक हो सकता था।

मानकों के दावों की खुली पोल

हरदोई, अमृत विचार। रेल प्रशासन भले ही सुरक्षा मानकों और यात्रियों की संरक्षा को लेकर बड़े-बड़े दावे करता रहे, लेकिन जमीनी हकीकत इन दावों से बिल्कुल उलट नजर आ रही है। गुरुवार को जब मंडल रेल प्रबंधक के प्रस्तावित निरीक्षण को लेकर स्टेशन पर तैयारियों का माहौल था, उसी दौरान प्लेटफार्म नंबर एक पर बन रहे फुट ओवर ब्रिज पर भारी लापरवाही देखने को मिली ।निरीक्षण के समय फुट ओवर ब्रिज पर इलेक्ट्रिक वेल्डिंग का काम चल रहा था। वेल्डिंग के दौरान निकलने वाले चिंगारी और गर्म अंगारे सीधे नीचे प्लेटफार्म पर गिर रहे थे। सबसे चिंताजनक बात यह रही कि उसी प्लेटफार्म से यात्री लगातार आवागमन कर रहे थे। बच्चे, बुजुर्ग और महिलाएं बिना किसी चेतावनी या सुरक्षा व्यवस्था के उस स्थान से गुजरते रहे, जहां ऊपर से कभी भी गर्म अंगारे गिर सकते थे ।हैरानी की बात यह भी रही कि कार्यस्थल के नीचे किसी प्रकार की बैरिकेडिंग नहीं की गई थी और ना ही कर्मचारियों द्वारा यात्रियों को सुरक्षित दूरी पर रोका जा रहा था। इससे कभी भी कोई बड़ा हादसा हो सकता था। यदि कोई चिंगारी किसी यात्री के कपड़ों पर गिर जाती या आंखों में चली जाती, तो दुर्घटना से इनकार नहीं किया जा सकता था।

शार्ट सर्किट से नूडल्स कारखाने में लगी भीषण आग, मचा हड़कंप

संवाददाता उन्नाव

अमृत विचार। सदर कोतवाली क्षेत्र के इंदिरा नगर निवासी पवन पुत्र महादेव के मकान में हरिप्रसाद निवासी छोटा चौराहा एबी नगर का नूडल्स बनाने का कारखाना चलाता है।

गुरुवार की शाम कारखाने में अचानक शॉर्टसर्किट से आग भड़क उठी। लपटें देख आसपास के लोगों में दहशत फैल गई और तत्काल इसकी सूचना पुलिस व फायर ब्रिगेड को दी गई। सूचना मिलते ही कोतवाली पुलिस पहुंची और स्थिति को संभालते हुए आसपास के लोगों को सुरक्षित दूरी पर हटाया। वहीं फायर ब्रिगेड की गाड़ियों ने आग बुझाने का कार्य शुरू किया। दमकल कर्मियों की तत्परता के चलते आग पर समय रहते काबू पा लिया गया। जिससे आग आसपास के मकानों तक नहीं फैल सकी। आग की चपेट में आने से वहां रखा जेनरेटर, इलेक्ट्रिक उपकरण, कच्चा माल व अन्य सामान जल गए। आग से हुए नुकसान का आंकलन किया जा रहा है।

प्रारंभिक जांच में आग लगने का कारण शॉर्टसर्किट बताया जा रहा है। कोतवाली प्रभारी चंद्रकांत मिश्रा ने बताया कि कोई जनहानि नहीं हुई है। दमकल विभाग जांच कर रहा है।

आभूषण चुराने वाले नौकर पर रिपोर्ट दर्ज

शाहाबाद, हरदोई। नौकर द्वारा आभूषण और चाभियां चुराने वाले नौकर के खिलाफ कार्रवाई न होने से नाराज सराफा कारोबारी द्वारा कोतवाली के सामने पेट्रोल छिड़ककर आग लगाने के प्रयास के बाद पुलिस ने आरोपी नौकर के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। नौकर पुलिस की हिरासत में है। कोतवाली क्षेत्र के मोहल्ला चौक निवासी वंदना रस्तोगी की तहरीर पर नौकर के खिलाफ कार्रवाई की गई। बुधवार को वंदना के पति ने नौकर के खिलाफ कार्रवाई न होने से नाराज होकर कोतवाली के सामने पेट्रोल छिड़ककर आग लगाने का प्रयास किया लेकिन पुलिस ने पहले ही उसे हिरासत में ले लिया। उसके बाद पुलिस एक्शन मोड में आई और नौकर के खिलाफ केस दर्ज किया गया। आरोप है कि नौकर प्रतिदिन की तरह से आभूषण और चाभियां लेकर घर गया लेकिन उसने बहाना बना दिया कि चाभियों और आभूषण का बैग गिर गया है।

उत्तर रेलवे

इलेक्ट्रॉनिक निविदा ई-प्रणाली के अंतर्गत मद की आपूर्ति हेतु निविदा आमंत्रण

निविदा नोटिस सं. ईपीएस/56/2025 ईमेल पता: dycmmcb15@gmail.com

भारत के राष्ट्रपति की ओर से उप मुख्य सामग्री प्रबन्धक, उत्तर रेलवे, चारबाग, लखनऊ-226005 द्वारा इच्छुक फर्मों से निम्नलिखित मद के लिये ई-निविदा आमंत्रित की जाती है :-

क्र.	निविदा सं.	संक्षिप्त विवरण	मात्रा	अंतिम तिथि
01	56256217	TRACTION MOTOR 1400HP TYPE TM 4303BY, CATALOGUE No-480100001 & DRG No-04391080001V00 OF BHEL MAKE COMPLETE WITH PINION (WITHOUT MSU,GEAR CASE, GEAR WHEEL) OR TYPE C1005TM OF CGL. MAKE ACCEPTABLE MAKE/BRAND: BHEL/ CGL OR EQUIVALENT.	04 Nos.	08.01.2026

निविदा शर्तें-1. विस्तृत जानकारी IREPS वेबसाइट यानी www.ireps.gov.in पर देखी जा सकती है। 2. मैनुअल निविदा स्वीकृत नहीं की जाएगी।

3899/25

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

अमृत विचार

क्लासीफाइड

विज्ञापन हेतु अमृत विचार कार्यालय में सम्पर्क करें

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरी रजिस्ट्री कानपुर जाते समय रास्ते में खो गई है। यह रजिस्ट्री एक बैग में रखी हुई थी, जो कानपुर के बड़े चौराहा के पास गिर गया। उक्त रजिस्ट्री दिनांक 25/05/2005 की है। **जितेन्द्र कुमार पुत्र स्वर्गीय पी.एन. यादव, निवासी 7/226 राजधानी मार्ग, शुक्लागंज, थाना गंगाघाट, जनपद उन्नाव।**

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरा हाई स्कूल का अंकपत्र अनुक्रमांक 2500675 कही गायब हो गया है काफी तलाश के बाद भी नहीं मिला अगर किसी को मिले तो हमारे पते पर भेजने की कृपा करे । **बलराम मौर्या परशा शाह आलम भीमापार सिद्धार्थनगर मो नं0 – 9540107973**

सूचना

मैने अपना नाम LALA MOHAMMAD से बदलकर LAL MOHAMMAD रख लिया अब इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। S/0-PIR MOHAMMAD ADD-RANI KATRA, VTC:RANIKATRA, PO: RANIKATRA, DIST-BARABANKI-225415 (U.P.)

सूचना

आधार कार्ड और सरकारी गैर सरकारी अभिलेखों में मेरा नाम धर्मराज दर्ज है, त्रुटिवश बैंक खाते में मेरा उपनाम धर्मदास दर्ज हो गया है। धर्मराज और धर्मदास यह दोनों मेरा ही नाम है। भविष्य में मुझें धर्मराज के नाम से जाना पहचाना जाय। **धर्मराज पुत्र बच्चाराम ग्राम मधईपुर कुर्मी, खेमा पुरवा, ब्लाक व थाना-परसपुर, तहसील करनैलगंज, जिला गोण्डा।**

सूचना

मैने अपना नाम MOHAMMAD HAMEED से बदलकर MO HAMEED रख लिया अब इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। S/0-RASOOL BAKS R-0-AZAD NAGAR, MOHAN DIST-UNNAO-229881(U.P.)

सूचना

मैने अपने (माइनर) पुत्री का नाम ARHAMA से बदलकर ARHAMA KHAN रख लिया है। अब इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। D/0-ADIL ADD-152/77 RASSI BATAN MOLVI GANJ, DIST-LUCKNOW (U.P.)

सूचना

मैने अपना नाम NASREEN FATMA से बदलकर NASREEN BEGUM रख लिया अब इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। W/0-SHAKEEL AHMAD ADD-A-340/4, KARELI, POST-GBT NAGAR DIST-ALLAHABAD PRAYAGRAJ-211016 (U.P.)

सूचना

मैने अपने (माइनर) पुत्र ARHAM का नाम बदलकर MOHAMMAD ARHAM KHAN रख लिया है। अब इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। S/0-ADIL ADD-152/77 RASSI BATAN MOLVI GANJ, DIST-LUCKNOW (U.P.)

सूचना

मैने अपना नाम SOAIB AHMED ANSARI से बदलकर SHAKEEL AHMAD रख लिया अब इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। S/0-JAMEEL AHMAD ADD-A-340/4, KARELI, POST-GTB NAGAR DIST-ALLAHABAD PRAYAGRAJ-211016 (U.P.)

सूचना

पहले मेरा नाम HABEEBA KHANAM था अब मैंने बदलकर अपना नाम HABIBA BEGUM रख लिया है। भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। W/O: IQBAL HASAN R/O: 8B/3C/1C, Karamat Ki Chauki, Kareli, PRAYAGRAJ - 211016 (U.P.)

सूचना

मेरे आधार कार्ड में मेरा नाम विधा राम गलत अंकित हो गया है। जबकि सही नाम विद्याराम है। विद्याराम नाम से ही अंकित किया जाए। **विद्याराम पुत्र नत्था ग्राम सिंगरी,पोस्ट हमीरपुर उमर्दा कन्नौज।**

सूचना

मैने अपना नाम TUFAIL AHAMAD से बदलकर TUFEL AHAMAD रख लिया अब इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। S/0-MO AFJAL ADD-VILL AND POST-ACHHAICHHA DIST-BARABANKI-225208 (U.P.)

सूचना

पहले मेरा नाम Mo Afzal Ansari था अब मैने बदलकर अपना नाम Mohd Afzal Ansari रख लिया है भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना व पहचाना जाए। S/O Jinnat Ali , vill pure ramdev post shivpur dist pratapgarh 230401

सूचना

पहले मेरा नाम NISHAR AHMAD था अब मैने बदलकर अपना नाम NISAR AHMAD रख लिया है भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना व पहचाना जाए। S/O-ABDUL KHALIQ R/O- SALEEM MUNSI KE PAAS SHEKH 1, DEWAN, POST DEWA SHARIF BARABANKI- 225301

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैं सुखबीर सिंह पुत्र स्व रतन सिंह मकान नं0 301 फिरोज गांधी नगर, जिला रायबरेली का रहने वाला हूं। मेरे मकान संबंधी आवंटन और कब्जा के दस्तावेज फोटोस्टेट कराते समय वास्तव में कहीं खो गया है। जो कि किसी बैंक व वित्तीय संस्थान में बंधक नहीं हैं।

सूचना

सूचित हो कि मैंने अपनी पुत्री के पुराने नाम से पूर्वी मिश्रा का बर्थ सर्टिफिकेट व पोस्ट आफिस में सुकन्या बचत खाता (पुराना नं0-70071093 व नया नं0-7171858289) खुलवाया था। जबकि स्कूल में मेरी पुत्री का नया नाम आरना मिश्रा है जो कि उसके आधार कार्ड सं0-997925901514 में दर्ज है। अतः मेरी पुत्री के उपरोक्त सुकन्या बचत खाते में उसके पुराने नाम पूर्वी मिश्रा के स्थान पर नया नाम आरना मिश्रा अंकित किया जाये साथ ही बर्थ सर्टिफिकेट में भी साथ ही अन्य सरकारी दस्तावेजों में भी संशोधित किया जाए। **आदित्य नाथ मिश्रा निवासी-85/011, (85/004), विश्वकर्मा मन्दिर लेन, कटरा मकबूलगंज, लखनऊ, उ0प्र0-226018**

सूचना

मैं **नरेन्द्र कुमार सुत स्व.गया प्रसाद व लक्ष्मी कुमारी पत्नी नरेन्द्र कुमार नि. ग्राम – इटोरा, पो. – बाबागंज,तहसील – कुंडा, जनपद – प्रतापगढ़,** अपने पुत्र सुनीत कुमार उर्फ सोनू व पुत्र वधू माया देवी पत्नी सुनीत कुमार उर्फ सोनू से आजिज आ गया हूँ। मैं दोनों को अपनी समस्त चल व अचल संपत्ति से बेदखल कर रहा हूँ। इनके द्वारा किए गए कोई कार्य,धर्म अधर्म, कर्ज, सामाजिक,आर्थिक अथवा किसी भी प्रकार के विवाद से हमारा कोई भी वास्ता व सरोकार नहीं रहेगा।

शैक्षिक भ्रमण पर जनेश्वर पार्क पहुंचे छात्र। अमृत विचार

शैक्षिक भ्रमण से बढ़ा छात्रों का व्यवहारिक ज्ञान

उन्नाव, अमृत विचार। राज्य परियोजना कार्यालय के निर्देश पर परिषदीय विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों का एक दिवसीय भ्रमण कराया गया जिसमें जिले के विकासखंड बिछिया, असोहा, नवाबगंज, नगर क्षेत्र, सिकंदरपुर कर्ण, सिकंदरपुर सरोसी के उच्च प्राथमिक विद्यालयों से 200 छात्र-छात्राओं को 4 बसों से लखनऊ के जनेश्वर मिश्र पार्क ले जाया गया। सीडीओ कृति राज ने हरी झंडी दिखाकर बसों को रवाना किया। सीडीओ व बीएसए शैलेश पांडेय ने बच्चों को चॉकलेट बांटीं। बसों में बच्चों की सुरक्षा के लिए उनके साथ शिक्षक, डीसी सामुदायिक रुचि मिश्रा, एसआरजी डॉ. रचना सिंह, मुसर्रत फातिमा, अखिलेश चंद्र शुक्ला मौजूद रहे। बच्चों ने डॉ. रचना सिंह के निर्देशन में योगा किया। इस दौरान नगर क्षेत्र एआरपी संदीप द्विवेदी, प्रज्ञा शुक्ला, पूनम मिश्रा, स्मिता गुप्ता, भरत चित्रांशी, सुरेंद्र प्रकाश बच्चों के साथ उपस्थित रहे।

मुठभेड़ में पशु तस्कर के पैर में लगी गोली, तमंचा बरामद

हरदोई, अमृत विचार। कई थानों में पशुओं की चोरी करने वाला शातिर पशु तस्कर पुलिस की मुठभेड़ में पैर में गोली लगने से घायल हो गया। पकड़े गए तस्कर के पास से पशु बेचकर रखे गए 52000 रुपए, चोरी की एक मोटरसाइकिल तमंचा व कारतूस बरामद हुआ। थाना सवायजपुर की पुलिस बुधवार की शाम गंगा एक्सप्रेसवे पर मुबारकपुर के पास वाहनों की चेकिंग कर रही थी तभी एक मोटरसाइकिल सवार पुलिस को देखकर मोटरसाइकिल मोड़कर भागने लगा। पुलिस ने उसको घेर लिया खुद को पुलिस से गिरा देखकर उसने फायरिंग करी शुरू कर दी। इस पर पुलिस ने भी गोली चलाई गोली लगने से वह व्यक्ति घायल हो गया। पुलिस ने जब उसे जानकारी की तब उसने अपना नाम आजाद पुत्र जामन बताया । जनपद शाहजहांपुर के थाना मदनापुर क्षेत्र अंतर्गत इस्लाम नगर निवासी आजाद की पुलिस काफी दिनों से तलाश में थी। पुलिस ने आरोपी के पास से पशु बेचकर जमा किए गए 52 हजार चोरी की मोटरसाइकिल तमंचा व कारतूस बरामद किया। घायल को उपचार के लिए मेडिकल कॉलेज लाया गया।

जानकारी देते लोग। अमृत विचार

29 से होगा मीडिया चैंपियनशिप का आयोजन

सफीपुर, उन्नाव, अमृत विचार। पी लाइव मीडिया ग्रुप की ओर से मीडिया कर्मियों के लिए मीडिया चैंपियनशिप के प्रथम संस्करण का आयोजन किया जा रहा है। महात्मा गांधी इंटर कॉलेज के खेल मैदान में 29 दिसंबर को आयोजित होने वाले इस खेल उत्सव में उप्र के 12 जिलों के प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया कर्मी अपनी खेल प्रतिभा दिखाएंगे। मुख्य आयोजक विकास सिंह ठाकुर व सह-आयोजक सोनू श्रीवास्तव ने बैठक में बताया कि कार्यक्रम की शुरुआत मशाल दौड़ के साथ होगी। इस चैंपियनशिप में उन्नाव, लखनऊ, कानपुर, बाराबंकी, रायबरेली व सीतापुर सहित 12 जिलों के खिलाड़ी प्रतिभाग करेंगे। बैठक में वैभव द्विवेदी कृष्णा, कमलेश गुप्ता, नागेंद्र सिंह सेंगर, ज़ुहैर अहमद, अस्करी हादी, सोनू श्रीवास्तव, बिक्रम सिंह, अनुज गौड़, मोनू तिवारी, अजय ठाकुर, हरिपाल सिंह, शिवबक्श सिंह, अमरनाथ पांडे आदि मौजूद रहे।

छात्रों के साथ भोजन करते बीएसए व ग्राम प्रधान। अमृत विचार

बेसिक शिक्षा अधिकारी ने किया विद्यालयों का निरीक्षण, छात्रों के साथ चखा भोजन

उन्नाव, अमृत विचार। बेसिक शिक्षा अधिकारी शैलेश पांडेय ने विकासखंड सिकंदरपुर सरोसी के उच्च प्राथमिक विद्यालय राजेपुर कंपोजिट (1 से 8) का औचक निरीक्षण किया। इसमें विद्यालय में कुल नामांकित 178 के सापेक्ष 117 बच्चे उपस्थित मिले। उन्होंने रसोई घर को देखा तो मध्यान्ह भोजन व्यवस्था में प्रयुक्त किये जाने तेल मसाले ब्रांडेड मिले। विद्यालय परिसर का निरीक्षण करते हुये परिसर में साफ-सफाई व्यवस्था दुरुस्त करने व किचेन गार्डेन विकसित करने के निर्देश दिये। बीएसए ने बच्चों को दिए जाने वाला मध्यान्ह भोजन भी चखा। इस दौरान राजेपुर ग्राम प्रधान आलोक अवस्थी (राजू अवस्थी) आ गए। उन्होंने भी विद्यालय के बच्चों के साथ मध्यान्ह भोजन ग्रहण किया। इस दौरान रामजी व विद्यालय की प्रधानाध्यापिका मधू दीक्षित, अनुदेशक ललित बाजपेई व अन्य विद्यालय स्टाफ उपस्थित था।

ज्वैलरी शॉप से चांदी व सोने के जेवरात चोरी

परियर, उन्नाव। सफीपुर कोतवाली क्षेत्र के परियर में बद्री प्रसाद इंटर कॉलेज रोड स्थित आर्यन ज्वेलर्स में ताला काटकर अज्ञात चोरों ने ढाई किलो चांदी व 10 ग्राम सोना चुरा पार करदिया। सुबह आसपास के लोगों ने दुकानदार को इसकी सूचना दी। दुकान मालिक सुंदर स्वर्णकार पुत्र पुष्पराज निवासी बिठूर जिला कानपुर नगर ने पुलिस की दौड़ भाग से बचने की बात कह रिपोर्ट दर्ज करवाने से मना कर दिया। सिर्फ प्रार्थनापत्र दिया है। थाना प्रभारी सुब्रत नारायण तिवारी ने जांच करने की बात कही है। प्रार्थनापत्र में सुंदर स्वर्णकार ने बताया कि अज्ञात चोरों ने बुधवार रात पहले आसपास के घरों के दरवाजे बाहर से बंद कर दिए। जो लाइटें जल रही थीं उन्हें भी बंद कर दिया। इसके बाद शटर का ताला काटकर एक फिट ऊपर उठाकर दुकान में दाखिल हुए और चांदी की बिछिया, पायल, खड़ुआ व करीब 10 ग्राम सोने के आभूषण पार कर दिए।

सांसद खेल स्पर्धा: बैडमिंटन में खिलाड़ियों ने दिखाया दम

बैडमिंटन प्रतियोगिता में प्रतिभाग करतीं छात्राएं। अमृत विचार

उन्नाव, अमृत विचार। पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्टेडियम में चल रही सांसद खेल प्रतियोगिता के दूसरे दिन बैडमिंटन स्पर्धाओं का दबदबा रहा। प्रतियोगिता में जिले के खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में पहुंचे भाजपा जिलाध्यक्ष अनुराग अवस्थी ने खिलाड़ियों से कहा कि खेल सिर्फ मनोरंजन नहीं बल्कि जीवन जीने की कला सिखाते हैं। मैदान पर हम आत्मानुशासन, आत्मवलोकन व हार मानकर फिर से जीतने के लिए खड़े होना सीखते हैं। प्रतियोगिता में सब जूनियर बालक में अब्दुल शाद ने नीलकमल को 15-8 से मात दी। जूनियर बालिका में दिव्यांशी ने संजना को 15-12 से हराकर जीत दर्ज की। सीनियर बालिका में विभूति सिन्हा ने मुकाबले में गौरी को 15-3 से हराया। सब जूनियर बालिका में आकृति अवस्थी ने काव्या चौधरी को 15-4 से पराजित किया। सीनियर बालक में आशीष व सतेंद्र की जोड़ी ने सत्यपाल और अमन को 21-16 से हराया। सब जूनियर में चंद्रवीर सिंह व वत्सल त्रिपाठी ने विकास यादव और उदय प्रताप को 15-9 से शिकस्त दी। सब जूनियर बालिका में अलंकृति अवस्थी व प्रशस्ति ने दिविजा व प्राची को 21-13 से हराया। जूनियर बालक में प्रख्यात सिन्हा व आलोक की ने 21-06 के अंतर से जीत हासिल की। सीनियर बालक में सौरभ व आदर्श मिश्रा ने 21-09 से जीत दर्ज की। इस दौरान कुसुमेश कुमार, सोनू सिंह, विकास अवस्थी, जितेंद्र सिंह, राजू, प्रभात सिन्हा व सोमनाथ आदि रहे।

श्रीमद्भागवत कथा में श्रीकृष्ण जन्म पर झूमते भक्त। अमृत विचार

कथा में गूंजा नंद के आनंद भयो जय कन्हैया लाल की

उन्नाव, अमृत विचार। नार्मल स्कूल मैदान में चल रही श्रीमद्भागवत कथा के चौथे दिन भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव 'नंदोत्सव' मनाया गया। कथावाचक संत रामशरण शास्त्री ने कृष्ण जन्म की कथा सुनाकर श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। कथा व्यास ने सुनाया कि जब अत्याचारी राजा कंस के पापों से धरती त्राहि-त्राहि कर उठी तब भगवान विष्णु ने देवकी व वसुदेव के आठवें पुत्र के रूप में मथुरा के कारागार में अवतार लिया। बताया कि कैसे भारी वर्षा और उफनती यमुना के बीच वसुदेव बालक कृष्ण को गोकुल में यशोदा माता के पास सुरक्षित पहुंचा आए। देवी दुर्गा के रूप में प्रकट हुई कन्या ने कंस को चेतावनी दी कि उसका काल जन्म ले चुका है जो अधर्म के विनाश का प्रतीक है। राजेश अलबेला के भजन मंडल द्वारा प्रस्तुत सुमधुर 'बधावा गायन' पर श्रद्धालु झूमने पर मजबूर हो गए। पांडाल में 'नंद के आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की' के जयकारे गूंजते रहे। इस मौके पर डॉ. संजय मिश्रा, बबली मिश्रा, ममता द्विवेदी, गोविंद शुक्ला, पवन निगम, रश्मि निगम, आशीष निगम, लता निगम, नीरज निगम, सुबोध अस्थाना, डॉ. प्रभात सिन्हा, वेंकट मिश्रा आदि मौजूद रहे।

भारत सरकार : रेल मंत्रालय

अनुसंधान अभिकल्प और मानक संगठन मानक नगर, लखनऊ-226011

दूरसंचार अनुरक्षण अनुभाग

RO No. 45/2025-26/TMS

खुली ई-निविदा सूचना

दिनांक: 18.12.2025

भारत के राष्ट्रपति की ओर से, दूरसंचार अनुरक्षण अनुभाग, अनुसंधान अभिकल्प और मानक संगठन, मानक नगर, लखनऊ, द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु खुली ई-निविदा आमंत्रित की जाती है।

ई-निविदा सूचना	कार्य का नाम	कार्य की अनुमानित लागत	बयाना राशि	निविदा प्रपत्र का मूल्य	समय अवधि	जमा करने की अन्तिम तारीख व समय
एसटीटी/टीएमएस/एस एंड टी/सीएएम सी पीए सिस्टम	नए ऑडिटोरियम में बॉश मेक PA सिस्टम और उससे जुड़े उपकरणों के लिए 05 साल की अवधि के लिए कॉम्प्रिहेंसिव एनुअल मेंटेनेंस कॉन्ट्रैक्ट और RDSO कैंपस में SITC ऑफ PA सिस्टम उपकरण ।	19820756.08	249100.00	निल	05 वर्ष	09.01.2026 को 15:00 बजे तक

उपरोक्त ई-निविदा प्रपत्र वेब साइट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है। निविदादाकर्ता अपनी निविदा दिनांक 26.12.2025 से दिनांक 09.01.2026 को 15.00 बजे तक प्रेषित कर सकते हैं। उपरोक्त निविदा के लिए केवल ई-निविदा ही स्वीकार्य होगी। निविदा प्रपत्र का मूल्य केवल ऑनलाईन पेमेन्ट के माध्यम से जो कि आईआरईपीएस पोर्टल पर उपलब्ध है जमा करा सकते है, इसके अतिरिक्त किसी अन्य माध्यम से भुगतान स्वीकार्य नहीं होगी। किसी भी प्रकार की तकनीकी समस्या के लिए सीआरआइएस/नई दिल्ली के सहायता प्रकोष्ठ में संपर्क कर सकते है। फोन नं0- 01124105180, 24102855, 23370704, 23370703

(बृजेश कुमार) एडीई/टीएम एस

कृते महानिदेशक, अ0अ0मा0सं0, लखनऊ

अमृत विचार

लखनऊ, शुक्रवार, 19 दिसंबर 2025

हरदोई

न्यूज ब्रीफ

दबंगों ने घर में घुसकर पीटा, रिपोर्ट दर्ज

शाहाबाद, हरदोई। पुरानी रंजिश के चलते दबंगों ने घर में घुसकर एक ग्रामीण को मारा-पीटा। घटना की नामजद रिपोर्ट दर्ज कराई गई। कोतवाली के ग्राम पुरवा पिपरिया निवासी देवेंद्र पुत्र छोटे लाल के अनुसार गांव के धर्म सिंह, नरेश, बिजेंदर एवं रामवतार पुरानी रंजिश के चलते उसके घर में घुसकर आए और उसे पीटने लगे। किसी तरह अपने को छुड़ाकर घर से भागा और जान बचाई। घटना की लिखित तहरीर के आधार पर आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराकर डॉक्टरी परीक्षण कराया गया।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी में शामिल हुए शोजैब

पिहानी, हरदोई। शोजैब जैदी को ऑल इंडिया शिया पर्सनल लॉ बोर्ड की राष्ट्रीय कार्यकारिणी का सदस्य मनोनीत किया गया है। इस नियुक्ति से कस्बे सहित पूरे जनपद में हर्ष का माहौल है। शोज़ैब ज़ैदी ने कहा कि ऑल इंडिया शिया पर्सनल लॉ बोर्ड देश में शिया समाज के संवैधानिक, सामाजिक और धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिए लगातार कार्य कर रहा है।

आपत्तिजनक टिप्पणी करने वाले दो गिरफ्तार

अतरौली, हरदोई। देवी-देवताओं और सांसद विधायक आदि के प्रति सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक टिप्पणी करने वाले दो युवकों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। इसमें विशाल निवासी धर्मापुर और सुशांत निवासी अतरौली का रहने वाला है। इन लोगों ने कुछ दिन पहले सोसल मीडिया पर आपत्तिजनक टिप्पणी की थी। मामले को संज्ञान में लेकर उसी समय पुलिस ने दोनों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज किया था तभी से दोनों की तलाश हो रही थी।

रैन बसेरों में ठहरने वालों को मिलें पर्याप्त सुविधाएं: जिलाधिकारी

भीषण ठंड को लेकर किया निरीक्षण, उपयुक्त स्थान पर अलाव जलवाने को कहा

संवाददाता, हरदोई

अमृत विचार। शीतलहर के मद्देनजर बुधवार की देर रात जिलाधिकारी अनुनय झा ने जनपद में बने विभिन्न रैन बसेरों एवं अलाव केंद्रों का आकस्मिक निरीक्षण किया। उन्होंने वहां उपलब्ध सुविधाओं का जायजा लिया तथा रैन बसेरों में ठहरने वाले लोगों से बातचीत की।

रैन बसेरे का निरीक्षण करते डीएम।

हरदोई रेलवे स्टेशन पर ठंड में ठिठुर रहे यात्री। अमृत विचार

डीएम ने रेलवेगंज ईस्ट में बने रैन बसेरे को देखा। इसके बाद रेलवे स्टेशन पहुंचकर यात्रियों से वार्ता कर रैन बसेरे में मिल रहे इंतजामों के बारे में जानकारी ली। रैन बसेरे में रुके यात्रियों को कंबल वितरित करते हुए अलाव व्यवस्था भी देखी। नगरपालिका परिसर में बने रैन बसेरे को भी अधिकारी देखने पहुंचे। यहां उन्होंने रुके हुए लोगों से बात चीत की। उन्होंने निर्देश दिए कि बीमार यात्रियों को दवा उपलब्ध कराई जाये। साफ-सफाई में किसी भी प्रकार की कोताही न की जाये।

बस अड्डे पर बने रैन बसेरे पर उन्होंने जरूरतमंद लोगों को कंबल वितरण कर अलाव व्यवस्था को देखते हुए शीतलहर से बचाव हेतु अलाव जलते रहे इसके लिए संबंधित अधिकारी को निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने कहा कि अलाव को उपयुक्त स्थान पर जलाया जाये। रैन बसेरे का केयर-टेकर प्रतिदिन रात में बस अड्डे पर सोने वाले लोगों को रैन बसेरे के बारे में बताये। इस मौके पर एडीएम न्यायिक प्रफुल्ल कुमार, नगर मजिस्ट्रेट सुनील कुमार त्रिवेदी, उप जिलाधिकारी सदर, अधिशासी अधिकारी नगरपालिका, सीओ सिटी व प्रभारी जिला सूचना अधिकारी दिव्या निगम मौजूद रहीं।

तहसील प्रशासन उदासीन, नहीं जले अलाव: हरपालपुर। तहसील प्रशासन की संवेदनहीनता के चलते चिन्हित स्थानों पर अलाव की व्यवस्था नहीं हो सकी है। क्षेत्र में 12 स्थानों पर अलाव जलवाने के लिए राजस्व कर्मियों को जिम्मेदारी दी गयी थी। मौसम के बदले मिजाज व कोहरे के चलते सबसे ज्यादा दिक्कतें दूरदराज से आने वाले मुसाफिरों या फिर फुटपाथ पर रहने वाले लोगों को हो रही है। सवायजपुर तहसील क्षेत्र में अलाव के लिए तहसील प्रशासन ने 12 स्थानों को चिन्हित करते हुए राजस्व कर्मियों को इसकी जिम्मेदारी सौंपी है। हरपालपुर में ककरा तिराहे पर सुबह चार बजे से दिल्ली व लखनऊ आने जाने वाले यात्रियों को रोडवेज बसों के इंतजार में खड़ा होना पड़ता है। वहीं दिल्ली से ग्रामीण क्षेत्रों को जाने वाले यात्री भी ककरा तिराहे पर आकर बस से उतरते हैं। यहां आए दिन रोडवेज की दर्जनों बसों से यात्री आने जाने के लिए खड़े होते हैं लेकिन जिम्मेदारों ने इस ओर ध्यान देना उचित नहीं समझा। सवायजपुर में तहसील परिसर, सवायजपुर बस स्टाप, रूपापुर चौराहा, हरपालपुर बस स्टाप, पलिया चौराहा, बरौलिया बस स्टाप, चौंसार बस स्टाप, श्रीमऊ चौराहा, सवायजपुर चौराहा, बाजपुर नकटौरा, पलिया तिराहा (हरपालपुर), बरसोहिया सहित कुल 12 स्थानों पर अलाव जलने थे। इस संबंध में तहसीलदार विनोद कुमार से फोन पर संपर्क करने का प्रयास किया गया लेकिन उन्होंने फोन रिसीब नहीं किया।

रेलवे स्टेशन पर बुनियादी सुविधाओं का टोटा

हरदोई, अमृत विचार। बीते दो दिनों के भीतर तापमान में तेज गिरावट दर्ज की गई है जिससे जनजीवन प्रभावित होने लगा है। सुबह और शाम के समय ठिठुरन बढ़ गई है। वहीं रात में सर्द हवाओं ने लोगों की मुश्किलें और बढ़ा दी हैं। हरदोई रेलवे स्टेशन पर यात्रियों की परेशानियां लगातार सामने आ रही हैं। अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत चल रहे निर्माण कार्य और जिम्मेदार अधिकारियों की अनदेखी के कारण स्टेशन पर बुनियादी सुविधाओं का अभाव साफ नजर आ रहा है। ठंड के इस मौसम में रेल यात्रियों को न तो ठीक से बैठने की जगह मिल पा रही है और न ही सिर छुपाने के लिए पर्याप्त इंतजाम हैं। प्लेटफार्मों पर सीमित संख्या में बेंच उपलब्ध हैं जिस वजह से यात्रियों को घंटों खड़े होकर ट्रेनों का इंतजार करना पड़ रहा है। स्टेशन पर मौजूद वेटिंग रूम भी यात्रियों के लिए राहत का साधन नहीं बन पा रहे हैं क्योंकि वे नि:शुल्क नहीं हैं।

बालिका से दुष्कर्म करने के केस में आजीवन कारावास

हरदोई, अमृत विचार। अपर सत्र न्यायाधीश पोक्सो एक्ट मनमोहन सिंह ने एक फैसले में एक बालिका के साथ दुष्कर्म करने के मामले में आरोपी को जुर्म साबित होने पर आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। जज ने आरोपी पर 55 हजार रुपये का जुर्माना भी लगाया है। शासकीय अधिवक्ता कृष्ण गोपाल त्रिपाठी ने बताया कि थाना कासिमपुर क्षेत्र के अलीपुर टंडवा निवासी नन्हे पासी ने 23 मई 2022 को उसकी बालिका के साथ दुष्कर्म किया। इस मामले की रिपोर्ट बालिका के पिता ने दर्ज कराई। कहा कि घटना के पूर्व उसकी बेटी सो रही थी। आरोपी उसे उठाकर ले गया और तालाब के पास उसके साथ दुष्कर्म किया। सत्र न्यायाधीश ने अदालत के समक्ष पेश हुए सबूत के आधार पर और दोनों पक्षों को सुनकर आरोपी पर जुर्म साबित पाया और उसे सजा सुनाई जज ने जुर्माना की संपूर्ण धनराशि पीड़िता को दिलाए जाने का आदेश दिया गया है। इसके साथ जिला विधिक सेवा प्राधिकरण को निर्देशित किया है कि सरकारी योजना के तहत एक लाख रुपये की धनराशि पीड़िता को दिलाई जाए।

डीएम ने परखी शिकायतों के निस्तारण की गुणवत्ता

हरदोई, अमृत विचार। विवेकानंद सभागार में जिलाधिकारी अनुनय झा की अध्यक्षता में 11 नवंबर से 10 दिसंबर तक के स्टार संदर्भों की समीक्षा की गई। जिलाधिकारी ने स्वयं आख्या का अवलोकन किया और शिकायतों के निस्तारण की गुणवत्ता परखी। जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को स्पष्ट रूप से निर्देश दिए कि शिकायतों का निस्तारण गुणवत्ता युक्त व पूरे ध्यान से किया जाए तथा जांचकर्ता अधिकारी मौके पर अवश्य जाए तथा शिकायतकर्ता से संपर्क करें। स्टार सन्दर्भों का निस्तारण प्राथमिकता के आधार पर कराया जाये। भूमि विवाद के निस्तारण के लिए धारा 116 के मामलों को तेजी से निपटाया जाये। चकरोड की पैमाइश के प्रकरण लंबित न रखे जाएं। लंबित प्रकरणों पर नाराजगी भी व्यक्त की। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी वि.रा. प्रियंका सिंह, अपर जिलाधिकारी न्यायिक प्रफुल्ल कुमार, समस्त उप जिलाधिकारी, ई- डिस्टिक मैनेजर देवेश सिंह, प्रभारी जिला सूचना अधिकारी दिव्या निगम व अन्य संबंधित अधिकारी और कर्मचारी मौजूद रहे।

शाहाबाद में बनेगी आईटीआई, हुआ भूमि पूजन

संवाददाता शाहाबाद, हरदोई

अमृत विचार। उच्च शिक्षा राज्यमंत्री रजनी तिवारी ने गुरुवार को राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में 367.09 लाख की लागत से बनने वाली बाउंड्रीबाल, पानी की टंकी और भवन का भूमि पूजन किया। शिक्षा क्षेत्र में उन्होंने तमाम कार्य स्वीकृति कराये हैं।

उन्होंने कहा केंद्र और प्रदेश सरकारें छात्र-छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रयासरत हैं। उन्होंने बताया राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान का निर्माण व संचालन, गर्ल्स इंटर कॉलेज व छात्रावास का निर्माण, राजकीय महाविद्यालय, खेलकूद की सुविधा हेतु स्टेडियम का निर्माण भी स्वीकृत है। राजकीय औद्योगिक का प्रशिक्षण संस्थान संचालन 2018 में शुरू हुआ। 2024 से कक्षाओं का नियमित संचालन शाहाबाद मे शुरू कराया। 12 ट्रेडों की ट्रेनिंग व शिक्षण कार्य चालू है, उसमें चार ट्रेड स्पेशल नारी सशक्तिकरण की मजबूती के लिए छात्राओं और महिलाओं के लिए संचालित हैं। इस मौके पर अंकित तिवारी, ब्लाक प्रमुख त्रिपुरेश मिश्रा, गंगाराम राठौर, सत्येंद्र राजपूत, हाकिम सिंह, आशाराम राठौर, सौरभ लाहौरी, अंकित गुप्ता सहित पार्टी पदाधिकारी और क्षेत्रीय गणमान्य उपस्थित रहे।

भूमि पूजन करतीं उच्च शिक्षा राज्यमंत्री रजनी तिवारी। अमृत विचार

बच्चों से सवाल पूछते एआरपी। अमृत विचार

शैक्षिक गुणवत्ता पर खरे उतरे बच्चे

हरदोई, अमृत विचार। शैक्षिक गुणवत्ता परखने पहुंचे एआरपी सुधीर शुक्ला काफी देर तक बच्चों के साथ रहे, हर सवाल का बच्चों ने बखूबी जवाब दिया। उन्होनें कहा कि पढ़ाई के साथ-साथ अपनी सेहत का भी ख्याल रखें, अभिभावकों से कहा कि वे अपने बच्चों का सर्दी से बचाव करें, उन्हे बे-वजह बाहर न निकलने दें। एआरपी श्री शुक्ला गुरुवार को बावन ब्लाक के प्राथमिक विद्यालय जोगीपुर पहुंचे, वहां उन्होने कक्षा-5 के बच्चों की शैक्षिक गुणवत्ता परखी, साथ ही उनकी तरफ से जो सवाल किया गया, बच्चों ने बड़े सीधे हुए अंदाज़ में उसका जवाब दिया। उन्होने सर्दी से बचाव करने के टिप्स दिए और बच्चों से कहा कि पढ़ाई के ससाथ अपनी सेहत का भी ख्याल रखे, अभिभावको से कहा कि अपने बच्चों को बेवजह घर से बाहर न निकलने दें, एआरपी ने प्रधानाध्यापिका तरन्नुम खातून से कहा कि दिसंबर तक निपुण लक्ष्य हासिल करना है, जनवरी में आंकलन होना सुनिश्चित हुआ है। इस बीच प्रबंध समिति के अध्यक्ष परशुराम, शिक्षिका रेहाना नसरीन, प्रभा पाण्डेय, रुचि पुरी व शिक्षा मित्र प्रशांत कुमार अवस्थी मौजूद रहे।

ट्रेन से गिरकर युवक की मौत

हरदोई, अमृत विचार। युवक की ट्रेन से गिर कर दर्दनाक मौत हो गई। ट्रैक पर शव पड़ा होने की सूचना पर वहां पहुंची पुलिस ने आधार कार्ड और मोबाइल से शव की शिनाख्त की। बताया गया है कि गुरुवार को पुलिस को सूचना दी गई कि पोल नंबर-111/2021 के बीच सांक गांव के पास एक 30 वर्षीय युवक की चलती ट्रेन से गिर कर मौत हो गई। वहां पहुंची पुलिस ने ट्रैक से शव बरामद कर उसकी जामा तलाशी की, युवक के पास से पुलिस के हाथ आए आधार कार्ड और मोबाइल से उसकी शिनाख्त प्रमोद कुमार पुत्र जगत नारायण निवासी महसोना सण्डीला के रूप में की गई है। पुलिस पूरे मामले की गहराई से जांच कर रही है।

खेलकूद से होता है मानसिक विकास

प्रतियोगिता

संवाददाता हरदोई

अमृत विचार। बेसिक शिक्षा विभाग की ओर से आयोजित दो दिवसीय जनपदीय क्रीड़ा प्रतियोगिता का शुभारम्भ मुख्य अतिथि राज्यमंत्री उच्च शिक्षा रजनी तिवारी ने सीडीओ सान्या छाबड़ा के साथ मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर किया तथा प्रतिभागी छात्र-छात्राओं से परिचय प्राप्त करने के उपरांत मशाल दौड़ को हरी झण्डी दिखाकर खेल प्रतियोगिता प्रारम्भ कराया।

प्रतियोगिता के शुभारम्भ अवसर पर मुख्य अतिथि ने प्रतिभागियों से कहा कि पढ़ाई के साथ खेलकूद प्रतियोगिताओं में भाग लेने से मानसिक एवं शारीरिक विकास होता है और आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। उन्होंने कहा कि खेल से शरीर पूरी तरह से स्वस्थ रहता है। साथ ही दिमाग भी तेज होता है। मुख्य विकास अधिकारी ने कहा कि खेल टीम वर्क, सहयोग और सामूहिक प्रयास के महत्व को समझाता है और खेलों से आत्म विश्वास और नेतृत्व क्षमता में विकास होता तथा सफल एवं असफल दोनों खिलाड़ियों को सीखने का अवसर मिलता है। इस अवसर पर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, प्रभारी जिला सूचना अधिकारी तथा ब्लाकों के खण्ड शिक्षा अधिकारी व अन्य जनप्रतिनिधि आदि मौजूद रहे।

परिषदीय खेलकूद रैली में प्रतिभाग करते बच्चे। अमृत विचार

एकल काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन

कार्यक्रम में बोलते वक्ता। अमृत विचार

हरदोई, अमृत विचार। महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के आडिटोरियम में भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेयी की जन्मशताब्दी वर्ष के समापन अवसर पर जनपद स्तरीय भाषण एवं एकल काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। शुरुआत प्राचार्य डॉ. जय भगवान सिंह, वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. प्रवेश कुमार द्वारा अटल बिहारी की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ की। अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. जय भगवान सिंह ने अटल बिहारी के सुशासन के प्रमुख बिन्दुओं को रेखांकित किया। बीएड विभाग की प्राध्यापिका डॉ. नमिता त्रिपाठी एवं डॉ. सुधीर सिंह ने संचालन किया। डॉ. अजित आनंदमणि ने परिणामों की घोषणा की।

राष्ट्र निर्माताओं में जगा रहे समर्पण की भावना

छात्र-छात्राओं और शिक्षकों को भारत माता का चित्र भेंट करते संघ सेवक।

बेनीगंज, हरदोई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के अवसर पर संघ सेवकों द्वारा गृह संपर्क अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत गुरुवार को संघ सेवकों ने नगर के गांधी इण्टर कालेज में राष्ट्र निर्माता छात्र-छात्राओं व शिक्षकों से संपर्क किया। संघ सेवकों ने विद्यालय के छात्र-छात्राओं व शिक्षकों को भारत माता का चित्र भेंट करते हुए बताया समर्पण की भावना, आत्म चिंतन व आभार से ही सशक्त देश का निर्माण संभव है। व्यक्ति निर्माण से ही राष्ट्र निर्माण संभव है। इस मौके पर संघ सेवक दुर्गा शरण, दिलीप, रमेश, नंदकिशोर, उत्कर्ष आदि रहे।

सहायक उपकरण पाकर खिले चेहरे

दिव्यांग को ट्राई-साइकिल देते विधायक माधवेंद्र प्रताप सिंह रानू। अमृत विचार

भरखनी, हरदोई। सवायजपुर विधायक माधवेन्द्र प्रताप सिंह रानू ने सक्षम संस्था द्वारा दिव्यांगजनों की सुविधा एवं सुगमता हेतु गन्ना कृषक महाविद्यालय में आयोजित सहायक उपकरण वितरण कार्यक्रम में दिव्यांग जनों को विभिन्न प्रकार के उपकरण जैसे ट्राई साइकिल, व्हील चेयर, वैशाकी, ब्लाइंड स्टिक, कान मशीन आदि वितरण करते हुए तहसील प्रशासन की ओर गर्म कम्बल वितरित किए। इस अवसर पर राघवेन्द्र सिंह, राम नरेश शर्मा, अनोखे लाल कश्यप, अनिल सिंह राजपूत, निशा कुशवाहा, राम सिंह कुशवाहा आदि मौजूद रहे।

मदरसा मोहम्मद उमर में गोष्ठी का आयोजन

बिलग्राम, हरदोई। विकासखंड बिलग्राम के रहुला गांव स्थित मदरसा मोहम्मद उमर में बृहस्पतिवार को अल्पसंख्यक अधिकार दिवस के अवसर पर एक जागरूकता गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में अल्पसंख्यक समाज के अधिकारों और कर्तव्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। वक्ताओं ने संविधान द्वारा प्रदत्त अल्पसंख्यक अधिकारों की जानकारी देते हुए कहा कि शिक्षा, समानता और सामाजिक सद्भाव के माध्यम से ही समाज का समुचित विकास संभव है। गोष्ठी के दौरान यह भी कहा गया कि अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों का पालन करना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। अल्पसंख्यक समाज को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने और सरकारी योजनाओं का लाभ लेने के लिए जागरूक रहने का आह्वान किया गया। इस अवसर पर मदरसा मोहम्मद उमर के प्रबंधक मोमिन खान, प्रधानाचार्य मोबीन खान सहित मदरसे के समस्त अध्यापक उपस्थित रहे। सभी ने कार्यक्रम को समाज के लिए उपयोगी बताया।

भाजपा कार्यालय का घेराव करने जा रहे कांग्रेसियों को पुलिस ने किया गिरफ्तार

संवाददाता, हरदोई

अमृत विचार। भाजपा कार्यालय घेरने जा रहे कांग्रेसियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। नेशनल हेराल्ड मामले को लेकर कांग्रेसियों ने भाजपा कार्यालय घेरने का ऐलान कर दिया। आनन-फानन भारी पुलिस बल लखनऊ चुंगी पर पहुंच गया। पुलिस ने कांग्रेसियों को हिरासत में लेकर पुलिस लाइन भेज दिया। पुलिस ने कांग्रेस जिलाध्यक्ष विक्रम पांडेय, एनएसयूआई के जिलाध्यक्ष मो. हसन, पूर्व जिलाध्यक्ष अजय सिंह सहित जुलूस की शक्ल में आ रहे तमाम कांग्रेसियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। बाद में बसों से ले जाकर पुलिस लाइन में भेज दिया। उधर भाजपाइयों ने भी पूर्व जिलाध्यक्ष राम बहादुर सिंह के नेतृत्व ने कार्यालय के बाहर कांग्रेसियों से मुकाबला करने का मन बनाया था लेकिन रास्ते में ही पुलिस ने कांग्रेसियों को गिरफ्तार कर लिया। पूर्व जिलाध्यक्ष आशीष सिंह व पूर्व नगर अध्यक्ष जमील अंसारी व उनके साथ इस प्रदर्शन से दूरी बनाए रहे।

कांग्रेसियों को ले जाती पुलिस। अमृत विचार

बैंक से रुपये लेकर लौट रहे अधेड़ की रास्ते में मौत

हरदोई, अमृत विचार। अधेड़ बेटे के हाथों भेजे गए पैसे निकाल कर लौट रहा था। उसी बीच उसकी रास्ते में मौत हो गई। पैसे भेजने वाले उसके बेटे ने सारे पैसे गायब होने के बारे में बताते हुए लूट होने का आरोप लगाया है। बताया गया है कि हरपालपुर थाने के कनकपुर धरमपुर निवासी 54 वर्षीय श्रीकृष्ण खेती-बाड़ी करता था। उसके चार बेटे जबर सिंह, अमर सिंह, वीरेंद्र और राजपाल के अलावा तीन शादी-शुदा बेटियां है। छोटा बेटा राजपाल हरियाणा के पानीपत में नौकरी करता है। राजपाल ने वहां से पैसे भेजे थे। बुधवार को श्रीकृष्ण खरगपुर पैसे निकालने गया और भुगतान लेने के बाद साइकिल से घर लौट रहा था। बड़ागांव रोड पर मड़ैया के पास गंभीरी नदी पुल पर साइकिल से गिरा और वहीं पर मौत हो गई। काफी देर बाद किसी राहगीर ने फोन उठाया और उसी ने बताया था कि उसके पिता की मौत हो चुकी है। इतना सुनते ही उसने अपने घर वालों को पूरी बात बताई।

सेवानिवृत्त रेलवे कर्मचारी की बाइक से टकराकर गई जान

हरदोई, अमृत विचार। लखनऊ-पलिया हाईवे के रैंसो चौराहे पर बाइक ने सड़क किनारे खड़े रेलवे कर्मी को टक्कर मार दी जिससे उसकी मौत हो गई। बताया गया है कि कछौना कोतवाली के कोडरी मजरा लोनहरा निवासी 65 वर्षीय सेवानिवृत्त रेलवे कर्मी राम बक्श बुधवार को दवा लेने घर से निकला और दोपहर रैंसों चौराहे पर हाईवे के किनारे खड़ा था। इस बीच तेज रफ्तार बाइक ने उसे टक्कर मार दी जिससे वह घायल हो गया। मौजूद लोगों ने बाइक पकड़ ली। बुजुर्ग को वहां से सीएचसी कछौना पहुंचाया गयाजहां से डाक्टरों ने उसे मेडिकल कालेज के लिए रिफर कर दिया। उसे एम्बुलेंस 108 से लाया जा रहा था रास्ते में हालत बिगड़ने पर 100 बेड हास्पिटल पहुंचाया गया वहां पहुंचते ही उसकी मौत हो गई। रामबक्श की पत्नी शिवकारा की पहले ही मौत हो चुकी थी। उसकी दो शादी-शुदा बेटियां और एक बेटा संजय है। पुलिस हादसे की जांच कर रही है।

निजी बस चालक की पत्नी ने की आत्महत्या

हरदोई/टड़ियावां, अमृत विचार। निजी बस चालक की पत्नी ने कमरे के अंदर दुपट्टे से फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। बेटी मां का शव लटकता हुआ देख चीखती हुई भागी। उसकी आवाज सुन वहां पहुंचे लोगों ने दरवाजा तोड़कर शव बाहर निकाला। टड़ियावां के हर्रई निवासी राजवीर गोपामऊ-पिसावां रोड की निजी बस चलाता है। उसकी शादी साल 2015 में हुई थी। ईश्वरपुर साईं के रामाधार की 30 वर्षीय पुत्री साक्षी के साथ हुई थी। साक्षी के एक बेटा यश और दो बेटियां सोना व ऋधिमा हैं। राजवीर अपने घर वालों से अलग दूसरे मकान में रहता है। गुरुवार को वह बस ले कर चला गया। दोपहर में साक्षी बच्चों को खेलते हुए छोड़ कर कमरें में चली गई और देर बाद तक बाहर नहीं आई। इधर, उसकी बड़ी बेटी सोना उसे ढूंढते हुए कमरे के पास पहुंची। दरवाज़ा बंद था। उसने खिड़की से झांक कर देखा। अंदर उसकी मां का शव फांसी पर लटक रहा था। सोना चीखती हुई बाहर भागी और पड़ोस की फूलमती को सारी बात बताई। फूलमती गांव वालों के साथ राजवीर के घर पहुंची। दरवाजा तोड़कर साक्षी को बाहर निकाला गया लेकिन उससे पहले उसकी मौत हो चुकी थी।

चोरों ने घर से हजारों का माल समेटा

सांडी, हरदोई। मो. नबाबगंज मां मंगला शक्ति पीठ मार्ग पर स्थित बन्द मकान में चोरों ने चोर कर ली। पीड़ित ने थाने में तहरीर दी। थानाध्यक्ष राकेश यादव ने मामला संज्ञान में होना बताया। थाना क्षेत्र के ग्राम भीखपुर निवासी सुन्दर लाल का मो. नबाबगंज में एक मकान है जिसमें यदाकदा स्वयं रहते हैं, जिसमें तमाम गृहस्थी का सामान भी रखा है। सुन्दर लाल के अनुसार 16 दिसम्बर को मकान में ताला बन्द करके गांव चले गये थे। 18 दिसम्बर गुरुवार को जब मकान पहुंचा, तब दोनों कमरों ताला तोड़कर चोरों ने चोरी कर ली। पीडित ने बताया कि बेटी की शादी के लिए पीतल बर्तन बिक्री करने के लिए रखे थे।

भाकियू अंबावता गुट ने सौंपा ज्ञापन

संवाददाता, बिलग्राम, हरदोई

अमृत विचार। भारतीय किसान यूनियन अंबावता गुट के मंडल अध्यक्ष अशोक राठौर ने लखनऊ से बिलग्राम पहुंचकर किसानों की विभिन्न समस्याओं को लेकर उपजिलाधिकारी एनराम को ज्ञापन सौंपा। इस दौरान संगठन के जिला अध्यक्ष प्रेम सागर सहित कई पदाधिकारी व किसान मौजूद रहे। ज्ञापन के माध्यम से किसानों की जमीनी समस्याओं को प्रशासन के समक्ष मजबूती से रखा गया। ज्ञापन में मल्लावां क्षेत्र के इस्लामपुर जगई गांव में मनरेगा मजदूरी का भुगतान लंबे समय से लंबित होने का मुद्दा उठाया गया। इसके साथ ही बैफरिया संपर्क मार्ग की बदहाल स्थिति का उल्लेख करते हुए शीघ्र निर्माण कराए जाने की मांग की गई। किसानों ने यह भी आरोप लगाया कि यूरिया खाद की कीमतें मनमाने ढंग से बढ़ाकर किसानों को दी जा रही हैं, जिससे किसान आर्थिक रूप से परेशान हैं। मंडल अध्यक्ष अशोक राठौर ने कहा कि जनपद हरदोई में कड़ाके की ठंड पड़ रही है, लेकिन इसके बावजूद कई बुजुर्ग आज भी कंबल वितरण योजना से वंचित हैं। उन्होंने मांग की कि तत्काल कंबल उपलब्ध कराए जाएं।

एसडीएम को ज्ञापन सौंपते भाकियू अंबावता गुट के लोग। अमृत विचार

न्यूज ब्रीफ

खाई में पलटा ट्रैक्टर चालक की हालत गंभीर

सीतापुर, अमृत विचार : घने कोहरे के बीच सड़क हादसों का सिलसिला थम नहीं रहा है। पिसावां थाना क्षेत्र में बुधवार देर रात वजीरनगर रोड पर पीसीएफ केंद्र के सामने ट्रैक्टर खाई में पलट गया। हादसे में ट्रैक्टर चालक गंभीर रूप से घायल हो गया। कुतुबनगर निवासी अजय कुमार पिसावां से भगवानपुर की ओर ट्रैक्टर लेकर जा रहा था। इसी दौरान पीछे से आ रही तेज रफ्तार पिकअप को साइड देने के प्रयास में ट्रैक्टर अनियंत्रित होकर सड़क किनारे गहरी खाई में पलट गया। ट्रैक्टर के नीचे दबने से चालक गंभीर रूप से घायल हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने स्थानीय लोगों की मदद से घायल को सीएचसी पहुंचाया, जहां से जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। जेसीबी की मदद से ट्रैक्टर को बाहर निकाला गया। पुलिस हादसे की जांच कर रही है।

चोरी के सामान के साथ पकड़ा गया शातिर

सीतापुर, अमृत विचार : सदरपुर पुलिस ने एक चोर को गिरफ्तार कर चोरी का खुलासा किया। रेउसा थाना क्षेत्र के भदमरा गांव निवासी इस्लाम पुत्र शुबराती को गिरफ्तार किया। आरोपी के कब्जे से तीन सोलर पैनल और एक चांदी का सिक्का बरामद किया गया। क्षेत्राधिकारी वेद प्रकाश श्रीवास्तव ने बताया कि शातिर का आपराधिक इतिहास है। आरोपी के खिलाफ विधिक कर्रवाई की जा रही है।

गैंगस्टर एक्ट में दोषी को 5 वर्ष का कारावास

सीतापुर, अमृत विचार : थानगांव थाने में उत्तर प्रदेश गैंगेस्टर एक्ट के तहत दर्ज मामले में बुधवार को अपर सत्र न्यायालय, विशेष न्यायाधीश ने दोषसिद्ध आरोपी रामपुर मथुरा थाना क्षेत्र के दहला गांव निवासी बच्चा पंडित पुत्र वेदनाथ को 5 वर्ष सश्रम कारावास और 20 हजार रुपये अर्थदण्ड की सजा सुनाई है।

बच्चों का टीकाकरण

महोली, सीतापुर, अमृत विचार : हाजीपुर में वीएचएसएनडी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान गर्भवती महिलाओं और की स्वास्थ्य जांच की गई, जबकि 0 से 5 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों का नियमित टीकाकरण किया गया।

शहर में रकबों का खेल, कोई पास कोई फेल

नेपालापुर चौराहे के नजदीक की भूमि को लेकर किसानों ने की जांच की मांग, मांगा पुराना नक्शा

जीशान कदीर, सीतापुर

उठे सवाल

- राजस्व परिषद पहुंचा एक प्रकरण, डीएम ने एडीएम को दिए जांच के निर्देश

अमृत विचार : शहर और उसके आसपास रकबा और गाटों में खेल हुए। इन्हीं दावों के बीच किसानों ने सवाल उठाए, शिकायतों के आधार पर प्रकरण राजस्व परिषद तक पहुंचे, गंभीर प्रकरण की सुनवाई शुक्रवार को है।

मामला सीतापुर सदर तहसील क्षेत्र की सबसे चर्चित ग्राम सभा नेपालापुर का है। किसान रामासरे पुत्र नत्था निवासी रमपुरवा मजरा नेपालापुर के मुताबिक, उनकी भूमि से परिवार खेती-बाड़ी कर आजीविका चलाता था। बताते हैं कि कई वर्ष पुत्र रामसागर की हालत खराब हुई तो वे लोग उपचार में लग गए, ऐसे में भूमाफिया ने जमीन के गाटे में खेल कर दिये।

समय बीतने के बाद नेपालापुर वाया बिजवार मार्ग बना तो धारा 24 के तहत पैमाइश का आवेदन उपजिलाधिकारी सदर कार्यालय में किया। काफी समय बाद नापजोख हुई तो आधी जमीन गायब मिली। करोड़ों के हेरफेर का प्रकरण राजस्व परिषद पहुंचा, ऐसे में शक्रवार को किसान को साक्ष्यों के साथ बुलाया गया है।

किसान बोले- ढूंढ़े नहीं मिल रहा पुराना नक्शा

किसान कांशीराम, सुशीला देवी आदि का दावा है कि उनकी भूमि नेपालापुर चौराहे के नजदीक है। भूमाफिया ने मिलकर गाटे का रकबा कम कर दिया। आरोप है कि पुराना नक्शा ही गायब करा दिया गया है। इस बात की शिकायत पहले उन लोगों स्थानीय स्तर पर की। इस प्रकरण को लेकर ग्रामीण जिलाधिकारी डॉ. राजा गणपति आर. से मिले। डीएम ने प्रकरण को गंभीरता से लेते हुए जांच का जिम्मा एडीएम को सौंपा है।

मृत महिला ने कराया दाखिल खारिज !

कार्यालय संवाददाता, सीतापुर

- सीतापुर सदर तहसील क्षेत्र का प्रकरण, जमीन खरीदने में कागजों में हेरफेर का दावा
- जिलाधिकारी के आदेश पर एसडीएम सदर ने शुरू की जांच शिकायतकर्ता से लिए साक्ष्य

अमृत विचार : जरा सोचिए, क्या मरने के बाद भी कोई प्रशासनिक प्रक्रिया के तहत साक्ष्य प्रस्तुत करने आ सकता है। मामला यहीं पर खत्म नहीं हुआ, लगभग एक वर्ष पूर्व दिवंगत हो चुकी उस महिला ने अंगूठा लगाकर जमीन का दाखिल खारिज भी करा लिया। फर्जीवाड़े के इस खेल की शिकायत जब जिलाधिकारी तक पहुंची, तो सख्त डीएम डॉ. राजा गणपति आर. ने इस मामले की जांच के निर्देश जारी किये है।।

शिकायतकर्ता प्रदीप श्रीवास्तव के मुताबिक, मामले की शुरुआत तहसील क्षेत्र मिश्रिख से हुई। यहां बरगदहा गांव वासी जगरानी पत्नी छंगा की मृत्यु 27 अक्टूबर वर्ष 2023 को हुई थी। ग्राम प्रधान व पंचायत अधिकारी द्वारा महिला जगरानी का मृत्यु प्रमाण पत्र जारी किया गया था। फिर उपजिलाधिकारी मिश्रिख 7 अक्टूबर 2024 को पारिवारिक सदस्यता प्रमाण पत्र जारी करते हैं।

प्रस्तुत किये गए दस्तावेजों को मानें तो 15 अक्टूबर 2024 को दिवंगत हो चुकी जगरानी स्वयं तहसीलदार सदर के यहां अपना दाखिल खारिज प्रार्थना पत्र निशानी अंगूठा लगाकर बैनामा दाखिल खारिज प्रार्थना पत्र देती हैं। 29 जनवरी 2025 को दिवंगत जगरानी स्वयं नायब तहसीलदार के यहां उपस्थित होती हैं। नायब तहसीलदार सदर की ओर से 30 जनवरी 2025 को दिवंगत जगरानी के प्रार्थना पत्र पर दाखिल खारिज का आदेश पारित किया जाता है।

> शिकायतकर्ताओं के हर प्रार्थना पत्र को गंभीरता से लिया जाता रहा है। प्रकरण की प्रक्रिया के तहत जांच कराई जाएगी।
> –धामिनी एम. दास, एसडीएम सदर

इस संबंध में बार एसोसिएशन सीतापुर के पूर्व उपाध्यक्ष मनोज श्रीवास्तव का कहना है कि किसी भी जमीन का दाखिल खारिज करने से पहले अभिलेखों और पक्षों दोनों की जांच विभागीय और विधिक प्रक्रिया दोनों के तहत की जाती है, जो नहीं की गई। ये अपने आप में बड़ा सवाल है। इसकी उच्च स्तरीय जांच आवश्यक है, फर्जीवाड़ा करने वालों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जानी चाहिए।

पवन सिंह लोक लेखा समिति के सदस्य बने

कार्यालय संवाददाता, सीतापुर

- सीतापुर के विधान परिषद सदस्य को मिली अहम जिम्मेदारी

पवन सिंह चौहान।

अमृत विचार : प्रदेश सरकार ने सीतापुर से विधान परिषद सदस्य पवन सिंह चौहान को लोक लेखा समिति का सदस्य मनोनीत किया है। लोक लेखा समिति को विधानमंडल की सबसे महत्वपूर्ण वित्तीय समितियों में माना जाता है, जो सरकारी खर्चों और सार्वजनिक धन के उपयोग पर नजर रखती है।

एमएलसी एवं प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान के संस्थापक पवन सिंह चौहान को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा लोक लेखा समिति का सदस्य नामित किया गया। समिति राज्य सरकार के विभिन्न विभागों द्वारा किए गए व्यय, सार्वजनिक धन के उपयोग और नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) की ऑडिट रिपोर्ट की गहन समीक्षा कर वित्तीय अनुशासन और जवाबदेही सुनिश्चित करती है।

मनोनयन के बाद पवन सिंह चौहान ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, विधान परिषद के सभापति कुंवर मानवेंद्र सिंह और विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि लोक लेखा समिति की सदस्यता उनके लिए सम्मान के साथ बड़ी जिम्मेदारी भी है। वे सरकार के सभी विभागों और स्वायत्त संस्थाओं के वित्तीय कार्यों की निष्पक्ष और तथ्यपरक समीक्षा कर पारदर्शिता को और मजबूत करने का प्रयास करेंगे।

सरकारी खर्च और ऑडिट रिपोर्टों की करेंगे निगरानी

बिना अनुमति मूर्तियों की स्थापना, 8 पर केस

संवाददाता, लहरपुर, सीतापुर

- दरियापुर स्थित नवीन परती भूमि पर रात में की गई आंबेडकर और बुद्ध की मूर्तियां स्थापित
- पुलिस ने सार्वजनिक संपत्ति नुकसान निवारण अधिनियम के तहत 8 पर दर्ज किया मुकदमा

अमृत विचार : तहसील क्षेत्र के ग्राम दरियापुर में बीती 10 दिसंबर की रात बिना शासन की अनुमति आठ लोगों ने नवीन परती भूमि पर डॉ. भीमराव आंबेडकर और भगवान बुद्ध की मूर्तियां स्थापित कर दीं। गांव के ही एक व्यक्ति की तहरीर के आधार पर कोतवाली पुलिस ने सार्वजनिक संपत्ति नुकसान निवारण अधिनियम व अन्य सुसंगत धाराओं के तहत एफआईआर दर्ज कर कार्रवाई शुरू की है।

लहरपुर कोतवाली क्षेत्र के ग्राम दरियापुर स्थित नवीन परती भूमि गाटा संख्या 532, रकबा 0.202 हेक्टेयर पर ग्रामवासी राम लखन, कैलाश, मिश्रीलाल, संजय, जग्गन, रामसेवक, संतोष, पुत्तन और कुछ अन्य लोगों ने बाबासाहेब और भगवान बुद्ध की मूर्तियां स्थापित कीं। मामले में ग्रामवासी राम गुलाम पुत्र बहोरी ने तहरीर दी, जिस पर लेखपाल अरविंद कुमार की संस्तुति के बाद कोतवाली पुलिस ने आठ नामजद और कुछ अज्ञात लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की। कोतवाली प्रभारी अरविंद सिंह ने बताया कि आरोपियों के खिलाफ विधिक कार्रवाई की जा रही है।

100 स्थानों पर अलाव तीन रैन बसेरे बनेंगे

लहरपुर, सीतापुर, अमृत विचार : कड़ाके की ठंड को देखते हुए नगर पालिका परिषद ने नगरवासियों और आने-जाने वाले राहगीरों को राहत देने के लिए इंतजाम किए हैं। पालिका परिषद सभागार में आयोजित बैठक में पालिका अध्यक्ष हाजी जावेद अहमद ने पालिका कर्मियों को नगर के सभी प्रमुख स्थानों और वार्डों में अलाव जलाने के निर्देश दिए। पालिका अध्यक्ष ने बताया कि अब तक केवल प्रमुख चौराहों पर अलाव की व्यवस्था थी, लेकिन ठंड के प्रकोप को देखते हुए नगर के 25 वार्डों सहित लगभग 100 स्थानों पर अलाव जलाए जाएंगे। साथ ही रात में ठहरने वाले जरूरतमंद लोगों के लिए रैन बसेरा की सुविधा भी बढ़ाई जा रही है। पालिका परिषद सभागार में पहले से एक रैन बसेरा संचालित है, जबकि बिस्वां तिराहा गेट और लखीमपुर प्राइवेट बस स्टेशन के पास दो नए रैन बसेरे बनाए जाने के निर्देश दिए गए हैं।

भाजपा दफ्तर घेरने जा रहे कांग्रेसी रोके गए

कार्यालय संवाददाता, सीतापुर

ईडी की कार्रवाई का विरोध करते कांग्रेस कार्यकर्ता। ● अमृत विचार

अमृत विचार : प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय के निर्देश पर गुरुवार को जिला कांग्रेस कमेटी की जिलाध्यक्ष के नेतृत्व में भाजपा कार्यालय के घेराव के लिए सैकड़ों कार्यकर्ता एकत्रित हुए। शहर के जिला कांग्रेस कार्यालय से कार्यकर्ता जीआईसी चौराहा और फिर कोतवाली होते हुए लालबाग चौराहे की ओर जा रहे थे। ऐसे में पुलिस ने उन्हें रस्सी लगाकर उन्हें रोक लिया।

प्रदर्शन को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष डॉ. ममता वर्मा ने कहा कि पिछले एक दशक से केंद्र की भाजपा सरकार कांग्रेस और उसके नेताओं के खिलाफ राजनीतिक द्वेष के तहत गैरकानूनी कार्रवाई कर रही है। यंग इंडियन मामले में सोनिया गांधी और राहुल गांधी के खिलाफ ईडी की कार्रवाई को न्यायालय ने दुर्भावनापूर्ण और क्षेत्राधिकार से बाहर बताया है। अदालत ने साफ तौर पर कहा है कि मामले में न मनी लॉन्ड्रिंग है और न ही अपराध की कोई आय।

शहर अध्यक्ष शिशिर बाजपेई ने कहा कि कांग्रेस सत्य और नागरिक अधिकारों की लड़ाई से पीछे नहीं हटेगी।

संगठन प्रभारी शिव प्रकाश सिंह ने इसे सत्य की जीत बताया। प्रदेश महासचिव किसान कांग्रेस राजेश सिंह तोमर ने सरकार को जनविरोधी और संविधान विरोधी करार दिया। कार्यक्रम में विनीत दीक्षित, रमेश निषाद, उत्कर्ष अवस्थी, कमला रावत, जितेंद्र शुक्ला, नरेंद्र वर्मा सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे।

महिला को सरेराह पीटा, केस दर्ज

लहरपुर, सीतापुर, अमृत विचार : कोतवाली क्षेत्र के ग्राम अढमलपुर में एक विवाहिता के साथ मारपीट और धमकी का मामला सामने आया है। पीड़िता की तहरीर पर पुलिस ने पति समेत ससुराल पक्ष के लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर जांच शुरू की।

ग्राम अढमलपुर निवासी 25 वर्षीय रेशमा ने कोतवाली पहुंचकर प्रार्थना पत्र दिया। उसने बताया कि उसकी शादी दो वर्ष पूर्व बलवंत के साथ हुई थी। आरोप है कि पति बलवंत, ससुर राम जीवन और सास सुनीता आए दिन गाली-गलौज करते हुए मारपीट करते हैं। पीड़िता के अनुसार उसकी शादी गांव के ही राजेश ने कराई थी। विगत 13 दिसंबर को ससुरालियों ने उसे बेरहमी से पीटा, जिससे जान बचाने के लिए वह राजेश के घर भाग गई। आरोप है कि वहां भी आरोपी पहुंच गए और राजेश तथा उसके पुत्र उत्तम को लाठी-डंडों से पीटा। जान से मारने की धमकी दी।

मनरेगा का नाम बदलने के विरोध में प्रदर्शन

फूटा गुस्सा

संवाददाता, सीतापुर

प्रदर्शन करते संगठित किसान मजदूर संगठन के सदस्य। ● अमृत विचार

अमृत विचार : केंद्र सरकार द्वारा मनरेगा के स्थान पर लाए गए नए बिल विकसित भारत – गारंटी फॉर रोजगार आजीविका मिशन ग्रामीण के विरोध में हरगांव व मछरेहटा विकास खण्ड के मनरेगा मजदूर, महिलाओं, युवाओं और किसानों आदि ने बड़ी संख्या में रैली निकाल कर प्रदर्शन किया। वहीं, संगठित किसान मजदूर संगठन ने भी कार्यकर्ताओं के साथ प्रदर्शन किया। संगठन के रामशरण, राजेश, सीता, कलावती, हंसराज, राजाराम, राजश्री आदि ने बताया कि नए बिल से मनरेगा के मूल स्वरूप को कमजोर किया जा रहा है।

किसान सहित अन्य संगठनों ने भी खोला मोर्चा : ऑल इंडिया पीपुल्स फ्रंट की राष्ट्रीय कार्य समिति के सदस्य डॉ. बृज बिहारी ने कहा कि जीरामजी योजना पलायन और आजीविका के संकट को और बढ़ाएगा। उन्होंने बताया कि प्रतिवाद दिवस के रूप में ये विरोध 21 दिसंबर तक जारी रहेगा। 22 से 27 दिसंबर तक ब्लॉक मुख्यालयों पर मनरेगा मजदूर राष्ट्रपति को संबोधित ज्ञापन सौंपेंगे। किसान मंच के राष्ट्रीय सचिव शिव प्रकाश सिंह ने मनरेगा बहाल करो का नारा दिया, आंदोलन को और तेज करने की चेतावनी दे डाली।

बिसवां में मनरेगा बहाली को लेकर प्रदर्शन

बिसवां, सीतापुर, अमृत विचार : मनरेगा की जगह प्रस्तावित विकसित भारत–गारंटी फॉर रोजगार एंड आजीविका मिशन (ग्रामीण) बिल 2025 के विरोध में बिसवां तहसील क्षेत्र की ग्राम सभाओं और पंचायत सचिवालयों में गुरुवार को जोरदार प्रतिवाद दर्ज कराया गया। किसान मंच और ऑल इंडिया पीपुल्स फ्रंट के आह्वान पर जनपद के सभी ब्लॉकों की 130 ग्राम सभाओं में पहले चरण का प्रतिवाद दिवस आयोजित किया गया। हालांकि ये रविवार तक लगातार जारी रहेगा। किसान मंच के राष्ट्रीय सचिव और कांग्रेस के जिला उपाध्यक्ष शिव प्रकाश सिंह ने कहा कि नई जीरामजी योजना के जरिए ग्रामीण गरीबों से रोजगार का कानूनी अधिकार छीना जा रहा है।

सिटी डायरी

राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य का स्वागत करते कस्बा वासी। अमृत विचार

राकेश का हुआ स्वागत

खैराबाद, सीतापुर, अमृत विचार : भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय परिषद के सदस्य चुने जाने पर राकेश त्रिपाठी का स्वागत किया गया। कमाल सराय स्थित परशुराम मंदिर परिसर में आयोजित सम्मान समारोह में विभिन्न वर्गों के लोगों ने सहभागिता की। कार्यक्रम का आयोजन कृष्णकांत मिश्रा, राजू टंडन, विभूति भूषण शुक्ला, अजय शुक्ला, अतुल मिश्रा लकी, अंशु धवन, शम्मी दादा व दिलीप वर्मा सहित अन्य ने किया। समारोह में पालिका अध्यक्ष प्रतिनिधि अभिषेक गुप्ता बबलू, सत्य प्रकाश मिश्रा, निरंकार गुप्ता, संदीप मिश्रा, अरुण अवस्थी आदि मौजूद थे।

प्रशिक्षण के दौरान उपस्थित आंगनबाड़ी कार्यकत्रियां।

कार्यकत्रियों को मिला प्रशिक्षण

गोंदलामऊ, सीतापुर, अमृत विचार : संदना क्षेत्र में स्थित आंगनबाड़ी केंद्रों की कार्यकत्रियों को विकास खंड गोंदलामऊ स्थित बीआरसी परिसर में तीन दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को दिव्यांग बच्चों की पहचान, देखभाल और उन्हें विद्यालयी शिक्षा से जोड़ने की प्रक्रिया के बारे मे बताया गया। प्रशिक्षण के दौरान मास्टर ट्रेनर्स ने व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से बताया कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सामान्य शिक्षा प्रणाली से कैसे जोड़ा जाए। इस दौरान आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों ने कार्य के अनुपात में कम मानदेय मिलने पर नाराजगी जताते हुए मानदेय बढ़ाए जाने की मांग भी उठाई।

ब्लॉक स्तरीय संगोष्ठी आयोजित

सांडा, सीतापुर, अमृत विचार : बीआरसी सकरन में ग्राम प्रधानों एवं स्थानीय प्राधिकारी निकाय के सदस्यों की एक दिवसीय ब्लॉक स्तरीय संगोष्ठी एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें आगामी शिक्षा सत्र 2025-26 को लेकर विभागीय योजनाओं और सहभागिता पर चर्चा हुई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बिसवां विधायक निर्मल वर्मा ने कहा कि बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा डीबीटी के माध्यम से यूनिफॉर्म, स्कूल बैग, स्वेटर, जूता-मोजा व स्टेशनरी की धनराशि सीधे अभिभावकों के खातों में भेजी जाती है। अभिभावक समय से बच्चों को आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराएं, ताकि उनका मनोबल बना रहे।

गेहूं की फसल पर कीटनाशक डाला

लहरपुर, सीतापुर, अमृत विचार : नवीनगर में भूमि विवाद के चलते लहलहाती गेहूं की फसल को कीटनाशक छिड़क कर नष्ट किए जाने का मामला सामने आया है। गांव निवासी सौरभ मिश्रा ने आरोप लगाया कि उसकी 0.405 हेक्टेयर भूमि पर बोई गई गेहूं की फसल हरी-भरी थी, जिसे विपक्षियों ने रंजिशवश नुकसान पहुंचाया। किसान के मुताबिक भूमि विवाद को लेकर चल रही पुरानी रंजिश के चलते विपक्षी गणों ने खेत में खड़ी गेहूं की फसल पर राउंडअप दवा का छिड़काव कर दिया, जिससे फसल जलकर पूरी तरह नष्ट हो गई।

कार्यक्रम | बीआरसी में हमारा आंगन हमारे बच्चे उत्सव आयोजित

प्रतिभागी बच्चों को किया गया पुरस्कृत

संवाददाता, तंबौर, सीतापुर

छात्रा को सम्मानित करते अतिथिगण। ● अमृत विचार

अमृत विचार : निपुण भारत मिशन के तहत बुनियादी साक्षरता एवं प्राथमिक अंकीय दक्षता को मजबूत करने के उद्देश्य से ब्लॉक स्तरीय हमारा आंगन हमारे बच्चे उत्सव का आयोजन बीआरसी बेहटा में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि खंड शिक्षा अधिकारी बेहटा विभा सचान व प्राथमिक शिक्षक संघ अध्यक्ष सिद्धार्थ पटेल विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे।

कार्यक्रम में पूर्व प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण और 5 से 8 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के लर्निंग आउटकम पर आधारित गतिविधियों के माध्यम से जन-जागरूकता पर जोर दिया गया। कंपोजिट विद्यालयों के नोडल अध्यापक (रेडीनेस), आंगनबाड़ी कार्यकत्री व सुपरवाइजर, अभिभावक, जनप्रतिनिधि सहित 100 निपुण बच्चों ने सहभागिता की। इस अवसर पर प्रतिभागी बच्चों को पुरस्कार प्रदान किए गए, जबकि टॉप टेन बच्चों को प्रमाण पत्र व नकद धनराशि देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में एआरपी कामरान खान, जूनियर शिक्षक संघ अध्यक्ष, नोडल शिक्षक नौशाद अंसारी, साबिर अली, वफाउल्ला खान, तुफैल अहमद आदि थे।

ट्रेन की चपेट में आई किशोरी, गंभीर

नैमिषारण्य, सीतापुर, अमृत विचार : थाना क्षेत्र में गुरुवार सुबह स्कूल जा रही 17 वर्षीय छात्रा ट्रेन की चपेट में आ गई। हादसे में छात्रा के दोनों पैर कट गए, जबकि हाथों में भी गंभीर चोटें आईं। हालत नाजुक होने पर उसे लखनऊ रेफर किया गया।

नैमिषारण्य थाना क्षेत्र के भट्ठापुरवा गांव निवासी अंबिका प्रसाद की 17 वर्षीय पुत्री सिद्धा नैमिषारण्य स्थित एक विद्यालय में पढ़ती है। रोज की तरह गुरुवार सुबह घर से स्कूल जा रही थी। इसी दौरान नैमिषारण्य रेलवे क्रॉसिंग पार करते समय बालामऊ की ओर से आ रही ट्रेन की चपेट में आ गई। हादसे में छात्रा के दोनों पैर कट गए। हाथों में भी गंभीर चोटें आईं। वह कुछ समय तक होश में रही। घटना के बाद आसपास के लोगों में अफरा-तफरी मच गई।

नेत्र जांच शिविर

सदरपुर, सीतापुर, अमृत विचार : पर्वतपुर के पास गुरुवार को ढखवा ग्रामपंचायत के प्रधान प्रतिनिधि डीपी सिंह द्वारा नि:शुल्क नेत्र परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने पहुंचकर आंखों की जांच कराई। शिविर में नेत्र रोग विशेषज्ञों की टीम ने नि:शुल्क जांच की। करीब 150 मरीजों का परीक्षण किया गया। इस दौरान तहसीलदार महमूदाबाद अनिल कुमार राम भी शिविर में पहुंचे और नेत्र परीक्षण कराया।

आंख की जांच कराते तहसीलदार महमूदाबाद अनिल कुमार राम।

अमृत विचार

लखनऊ, शुक्रवार, 19 दिसंबर 2025

न्यूज ब्रीफ

मानसिक विक्षिप्त हुआ लापता, दी तहरीर

बछरावां : थाना क्षेत्र के अंतर्गत सुबंश खेड़ा मजरे तिलेडा गांव में एक मानसिक विक्षिप्त अधेड़ गुमशुदा हो गया। गांव के रामवृक्ष ने बताया कि लापता मानसिक विक्षिप्त मंसाराम मेरे पिता हैं। 17 दिसंबर की सुबह खेत के लिए निकले थे और वापस नहीं आए। थाना प्रभारी राजीव सिंह ने बताया कि गुमशुदगी की तहरीर प्राप्त हुई है। मामला पंजीकृत कर उक्त गुमशुदा की तलाश की जा रही है।

तीन बच्चों की मां प्रेमी के साथ फरार

जगतपुर : थाना क्षेत्र के एक गांव से तीन बच्चों की मां प्रेमी के साथ फरार हो गई। पीड़ित पति ने जगतपुर थाने पहुंचकर पुलिस को शिकायती पत्र दिया है। जगतपुर थाना प्रभारी पंकज कुमार त्यागी ने बताया कि प्रार्थना पत्र प्राप्त हुआ है। मामले की जांच की जा रही है। महिला और संदिग्ध युवक की तलाश के लिए आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं।

रंजिश में हुई मारपीट का मामला दर्ज

लालगंज : लालगंज कोतवाली क्षेत्र के पूरे विजयी सिंह मजरे मेरुई गांव में मारपीट की घटना हुई है। घटना में घायल राजेंद्र यादव पुत्र जगनमोहन ने लालगंज पुलिस को शिकायती पत्र देते हुए बताया कि दरवाजे साफ सफाई करते समय रंजिश में गांव के ही लोगों ने लाठी डंडों से हमला बोल दिया। जिससे वह घायल हो गया। प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि मामला दर्ज कर जांच की जाएगी।

शोकसभा में की ईश्वर से प्रार्थना

लालगंज : ऑल मीडिया जर्नलिस्ट एसोसिएशन के प्रदेश उपाध्यक्ष और पूर्व शिक्षक अशोक त्रिवेदी के पिता गिरिजा शंकर त्रिवेदी के निधन पर शहीद स्मारक परिसर में शोकसभा आयोजित की गई। शोकसभा में भाजपा नेता अनूप पांडे, दीप प्रकाश शुक्ला, शैलेंद्र अग्निहोत्री, सुशील शुक्ला, रवि शंकर बाजपेई, प्रेम शंकर त्रिवेदी शैलजा, नीरज श्रीवास्तव, शशिकांत त्रिवेदी, अभय सिंह आदि ने दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

हमारा आंगन हमारे बच्चे उत्सव का हुआ आयोजन

रायबरेली : बीआरसी रोहनिया के प्रांगण में गुरुवार को "हमारा आंगन हमारे बच्चे" उत्सव का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि जिला पंचायत सदस्य रोहनिया द्वितीय राजकुमार और खण्ड शिक्षा अधिकारी डॉ. सत्य प्रकाश यादव रहे। अतिथियों ने मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण और दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उत्सव में कोलोकेटेड आंगनबाड़ी केन्द्र की आंगनबाड़ी कार्यकत्री, नोडल शिक्षक और नोडल शिक्षक संकुल और प्रत्येक संकुल से 5-5 निपुण बच्चों(आंगनबाड़ी और परिषदीय) ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम के विभिन्न सत्रों में माता उन्मुखीकरण पर महेन्द्र सिंह प्रावि समसपुर, वण्डर बाक्स पर शिक्षक सुशील कुमार प्रावि सतहरा ने स्टेशनरी एवं लर्निंग कार्नर पर और आशुतोष सिंह प्रावि बरगदहा, आदर्श बाल वाटिका एवं कक्षा कक्ष प्रस्तुतीकरण शिक्षक शिवनाथ यादव प्रावि ऐहारी बुजुर्ग और समुदाय व अभिभावकों की प्राथमिक शिक्षा में भूमिका पर शिक्षक गौरव कुमार अवस्थी प्रावि पूरे बाबा पर विस्तृत जानकारी साझा की गई। आंगनबाड़ी के बच्चे अदिति, पलक, इशिका, किरन और दीप ने गीत प्रस्तुत किया। वहीं प्राथमिक विद्यालय के बच्चे आयुषी, प्रशांत, नैतिक और अनमोल ने निपुण लक्ष्य ऐप पर दक्षता प्रश्न सफलतापूर्वक हल किया।

एडीएम ने बकायेदारों को नोटिस जारी करने के दिए निर्देश

संवाददाता, रायबरेली

- वसूली में शिथिलता किसी भी दशा में बर्दाश्त नहीं की जाएगी

अमृत विचार। अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ ने कलेक्ट्रेट सभागार में कर-करेत्तर एवं राजस्व वसूली की समीक्षा की। विभिन्न विभागों द्वारा कर-करेत्तर एवं राजस्व वसूली की प्रगति की समीक्षा की गई। विभागवार समीक्षा करते हुए निर्देश दिए गए कि सभी विभाग निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप राजस्व वसूली सुनिश्चित कराए।

उन्होंने कहा कि बकाया वसूली में शिथिलता किसी भी दशा में बर्दाश्त नहीं की जाएगी। संबंधित अधिकारी नियमित रूप से निगरानी करें तथा बकायेदारों को नोटिस जारी कर शीघ्र कार्रवाई करें। उन्होंने यह भी निर्देश दिया कि अपने-अपने कार्यालयों में लंबित प्रकरणों का शीघ्र निस्तारण कराए। अपर जिलाधिकारी ने विशेष रूप से राजस्व, परिवहन, आबकारी, ऊर्जा, जल संस्थान, ग्राम्य विकास, नगर निकाय सहित सभी संबंधित विभागों को निर्देशित किया कि वसूली की गति तेज करें। बैठक में सिटी मजिस्ट्रेट राम अवतार समेत संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

सीएमएस के निर्देश के बाद प्रतीक्षालय से हटवाई गईं बाइकें

अमृत विचार IMPACT

संवाददाता, रायबरेली

कार्रवाई

- जिला महिला अस्पताल में खड़े किए जाते थे दोपहिया वाहन

अमृत विचार। जिला महिला अस्पताल स्थित अभिलेख कक्ष परिसर में मरीजों और उनके परिजनों की सुविधा के लिए बनाया गया प्रतीक्षालय अव्यवस्थाओं का शिकार होकर बाइक स्टैंड में तब्दील हो गया था। अस्पताल आने वाले लोग जहां बैठकर अपनी बारी का इंतजार करने चाहिए था, वहां दोपहिया वाहन खड़े किए जा रहे थे। इस गंभीर लापरवाही से गर्भवती महिलाओं, बुजुर्गों और बच्चों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा था।

अमृत विचार ने 16 दिसंबर के अंक में प्रमुखता से महिला अस्पताल का प्रतीक्षालय बना बाइक स्टैंड नामक शीर्षक से खबर प्रकाशित की, तो अस्पताल प्रशासन हरकत में आया। खबर का संज्ञान लेते हुए मुख्य चिकित्सा अधीक्षक ने तत्काल संबंधित कर्मचारियों को निर्देश दिए। इसके बाद प्रतीक्षालय में खड़ी सभी बाइकें हटवाई गईं और परिसर को तीमारदारों के लिए खाली कराया गया।

जिला महिला अस्पताल स्थित अभिलेख कक्ष परिसर में लंबे समय से कर्मचारी प्रतीक्षालय जैसे संवेदनशील स्थान पर बाइक खड़ी करने से नहीं हिचक रहे थे। इससे न केवल अस्पताल की छवि धूमिल हो रही थी, बल्कि जन्म प्रमाण पत्र बनवाने आने वाले लोगों की सुविधाओं पर भी सीधा असर पड़ रहा था। सीएमएस डॉ निर्मला कुमारी साहू ने स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि भविष्य में प्रतीक्षालय में किसी भी प्रकार का वाहन खड़ा नहीं किया जाएगा। उन्होंने नियमित निगरानी के आदेश दिए हैं। साथ ही वाहन पार्किंग के लिए अन्य स्थान का उपयोग सुनिश्चित कराने को कहा गया है। मरीजों और उनके परिजनों ने अस्पताल प्रशासन की कार्रवाई पर संतोष जताया है और उम्मीद की है कि आगे भी अस्पताल में ऐसी अव्यवस्थाओं पर सख्ती बरती जाएगी। उनका कहना है कि खबर प्रकाशित होने के बाद हुई कार्रवाई से यह साफ है कि मीडिया की भूमिका जनहित में कितनी महत्वपूर्ण है। अब देखना होगा कि यह व्यवस्था स्थायी रूप से लागू हो पाती है या नहीं।

अभिलेख कक्ष प्रतीक्षालय की वर्तमान तस्वीर। अमृत विचार

अभिलेख कक्ष प्रतीक्षालय की पहले की तस्वीर। अमृत विचार

युवक की मौत पर हंगामा, अस्पताल सील

डॉक्टर पर लगाया लापरवाही का आरोप, जिला प्रशासन के आश्वासन पर शांत हुए परिजन

संवाददाता, रायबरेली

अमृत विचार। जेल रोड स्थित निजी अस्पताल में ऑपरेशन के बाद मौत होने पर आक्रोशित परिजनों ने सड़क पर शव रखकर मार्ग जाम कर दिया। सर्जन डॉक्टर पर पथरी के ऑपरेशन में लापरवाही से युवक की मौत होने का आरोप लगाया गया है।

अस्पताल के सामने मार्ग जाम कर प्रदर्शन करने की सूचना मिलते ही प्रशासन के हाथपाव फूल गए। आनन-फानन मौके पर पहुंची पुलिस फोर्स ने मोर्चा संभाला। इसके बाद सिटी मजिस्ट्रेट और एसीएमओ मौके पर पहुंचे और परिजनों को कार्रवाईका आश्वासन दिलाकर उन्हें शांत कराया। इसके बाद मार्ग पर आवागमन बहाल हो सका। बढ़ता हंगामा देख नोडल अधिकारी नैदानिक स्थापन कार्या. मुख्य चिकित्साधिकारी रायबरेली ने परिजनों से पूछताछ के बाद नोटिस चस्पाकर अस्पताल को सील कर दिया है। परिजनों के अनुसार बीते रविवार को लखनऊ के डॉक्टर ने पथरी का ऑपरेशन किया था। ऑपरेशन के बाद भदोखर थाना क्षेत्र के मुहम्दपुर कुचरिया निवासी दीपक गुप्ता (26) को जेल रोड स्थित अवध हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया था। भर्ती रहने के दौरान दीपक की हालत बिगड़ने पर डॉक्टर को फोन किया गया तो मरीज़ को उन्होंने अपने मोहनलालगंज स्थित हॉस्पिटल में बुला लिया। परिजनों का आरोप है कि मोहनलालगंज पहुंचने पर डॉक्टर ने फ़ोन उठाना बंद कर दिया, जिसके चलते परिजनों को मजबूरन मैक्स हॉस्पिटल जाना पड़ा। परिजनों का आरोप है कि डॉक्टर ने समय रहते देख लिया होता तो शायद आज युवक जिंदा होता। परिजनों के अनुसार लखनऊ के मैक्स अस्पताल में डॉक्टरों ने दीपक को मृत घोषित कर दिया, जहां पोस्टमार्टम होने के बाद परिजन शव लेकर रायबरेली के अवध हॉस्पिटल पहुंचे और अस्पताल के सामने जेल रोड पर शव रखकर जोरदार प्रदर्शन शुरू कर दिया।

जेल रोड पर हंगामे के दौरान आक्रोशित परिजनों से बातचीत करते सिटी मजिस्ट्रेट सीओ सिटी व मौजूद भीड़। अमृत विचार

सीओ सदर के आश्वासन पर भी नहीं मान रहे थे परिजन

प्रदर्शन की सूचना पाकर मौके पर पुलिस फोर्स के साथ पहुंचे सीओ सदर अरुण नौहार ने परिजनों को कानूनी कार्रवाई का आश्वासन देते रहे लेकिन वह मानने को तैयार नहीं थे। इसके बाद मौके पर पहुंचे सिटी मजिस्ट्रेट व डिप्टी सीएमओ व सीओ सिटी के कार्रवाई का आश्वासन देने पर परिजनों का गुस्सा शांत हुआ और मार्ग पर आवागमन बहाल कराया गया। डिप्टी सीएमओ की मौजूदगी में हॉस्पिटल को सील कर दिया गया। परिजनों की तहरीर पर कानूनी कार्रवाई की जा रही है।

आयुष्मान कार्ड बनवाने के लिए मांगे रुपये, शिकायत

ऊंचाहार, रायबरेली। क्षेत्र के गांव दिलमनपुर निवासी कैंसर पीड़ित श्यामू बीते बुधवार को सीएचसी में अपनी पत्नी के साथ आयुष्मान कार्ड बनवाने गए थे। उनका कहना है कि इसी साल अप्रैल माह में उनका ऑपरेशन हो चुका है। उनका आरोप है कि सीएचसी में वह आयुष्मान कार्ड मित्र के पास पहुंचे तो उनसे कार्ड बनवाने के लिए रुपये मांगे गये। मांग पूरी न करने पर उन्हें वापस कर दिया गया। गुरुवार को उन्होंने सीएचसी अधीक्षक से शिकायती पत्र देकर कार्रवाई की मांग की है। वहीं संबंध में सीएचसी अधीक्षक डॉ. मनोज शुक्ल का कहना है कि प्रकरण में जांच कराई जा रही है, जांच के बाद कार्रवाई की जाएगी।

जिले में बिक रहा नकली भुना चना चार क्विंटल से अधिक बरामद

संवाददाता, रायबरेली

- खाद्य विभाग की छापेमारी से व्यापारियों में मचा हड़कंप
- हानिकारक रसायनों का उपयोग का मामला आया सामने

अमृत विचार। सावधान कहीं आप नकली भुना चना तो नहीं खा रहे हैं। जी हां जिले में इन दिनों तेजी से इसका कारोबार चल रहा है। यह हम नहीं बल्कि खाद्य विभाग द्वारा छापेमारी के बाद सामने आया है। अलग-अलग दुकानों से करीब चार क्विंटल नकली भुना चना बरामद किया गया है। इस कार्रवाई से व्यापारियों में हड़कंप मचा हुआ है।

आयुक्त के निर्देश पर जनपद में खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन द्वारा भुना चना में मिलावट के विरुद्ध विशेष अभियान चलाया जा रहा है। खाद्य सुरक्षा अधिकारी शेफाली रस्तोगी और कचनलता तिवारी की ओर से अलग-अलग दुकानों पर छापेमारी की गई। जगतपुर स्थित शिव नारायण एंड सन्स 89 किलोग्राम भुना चना बरामद हुआ। इसमें केमिकल रंग ऑरामीन की आशंका एवं बोरी पर अनिवार्य लेबल संबंधी जानकारी न होने के कारण सीज़ किया गया। इसके अतिरिक्त राजा ट्रेडिंग कंपनी, सलोन से 179 किलोग्राम भुना चना भी जब्त किया गया। अभियान के अंतर्गत दो नमूने संग्रहित किए गए। साथ ही लगभग दो क्विंटल भुना चना सीज़ किया गया है।

चने के लिए गए नमूनों को जांच के लिए प्रयोगशाला भेजा गया है। जांच रिपोर्ट प्राप्त होने के उपरांत खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम, 2006 के अंतर्गत अग्रिम विधिक कार्रवाई की जाएगी।

छापेमारी करती खाद्य विभाग की टीम।

सेहत के लिए हानिकारक है भुना चना: अभियान के दौरान यह संज्ञान में आया कि कुछ व्यापारियों द्वारा भुने चने को अधिक पीला, चमकदार व आकर्षक दिखाने के लिए ऑरामीन नामक सिंथेटिक पीले रंग की मिलावट किए जाने की आशंका है। ऑरामीन एक औद्योगिक रसायन है, जिसका उपयोग कपड़ा व कागज़ रंगने में किया जाता है। यह खाद्य पदार्थों के लिए पूर्णतः असुरक्षित है। इसके सेवन से पेट संबंधी विकार, लिवर को नुकसान तथा लंबे समय में कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों का खतरा हो सकता है।

सर्दी में ठिठुर रहे लोग जिम्मेदार बने अंजान

संवाददाता, महराजगंज, रायबरेली

अमृत विचार। कड़ाके की ठंड से लोगों की दिनचर्या में बदलाव का असर तो साफ दिख रहा है। लेकिन महराजगंज नगर पंचायत की शिथिलता के चलते कस्बे के लोग व राहगीर अलाव जलवाने के लिए ईओ और चेयरमैन की तरफ टकटकी लगाए बैठे ठिठुर रहे हैं।

बीते कई दिनों से पड़ रही कड़ाके की ठंड व ठिठुरन से लोगों को निजात दिलाने के लिए जिलाधिकारी सख़्त हैं। वहीं नगर पंचायत के ईओ सुस्त पड़े हैं, जिससे आम जनमानस क्षेत्र से आने जाने वाले राहगीर परेशान है। लोगों का कहना है कि कमीशन खोरी के चलते अब तक अलाव जलवानें के लिए लकड़ी का टेंडर नही कर पाए हैं। अधिशासी अधिकारी राम आशीष वर्मा का कहना है कि टेंडर प्रक्रिया पूरी कर ली गई है। एक दो दिन में वार्डों व चौराहों पर अलाव जलने शुरू हो जाएंगे।

ठंड बढ़ने पर तहसील प्रशासन ने जलवाए अलाव, लालगंज: कोहरा और ठंड के दस्तक देते ही लालगंज तहसील प्रशासन सतर्क हो गया है। एसडीएम मिथिलेश कुमार त्रिपाठी ने तहसील और नगर क्षेत्र में जहां 15 अलाव की व्यवस्था कर दी है। वहीं तीन स्थानों पर रैन बसेरो की भी व्यवस्था की गई है। उन्होंने बताया कि शोभवापुर, लखन गांव, भीतरगांव, मलपुरा, भोजपुर, सरेनी, सेमरी, गेगासों, सागर खेड़ा, खीरो, रण गांव, बहादुरपुर, खजूर गांव सहित 15 ग्राम पंचायतों में अलाव की व्यवस्था सुनिश्चित की गई है। लालगंज नगर पंचायत कार्यालय, गेगासो सहित मंडी परिसर लालगंज में रेन बसेरा बनाए गए हैं, जहां लोग ठहर सकते हैं। एसडीएम ने कहा कि लेखपालों को निरीक्षण के लिए कहा गया है जहां जैसी जरूरत होगी वहां और अलाव जलवाए जाएंगे। वहीं नगर पंचायत अध्यक्ष सरिता गुप्ता ने बताया कि मंगलवार से अलाव जलने लगे हैं। नगर पंचायत कार्यालय में खुले रैन बसेरे में सभी प्रकार की व्यवस्थाएं हैं।

अलाव तापते लोग। अमृत विचार

शार्ट सर्किट से ट्रांसफार्मर में लगी आग

जगतपुर (रायबरेली)। बृहस्पतिवार शाम को कस्बे के चौराहे पर रखा सौ एमबीए ट्रांसफार्मर में शार्ट सर्किट होने से अचानक आग लग गई। ग्रामीणों ने बिजली विभाग के सीयूजी नंबर पर फोन किया लेकिन फोन नहीं उठा। कुछ ग्रामीण उपकेंद्र पहुंचकर इसकी शिकायत की, तब विद्युत आपूर्ति को बंद किया जा सका। इसके बाद हरकत में आए विद्युत विभाग के कर्मचारियों ने किसी तरह आग पर काबू पाया। इससे कस्बे की आपूर्ति पूरी तरह प्रभावित रही। ग्रामीण मनीष श्रीवास्तव, जगदेव ,बबलू, नफीस, दीपक ने बताया कि ट्रांसफार्मर के पास आए दिन शार्ट सर्किट होती है लेकिन बिजली विभाग के अधिकारी उदासीन बने हुए हैं। अवर अभियंता के चन्द्रेश पटेल ने बताया कि केवल में आग लगने से आपूर्ति प्रभावित हुई है मरम्मत का कार्य किया जा रहा।

बलीपुर बाजार में निःशुल्क शिविर कल

डलमऊ, रायबरेली। अब क्षेत्र में कमजोर व असमर्थ रोगियों को परेशान होने की जरूरत नहीं पड़ेगी। जनसरोकार रखने वाले समाजसेवी विकास सिंह ने ऐसे रोगियों को समय-समय पर निःशुल्क स्वास्थ्य लाभ प्रदान कराए जाने का वीडा उठाया है। विकास कन्स्ट्रक्शन कम्पनी की ओर से डलमऊ के बलीपुर बाजार में 20 दिसंबर को निःशुल्क स्वास्थ्य परामर्श एवं जांच शिविर लगाया जाएगा। समाजसेवी विकास सिंह ने बताया कि शिविर में आने वाले रोगियों का सिमहैंस हास्पिटल, मेदांता हास्पिटल लखनऊ, रीजेन्सी हास्पिटल कानुपर व संकुशल कैंसर हास्पिटल के कुशल चिकित्सकों द्वारा उपचार किया जयाग। उन्होंने बताया कि यहां पर आने वाले रोगियों को परामर्श के साथ-साथ निःशुल्क औषधियां भी प्रदान की जाएंगी। उन्होंने बताया कि अब ऐसी रोगियों को परेशान होने की जरूरत नहीं है।

फ्रेम के नीचे दबकर डीसीएम चालक की मौत

संवाददाता, लालगंज (रायबरेली)

अमृत विचार। आधुनिक रेल कोच कारखाने में सेफ्टी की कमी के चलते डीसीएम चालक की मौत हो गई। मृतक दीपू यादव पुत्र रामधनी यादव निवासी दुर्जन का पुरवा मजरे सुल्तानपुर खेड़ा थाना गुरबक्शगंज रेल कोच कारखाने में कॉन्टैक्टर शक्ति ट्रैवल्स में ड्राइवर के पद पर काम करता था। गुरुवार को सायं स्टोर यार्ड में एक ट्रक से 8- 8 टन के फ्रेम उतर रहे थे। तभी फ्रेम उतरने वाले क्रेन की चैन टूटी और नीचे खड़ा दीपू यादव फ्रेम के नीचे दब कर गंभीर रूप से घायल हो गया। साथी श्रमिकों ने आनन-फानन उसे रेल कोच के अस्पताल में पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। मृतक दीपू यादव की मौत से पिता समेत मां राम श्री और छोटे भाई अभिषेक का रो रो कर बुरा हाल है। दीपू पांच वर्षों से शक्ति ट्रैवल्स में नौकरी करता था और घर की रोजी-रोटी चलता था। उसकी मौत से परिवार का सहारा छिन गया है। प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि दीपू यादव की दुर्घटना में मौत हुई है। जांच पड़ताल की जा रही है। वही घर वाले भाई को नौकरी और 10 लाख रुपये मुवायजे की मांग कर रहे थे।

दुर्घटना के बाद रेलकोच कारखाने के अस्पताल में जुटी भीड़। अमृत विचार

- रेलकोच कारखाने में सेफ्टी की कमी के चलते हुआ हादसा

लखनऊ मैच देखने गए युवक की हादसे में मौत, सलोन: लखनऊ के इकाना स्टेडियम में टी-20 मैच देखने गए घर के इकलौते चिराग की सड़क हादसे में बुधवार देर रात दर्दनाक मौत हो गई। घटना उस दौरान घटी जब भारत और साउथ अफ्रीका मैच रद होने के बाद परिवार के ही एक युवक के साथ बहनोई के घर जाने के लिए निकला था। युवक की मौत की खबर घर पहुँचते ही कोहराम मच गया। सलोन कोतवाली अंतर्गत जहानपुर मजरे केवली महिमा निवासी विकास कुमार (35) पुत्र कृष्ण पाल यादव चार बहनों में इकलौता भाई था। बुधवार की सुबह दस बजे युवक अपने परिवार लड़के पंकज के साथ लखनऊ के अटल बिहारी इकाना स्टेडियम में भारत दक्षिण अफ्रीका मैच देखने गया हुआ था। देर रात कोहरे की वजह से मैच रद्द होने के बाद दोनों युवक स्टेडियम से बाहर निकले थे। इसके बाद विकास बहन के घर जाने के लिए जी-20 रोड पर निकले थे। परिवार के लोगो के मुताबिक सफेद कलर की कार ने विकास को जोरदार टक्कर मार दी, जिससे उसकी मौत हो गई। मौत की खबर घर पहुंचते ही कोहराम मच गया। मृतक अपने पीछे पत्नी अनीसा और तीन वर्षीय पुत्र आदविक को छोड़ गया है।

विकास की फाइल फोटो।

निर्देश अभियोजन कार्यों की बैठक में अक्टूबर व नवंबर माह के अभियोजन कार्यों की हुई समीक्षा

गैंगस्टर के लंबित मामलों का शीघ्रता से करें निस्तारण : एडीएम

संवाददाता, रायबरेली

अमृत विचार। जिलाधिकारी हर्षिता माथुर ने निर्देशन में अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ के द्वारा अभियोजन कार्यों की अक्टूबर व नवम्बर माह की समीक्षा बैठक कलेक्ट्रेट साभार में की गई। बैठक में विभिन्न विभागों से संबंधित निस्तारित,लंबित व नए अभियोजन प्रकरणों की गहन समीक्षा की गई। गैंगस्टर के लंबित मामलों को शीघ्रता से पैरवी करते हुए निस्तारित कराने के निर्देश दिए गए।

उन्होंने सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि न्यायालयों में लंबित मामलों की प्रभावी पैरवी सुनिश्चित कराई जाए तथा समयबद्ध कार्रवाई की जाए, गंभीर प्रकरणों में गवाहों की उपस्थिति, समय पर साक्ष्य प्रस्तुत करने तथा केस डायरी की नियमित निगरानी की जाए। बैठक में गैंगेस्टर,पास्को,एससी/एसटी आदि से संबंधित गंभीर प्रकरणों पर विस्तार से समीक्षा की गयी। बैठक में अभियोजन कार्यों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की गई और विभागवार लंबित प्रकरणों का विवरण साझा किया गया। संयुक्त निदेशक अभियोजन धीरेंद्र कुमार मिश्रा, डीजीसी क्रिमिनल अजय मौर्य, सीओ सिटी अरुण कुमार नौहवार आदि उपस्थित रहे।

कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक करते अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ व मौजूद अन्य।

नवागत सीडीपीओ ने आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों के कसे पेच

छतोह (रायबरेली) अमृत विचार। बाल विकास परियोजना छतोह में विगत वर्षों से बाल विकास परियोजना अधिकारी एवं मुख्यसेविका के पद रिक्त चल रहे थे। विगत दिनों परियोजना छतोह में अंजना अवस्थी सीडीपीओ के पद पर एवं मुख्य सेविका के पद पर क्रमशः खुशबू गौड़, फूलमती, शिवानी गुप्ता, नम्रता गुप्ता नियुक्त की गईं हैं। परियोजना में प्रधान सहायक स्वामी नाथ नियुक्त है। लिपिक का पद रिक्त चल रहा है। मुख्य सेविकाओं द्वारा अपने अपने क्षेत्र की आहूत मीटिंग में सीडीपीओ ने सभी से कहा कि सेंटर प्रतिदिन खुलना चाहिए, पुष्टाहार का वितरण ईमानदारी से करने के साथ साथ चावल का वितरण कोटेदार के माध्यम से कराना सुनिश्चित करें। शिकायत प्राप्त होने पर कड़ी से कड़ी कार्यवाही की जाएगी। कुपोषित बच्चों को ऐनम के माध्यम से भर्ती कराएं। गृह भ्रमण प्रतिदिन करते हुऐ ऐप पर प्रतिदिन भरना सुनिश्चित करें। समस्या आने पर अपने क्षेत्र की मुख्य सेविका से तत्काल संपर्क करें। यदि उनसे समस्या हल नहीं होती है तो अपनी समस्या से मुझे अवगत कराए जिसका निस्तारण तत्काल किया जाएगा। बैठक में क्षेत्रीय मुख्य सेविका खुशबू गौड़, शिवानी गुप्ता, नम्रता गुप्ता, फूलमती द्वारा प्वाइंट टू प्वाइंट आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों से जानकारी प्राप्त की गई।

मीटिंग में आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को निर्देश देते सीडीपीओ।

26 तक एसआईआर फॉर्म हर हाल में जमा करें लोग : एसडीएम

संवाददाता, लालगंज (रायबरेली)

सख्ती

अमृत विचार। उप जिलाधिकारी मिथिलेश कुमार त्रिपाठी ने बताया कि 26 दिसंबर एस आई आर फॉर्म सब्मिट करने की अंतिम तिथि है। लेकिन अगर किसी के पास फार्म है तो वह 26 तारीख का इंतजार करने के बजाय उसके पहले ही अपने बीएलओ को दे दें, जिससे समय रहते कार्य पूरा किया जा सके।

उन्होंने कहा कि अगर किसी मतदाता को बीएलओ ने गलत तरीके से शिफ्टेड कर दिया है तो कार्यालय खुले हुए हैं, वहां जाकर के ठीक करा सकता है। इसके अलावा नाम बढ़ाने के लिए फॉर्म 6 भी भरकर बीएलओ को दे सकता है। एसडीएम ने यह भी बताया कि शिफ्टेड ,मृतक , गैर हाजिर लोगों की सूची राजनीतिक दलों के बी एल ए को दे दी गई है। उनसे अपेक्षा की गई है कि वह भी समय रहते इस सूची की समीक्षा कर ले और कहीं कुछ त्रुटि हुई है तो ठीक करा सकते हैं। हरचंदपुर विधानसभा में अब तक 608 फॉर्म नाम बढ़ाने के भी जमा हुए हैं। इसी तरह सरेनी विधानसभा के लोग भी करा सकते हैं। हालांकि सरेनी विधानसभा का कार्य एसडीएम डलमऊ देख रहे हैं जिससे लोगों को कुछ दिक्कतें आ रही हैं। बीएलओ जनता की समस्याओं का निवारण नहीं कर रहे हैं।

न्यूज ब्रीफ

हनुमान जी के जन्म की सुनाई कथा

ऊंचाहार (रायबरेली) : क्षेत्र के गांव कोल्हौर मजरे पट्टी रहस कैथवल में चल रही शिव महापुराण कथा में गुरुवार को कथावाचक आचार्य सत्यांशु महराज ने हनुमान जी के जन्म की कथा सुनाई। उन्होंने कहा कि भगवान शिव के रुद्र अवतार हनुमान जी समस्त जगत के कल्याण के लिए अवतरित हुए हैं। उन्होंने कहा कि भगवान शिव ने भगवान विष्णु के मोहिनी रूप से आकर्षित होकर कामदेव की माया में आ गए, जिसे भगवान शिव ने अपना वीर्यपात कर दिया। इस वीर्य को नग नामक मुनि ने शिवजी के संकेत से इस इच्छा से रखा कि उसके द्वारा श्री रामचंद्र जी का कार्य पूर्ण होगा। इस वीर्यपात को एक पत्ते पर रखकर, सप्त ऋषियों द्वारा माता अंजनी के कान के जरिए, उनके गर्भ तक पहुंचाया गया। इसके बाद, माता अंजनी गर्भवती हुईं और उन्होंने हनुमान जी को जन्म दिया, जो बचपन से ही बहुत बलवान, बुद्धिवान और ताकतवर थे। इस मौके पर राजा चौरसिया व लाल बाबू, गंगा प्रसाद, सचिन चौरसिया, हरिशरण सिंह, दिनेश यादव, राघव, अंकित, चंद्रिका प्रसाद, ललित कुमार, रमेश आदि लोग उपस्थित रहे।

रामलीला देख दर्शक हुए मंत्रमुग्ध

जगतपुर (रायबरेली) : विकास क्षेत्र के ग्राम लक्ष्मणपुर में आयोजित रामलीला दर्शकों के लिए अत्यंत रोचक और भावनात्मक रहा। रामलीला मंच पर आज शूर्पणखा प्रसंग एवं रावण–शूर्पणखा संवाद का सजीव और प्रभावशाली मंचन किया गया। जिसे देखकर दर्शक मंत्रमुग्ध हो उठे। शूर्पणखा द्वारा प्रभु श्रीराम से विवाह की इच्छा प्रकट करने और माता सीता को कष्ट पहुंचाने के प्रयास पर लक्ष्मण द्वारा उसकी नाक और कान काटे जाने का दृश्य प्रस्तुत किया गया। मुरलीशंकर तिवारी ने अपने ओजस्वी और भावपूर्ण कथन से मंचन को जीवंत बनाए रखा। कलाकार बंटी तिवारी सहित सभी कलाकारों ने सशक्त अभिनय से लोगों का मन मोह लिया। इस अवसर पर धीरेन्द्र सिंह मंजुल, सोनल दुबे, छोटू पाण्डेय, मुदित सिंह, गोलू सिंह, मुन्ना मिश्रा, बृजेश, रामू, अनिल, गुड्डू, भोलू, आयुप आदि मौजूद रहे।

सांसद ने भेजी मृतक के घर राहत सामग्री

अमेठी : मुंशीगंज कोतवाली क्षेत्र के कोरारी लच्छनशाह गांव में संदिग्ध हालात में मजदूर की मौत के बाद उसके परिजनों को अब राहत मिली है। कांग्रेस सांसद किशोरी लाल शर्मा के निर्देश पर मृतक के परिवार को राहत सामग्री और आर्थिक सहायता दी गई। यह सहायता कांग्रेस नेता एवं रेल उपभोक्ता सलाहकार समिति के सदस्य अनुपम पांडे के माध्यम से मृतक के घर पहुंचाई गई। बताया गया कि बीते बुधवार को गांधी इंटर कॉलेज के पास पंचायत द्वारा रखी गई बेंच पर एक व्यक्ति का शव मिला था। बाद में उसकी पहचान विकास खंड भेटुआ की ग्राम पंचायत पीपरपुर अंतर्गत रामापुर गांव निवासी अमरपाल अमरू (42) वर्ष के रूप में हुई। अमरपाल बेहद गरीब थे। न तो उनके पास पक्का मकान था और न ही कोई खेती की जमीन।

20 को बंद होगा पंजीकरण

अमेठी : अमेठी प्रीमियर लीग के आगामी सत्र को लेकर तैयारियां ज़ोरों पर हैं। लीग प्रबंधन द्वारा जानकारी दी गई है कि खिलाड़ियों के लिए जारी पंजीकरण प्रक्रिया 20 दिसंबर को पूरी तरह समाप्त कर दी जाएगी। पंजीकरण को लेकर आसपास के क्षेत्रों के खिलाड़ियों में भारी उत्साह देखने को मिल रहा है। पंजीकरण समाप्त होने के पश्चात पहला चयन ट्रायल 28 एवं 29 तारीख को रायबरेली स्थित नदीम सिद्दीकी क्रिकेट अकादमी में आयोजित किया जाएगा।

ठंड में अलाव जलने से लोगों ने ली राहत की सांस

मामला उठाए जाने के बाद हरकत में आया नगर पंचायत, भीषण ठंड में प्रमुख चौराहों पर जलने लगे अलाव

अमृत विचार IMPACT

संवाददाता, अमेठी

अमृत विचार। लगातार बढ़ रही ठंड और अलाव न जलने को लेकर उठ रही शिकायतों के बाद आखिरकार नगर पंचायत अमेठी हरकत में आ गई। गुरुवार को नगर क्षेत्र के प्रमुख चौक–चौराहों पर अलाव की व्यवस्था कराई गई, जिससे आम लोगों ने राहत की सांस ली। अमेठी बस स्टैंड, अमेठी चौक, आंबेडकर चौराहा और गांधी चौराहा पर अलाव जलते ही लोग ठंड से बचाव करते नजर आए।

17 दिसंबर को प्रकाशित खबर।

स्थानीय लोगों का कहना है कि पिछले कई दिनों से कड़ाके की ठंड पड़ रही थी, लेकिन अलाव न जलने से सुबह और देर शाम सबसे ज्यादा परेशानी हो रही थी। बस स्टैंड पर यात्रियों को बस का इंतजार करते समय ठंड झेलनी पड़ रही थी, वहीं दुकानदारों के लिए भी देर तक दुकान खोलना मुश्किल हो गया था। इस समस्या को लेकर आवाज उठाई गई, हमारी आवाज को अमृत विचार ने प्रमुखता से 17 दिसंबर को खबर प्रकाशित की गई थी जिसके बाद नगर पंचायत हरकत में आकर मौके पर अलाव की व्यवस्था शुरू कराई। पाठकों ने अमृत विचार का आभार जताया और बोले अब से हम लोग अमृत विचार ही पढ़ेंगे। क्योंकि अमृत विचार ही हमारी आवाज को उठाता है।

अंबेडकर तिराहा पर जल रहे अलाव को तापते ग्रामीण। अमृत विचार

वहीं नगर पंचायत अमेठी के ईओ शैलेंद्र मिश्रा ने बताया कि जहां-जहां अलाव की आवश्यकता है, वहां हर जगह अलाव की व्यवस्था करवाई जाएगी। उन्होंने कहा कि ठंड के मौसम में आमजन को किसी भी तरह की दिक्कत न हो, इसके लिए नगर पंचायत पूरी तरह सतर्क है और जनजीवन को सुरक्षित रखना प्राथमिकता है।

ठंड में उठी अलाव जलवाने की मांग

सिंहपुर (अमेठी)। दिसम्बर महीने में घने कोहरे और भीषण ठंड का प्रकोप दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। बढ़ती ठंड से जन जीवन पूरी तरह से अस्त–व्यस्त हो गया है। विकास क्षेत्र के अहोरवा भवानी, सेमरौता, शिवरतनगंज, इन्हौना, फतेहपुर आदि सार्वजनिक स्थलों और चौराहों पर सुबह–शाम अत्यधिक ठंड पड़ने से राहगीरों, यात्रियों एवं स्थानीय दुकानदारों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। करूणेश दीक्षित, सिद्धार्थ मिश्रा, दुर्गेश शुक्ला, पप्पू ओझा, प्रेम ओझा, कृष्ण कुमार ओझा नेता, अभिषेक अग्निहोत्री, जय कांत श्रीवास्तव आदि ने प्रशासन से जनहित में आलाव जलाने की मांग की है।

महिला आयोग की सदस्य ने विद्यालय का किया निरीक्षण

छात्राओं से बातचीत करतीं आयोग की सदस्य डॉ. प्रियंका मौर्या। अमृत विचार

संवाददाता, शुकुल बाजार (अमेठी)

अमृत विचार। उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की सदस्य डॉ. प्रियंका मौर्या ने गुरुवार को एक दिवसीय जनपद भ्रमण के दौरान पहुंचकर कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय, शुकुल बाजार का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं से उनकी पढ़ाई, रहने की व्यवस्था, भोजन एवं अन्य मूलभूत सुविधाओं के संबंध में जानकारी प्राप्त की।

डॉ. मौर्या ने छात्राओं से प्रश्न-उत्तर के माध्यम से उनकी शैक्षणिक स्थिति का आकलन किया, जिस पर छात्राओं द्वारा संतोषजनक उत्तर दिए गए। उन्होंने विद्यालय की सभी कक्षाओं, रसोईघर, छात्रावास तथा पूरे परिसर का गहन निरीक्षण किया। साथ ही भोजन की गुणवत्ता को परखते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए। निरीक्षण के दौरान डॉ. प्रियंका मौर्या ने कहा कि छात्राओं को बेहतर शैक्षिक एवं आवासीय सुविधाएं उपलब्ध कराना शासन की प्राथमिकता है और इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने विद्यालय प्रशासन को निर्देशित किया कि छात्राओं की सुरक्षा, स्वच्छता और पोषण का विशेष ध्यान रखा जाए। इस मौके पर डीसी बालिका श्याम सुन्दर श्रीवास्तव, खण्ड शिक्षा अधिकारी शैलेंद्र शुक्ला आदि लोग उपस्थित रहे।

दरखा में चारागाह की जमीन पर किया जा रहा अवैध खनन

संवाददाता, अमेठी

अमृत विचार। जिले के दरखा गांव में चारागाह की सुरक्षित भूमि पर अवैध खनन का मामला लगातार गंभीर होता जा रहा है। गांव के लोगों के अनुसार प्रधान प्रतिनिधि की मिलीभगत से भूमाफियाओं द्वारा खुलेआम चारागाह की जमीन से मिट्टी की खोदाई कराई जा रही है। हैरानी की बात यह है कि यह अवैध खनन लगातार चौथे दिन भी जारी है, लेकिन जिम्मेदार विभागों की ओर से कोई ठोस कार्रवाई अब तक नहीं की गई है।

ग्रामीणों का कहना है कि चारागाह गांव की सार्वजनिक संपत्ति होती है, जिस पर पशुपालकों का अधिकार होता है। इसी भूमि पर गांव के मवेशी चरते हैं, लेकिन खनन के कारण जमीन गड्ढों में तब्दील होती जा रही है। इससे न सिर्फ मवेशियों को खतरा है, बल्कि गांव के पर्यावरण को भी नुकसान पहुंच रहा है। लोगों का आरोप है कि दिन में जेसीबी और डंपरों से मिट्टी निकाली जाती है और रात के समय ट्रैक्टरों से उसे बाहर भेजा जाता है। फिलहाल गांव के लोग यह देख रहे हैं कि प्रशासन की ओर से कब और कैसी कार्रवाई होती है।

चारागाह पर खनन करती जेसीबी।

वहीं जब उपजिलाधिकारी आशीष सिंह से बात की गई तो उन्होंने कहा कि उन्हें मामले की जानकारी नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि जानकारी लेते हुए तत्काल जांच कराई जाएगी और यदि अवैध खनन पाया गया तो दोषी लोगों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

पिकअप की टक्कर से युवक की मौत

संवाददाता, मुसाफिरखाना (अमेठी)

- **भीखीपुर के पास हुआ हादसा गंभीर रूप से घायल दो महिलाएं जिला अस्पताल रेफर**

अमृत विचार। मुसाफिरखाना कोतवाली क्षेत्र के भीखीपुर के पास तेज रफ्तार पिकअप की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई, जबकि दो महिलाएं गंभीर रूप से घायल हो गईं, जिन्हें रेफर कर दिया गया।

जानकारी के अनुसार दिलीप यादव (30) पुत्र जग प्रसाद निवासी पूरे लक्ष्मन अहीर मजरा कुशबैरा, शाहगढ़, अपनी भाभी सुमन पत्नी राकेश (32) व मां सुशीला पत्नी जग प्रसाद के साथ बाइक से मुसाफिरखाना से घर लौट रहे थे। भीखीपुर के पास सामने से आ रही तेज रफ्तार पिकअप ने बाइक में जोरदार टक्कर मार दी। हादसे के बाद स्थानीय लोगों की सहायता से सभी को सीएचसी मुसाफिरखाना पहुंचाया गया, जहां डॉक्टरों ने दिलीप को मृत घोषित कर दिया।

दिलीप यादव की फाइल फोटो।

गंभीर रूप से घायल सुमन व सुशीला को प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल रेफर किया गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और विधिक कार्रवाई शुरू कर दी।

वहीं कोतवाल विवेक सिंह ने बताया कि अभी किसी प्रकार की तहरीर नहीं मिली है शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है घायल को जिला अस्पताल भेजा गया है।

अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार घायल, तिलोई (अमेठी): कोतवाली मोहनगंज क्षेत्र के अन्तर्गत रायबरेली-फैजाबाद मार्ग पर स्थित मटेरवा चौराहे के निकट एक तेज रफ्तार चार पहिया वाहन ने बाइक सवार को जोरदार टक्कर मार दिया। हादसे के बाद मौके से कार चालक वाहन लेकर फरार हो गया। जिसमें बाइक सवार कृष्ण कुमार सिंह पुत्र सूर्य बख्श सिंह (45) वर्ष निवासी ग्राम भवानीनगर थाना मोहनगंज गंभीर रूप से घायल हो गए। कृष्ण कुमार किसी काम से रायबरेली गये थे, देर शाम को वहां से वापस घर लौट रहे थे कि अचानक मोहनगंज से रायबरेली जा रही एक चार पहिया वाहन ने बाइक सवार को सामने से जोरदार ठोकर मारकर घायल कर दिया। हादसे के चलते स्थानीय लोग दौड़े लेकिन कार चालक वाहन लेकर फरार हो गया। वहीं थानाध्यक्ष राकेश सिंह ने बताया कि अज्ञात वाहन के खिलाफ मुकदमा पंजीकृत कर घायल को मेडिकल हेतु सीएचसी भेज दिया गया है।

निर्माणाधीन जिला कारागार में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं: मंडलायुक्त

अमेठी, अमृत विचार। गुरुवार को मंडलायुक्त अयोध्या मंडल राजेश कुमार ने एक दिवसीय जनपद भ्रमण के दौरान कलेक्ट्रेट सभागार में विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र की निर्वाचक नामावली के विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण की स्थिति को जाना विकास प्राथमिकता योजनाओं और निर्माण कार्यों (सीएम डैशबोर्ड) की समीक्षा बैठक की। इसके साथ ही उन्होंने निर्माणाधीन जिला कारागार का स्थलीय निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा–निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि निर्माणाधीन जिला कारागार में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इस अवसर पर अपर आयुक्त अजय कांत सैनी भी मौजूद रहे। वहीं कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित बैठक में जिलाधिकारी संजय चौहान, अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) अर्पित गुप्ता सहित सभी उपजिलाधिकारियों के साथ मंडलायुक्त ने विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण अभियान की प्रगति की समीक्षा की। उन्होंने निर्देश दिए कि कोई भी पात्र मतदाता सूची में शामिल होने से वंचित न रहे और किसी भी अपात्र का नाम सूची में दर्ज न हो। इसके उपरांत मंडलायुक्त ने निर्माणाधीन जिला कारागार का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने कारागार का मॉडल देखा तथा आवासीय भवनों और बैरकों का गहन अवलोकन किया। इस दौरान पाई गई छोटी–मोटी कमियों को तत्काल दुरुस्त कराने के निर्देश कार्यदायी संस्था को दिए।

सफेद हाथी साबित हो रही पानी की टंकी

समस्या

- **चण्डेरिया में करीब पांच करोड़ की लागत से बनी टंकी से ग्रामीणों को मिल रहा खारा पानी**

विवेक सिंह, संग्रामपुर (अमेठी)

अमृत विचार। जहां सरकार जल जीवन मिशन योजना के तहत हर घर शुद्ध पानी पहुंचाने के लिए जोरशोर से प्रयास कर रही है। वहीं चण्डेरिया गांव में ग्रामीणों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से बनाई गई पानी की टंकी अब ग्रामीणों के लिए परेशानी का कारण बन गई है। करीब पांच करोड़ रुपये की लागत से निर्मित यह टंकी सुविधा देने के बजाय गांव में एक "सफेद हाथी" बनकर खड़ी है।

परेशान ग्रामीणों का कहना है कि टंकी से मिलने वाला पानी अत्यधिक खारा है, जिसे न तो इंसान पी सकता है और न ही पशु। स्थिति यह है कि गाय-भैंस तक इसके पानी को पीते नहीं हैं। वहीं मजबूरी में ग्रामीणों को बाजार से पानी खरीदकर पीना पड़ रहा है। ग्रामीणों ने बताया कि इस पानी की टंकी का निर्माण हेदबी कंस्ट्रक्शन द्वारा कराया गया था। निर्माण कार्य की शुरुआत 27 जून 2023 को हुई थी और लगभग एक वर्ष पहले टंकी बनकर तैयार हो गई, लेकिन विभागीय अधिकारियों की लापरवाही के चलते अब तक शुद्ध पेयजल की आपूर्ति शुरू नहीं हो सकी। ग्रामीणों का कहना है कि टंकी और पाइपलाइन बिछाने के दौरान गांव की सड़कों को जगह-जगह खोद दिया गया, लेकिन आज तक उनकी मरम्मत नहीं कराई गई। कई स्थानों पर पाइपलाइन में लीकेज होने से सड़कों पर हमेशा पानी भरा रहता है, जिससे आवागमन में भी भारी दिक्कतें हो रही हैं। गांव के लोगों ने जिला प्रशासन से पानी की टंकी की मरम्मत करवाने और नलों में आ रहे खारे पानी की समस्या के समाधान की गुहार लगाई है।

क्या बोले जिम्मेदार: इस मामले में अधिशासी अभियंता अनिल राव ने बताया कि मामला संज्ञान में आया है। पानी की गुणवत्ता जांचने वाले के लिए टेक्नीशियन को भेजा जाएगा। पानी की जांच के बाद आगे की कार्यवाही की जाएगी।

चण्डेरिया में बनी पानी की टंकी।

गांव की जनता ने बयां किया दर्द

विनोद मिश्रा पोपट।

गुलाम मोहम्मद।

प्रधान तुफैल खान।

ग्रामीण विनोद मिश्रा पोपट ने कहा कि करोड़ों रुपये खर्च होने के बावजूद ग्रामीणों को कोई लाभ नहीं मिल रहा है। वहीं दिनेश मिश्रा ने बताया कि टंकी से मिलने वाला पानी इतना खारा आता है कि हमारे घरों के पशु भी इसे नहीं पी रहे हैं। उधर, गुलाम मोहम्मद ने आरोप लगाया कि पेयजल व्यवस्था सुधरने के बजाय गांव में टूटी-फूटी सड़कें और गड्ढे ही छोड़ दिए गए हैं। वहीं राय साहब मिश्रा ने मांग की कि पानी की गुणवत्ता जांचने वाले इंजीनियरों और संबंधित अधिकारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए। गुलाम मोहम्मद ने आरोप लगाया कि पेयजल व्यवस्था सुधरने के बजाय गांव में टूटी-फूटी सड़कें और गड्ढे ही छोड़ दिए गए हैं। वहीं राय साहब मिश्रा ने मांग की कि पानी की गुणवत्ता जांचने वाले इंजीनियरों और संबंधित अधिकारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए। इनके साथ गांव के प्रधान तुफैल खान ने कहा कि यह योजना गांव में पूरी तरह से एक "सफेद हाथी" साबित हो रही है।

सिटी डायरी

स्टॉल का अवलोकन करते खण्ड शिक्षाधिकारी वीरेन्द्र नाथ द्विवेदी।

नॉलेज शेयरिंग कार्यक्रम का हुआ आयोजन

सरेनी (रायबरेली)। ब्लॉक संसाधन केंद्र सरेनी में दो दिवसीय नॉलेज शेयरिंग कार्यक्रम का उद्घाटन खण्ड शिक्षाधिकारी वीरेंद्र नाथ द्विवेदी ने मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर किया। कार्यक्रम में 12 संकुल के नवाचारिक शिक्षकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। खण्ड शिक्षाधिकारी ने कहा कि इस कार्यक्रम से शिक्षकों द्वारा विद्यालय स्तर पर किये जा रहे नवाचारी प्रयोगों के प्रदर्शन से शिक्षण प्रक्रिया को और भी प्रभावी बनाने में मदद मिलेगी। उन्होंने संस्कृत के प्रसिद्ध श्लोक व्यये कृते वर्धत एव नित्यं विद्याधनं सर्वधनप्रधानम का भाव बताते हुए शिक्षकों को अपने ज्ञान, नवाचार को सभी के साथ प्रसारित करने हेतु अभिप्रेरित किया। कार्यक्रम में की-रिसोर्स पर्सन डॉ. यज्ञदत्त शुक्ल, आनंद प्रकाश तिवारी, प्रकाश द्विवेदी, सुप्रीत शुक्ल, मंजू, माधुरी सिंह, रत्ना मिश्रा, दीपिका, रमाकांत, आशीष राज, प्रीति, विभा, कीर्ति, पूनम, नेहा रानी रहीं।

कलश यात्रा में शामिल श्रद्धालु।

तहसील में प्रदर्शन करते ग्रामीण।

धूमधाम से निकाली गई कलश यात्रा

महराजगंज (रायबरेली)। क्षेत्र के गंगापुर कुटी स्थित बाबा श्री घिसियावन दास कुटी पर श्री मदभागवत कथा के पहले गुरुवार को श्रीराम लक्ष्मण जानकी की झांकियों सहित सैकड़ों गाडियों के साथ कलश यात्रा निकाली गई। कलश यात्रा में हजारों श्रद्धालु शामिल रहे। कलश यात्रा का शुभारंभ गंगापुर कुटी से गाजीराय का पुरवा होते हुए खेखरूवा गांव स्थित ब्रह्मलीन महंत श्रीश्री 108 राम प्रताप दास के जन्म स्थली से होते हुए बारी गोहन्ना, इंद्राही, कड़रिया होते हुए गंगापुर कुटी पहुंची। कुटी के महंत बाबा रामवचन दास महाराज ने बताया कि सप्त दिवसीय भागवत कथा 24 दिसंबर तक चलेगी। कथावाचक पंडित वेदप्रकाश दीक्षित कथा प्रवचन करेंगे। राजकुमारी सिंह, भानुप्रताप सिंह, मनोज कुमार सिंह, हीरा सिंह, निर्भय सिंह, सुंदरम त्रिवेदी, पन्ना सिंह, रामसजीवन शास्त्री, रितेश रहे।

फर्जी रिपोर्ट लगाने का आरोप

अमेठी, अमृत विचार। तहसील क्षेत्र के सरैया दुबान गांव में चकमार्ग संख्या 649 के चिन्हांकन को लेकर विवाद गहरा गया है। ग्रामीणों ने क्षेत्रीय लेखपाल पर कार्य के प्रति लापरवाही और उच्चाधिकारियों को गुमराह करने का गंभीर आरोप लगाया है। ग्रामीणों का कहना है कि चकमार्ग के सही चिन्हांकन के लिए उन्होंने मुख्यमंत्री हेल्पलाइन पर शिकायत दर्ज कराई थी। ग्रामीणों का आरोप है कि लेखपाल ने धरातल पर आए बिना और ग्रामीणों को सूचित किए बिना ही एक फोटो संलग्न कर रिपोर्ट लगा दी, जिसमें चकमार्ग का चिन्हांकन पूर्ण होना दर्शाया गया है। ग्रामीणों ने इस कार्यप्रणाली पर कड़ा ऐतराज जताया है।

आयोजन | **विजिट के दौरान शिक्षकों ने बच्चों को दी महत्वपूर्ण जानकारी**

शैक्षिक भ्रमण में 50 दिव्यांग बच्चों ने उठाया आनंद

संवाददाता, रायबरेली

अमृत विचार। विकासखंड राही, अमावां, हरचंदपुर, जगतपुर के दिव्यांगता से ग्रसित 50 दिव्यांग बच्चों की एक्सपोज़र विज़िट का आयोजन किया गया।बीएसए के दिशा निर्देशन में आयोजित एक्सपोज़र विज़िट में बच्चों को लखनऊ के चिड़ियाघर का भृमण कराया गया, जिसका बच्चों ने खूब आनंद उठाया।

विजिट के लिए बस को खण्ड शिक्षा अधिकारी मुख्यालय धर्म प्रकाश ने ब्लॉक संसाधन केंद्र से झंडी दिखाकर रवाना किया। विशेष शिक्षक नरेश सक्सेना, मल्लिका सक्सेना, राजेश शुक्ला, अभय प्रकाश श्रीवास्तव, मीना वर्मा, मनीष कुमार ने बच्चों को महत्वपूर्ण जानकारी दी। अनूप मौर्या, विजय यादव, जयदेव शुक्ला, पप्पू, सोहनलाल, पूनम, प्रिया, रुबीना आदि मौजूद रहे।

लखनऊ में शैक्षिक भ्रमण करते स्कूली बच्चे। अमृत विचार

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता में विजेता खिलाड़ी।

विवेकानंद हाउस बना ओवरआल चैंपियन, रायबरेली: डा. रिज़वी मेमोरियल पब्लिक स्कूल की चार दिवसीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का समापन हो गया। विजेता खिलाड़ियों को मुख्य अतिथि संतलाल (लालगंज ब्लाक व्यायाम शिक्षक) ने पुरस्कृत किया। सभी खेलों मे विवेकानंद हाउस ओवरऑल चैंपियन रहा। दूसरे स्थान पर सुभाष हाउस रहा। प्राइमरी 100 मीटर दौड़ बालक वर्ग में अब्दुल रहमान, कोनेन, अबू हुरैरा, बालिका वर्ग में सनाया, साहिदा, आफरीन, 200 मीटर बालिका में इल्तिजा, ईशल, मैनाज, बालक मे दानिश, राशिद, सय्यद क्रमशः पहले, दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे। जूनियर वर्ग बालक 100 मीटर में जीशान, भूपेंद्र, हुजैफ, बालिका खुशी, तस्फिया, जैनब, बालक में ताहा, आयुष, भूपेंद्र क्रमशः पहले, दूसरे, तीसरे स्थान पर रहे। बालिका वर्ग में आरजू प्रथम, हाजिक रिजा द्वितीय, जोया तृतीय स्थान पर रहे। इस मौके पर पूर्व व्यायाम शिक्षक सरेनी एपी सिंह, अभिषेक सिंह, प्रबंधक डॉ अताउर रहमान, पुष्पेंद्र कुमार, राजू, मो अनीश आदि लोग मौजूद रहे।

सरकार के खिलाफ कांग्रेस ने किया प्रदर्शन

कलेक्ट्रेट में प्रदर्शन करते कांग्रेस कार्यकर्ता। अमृत विचार

रायबरेली। केंद्र सरकार के खिलाफ कांग्रेसियों ने मोर्चा खोल दिया। कलेक्ट्रेट में जोरदार प्रदर्शन करते हुए राष्ट्रपति को संबोधित ज्ञापन डीएम को सौंपा। कहा कि जिला और शहर कांग्रेस कमेटी द्वारा नेशनल हेराल्ड प्रकरण में सांसद सोनिया गांधी, राहुल गांधी पर ईडी एवं सीबीआई का दुरूपयोग करते हुए पिछले 10 वर्षों से मोदी सरकार झूठा आरोप लगा रही है। इस दौरान कांग्रेस जिलाध्यक्ष पंकज तिवारी व कांग्रेस प्रवक्ता प्रवक्ता महताब आलम समेत सैकड़ों कांग्रेस कार्यकर्ता मौजूद रहे।

अमृत विचार

शुक्रवार, 19 दिसंबर 2025

संघर्ष से मुझमें आत्मविश्वास पैदा हुआ, जो पहले मुझमें नहीं था।

–सुभाष चंद्र बोस

सुधार का विस्तार हो

दिल्ली-एनसीआर की दमघोंटू हवा पर न्यायालय की सक्रियता और उसके निर्देशों का स्वागत है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि प्रदूषण हर साल दोहराई जाने वाली समस्या बन चुकी है। इसे काबू करने के लिए तत्काल जरूरी उपायों के अलावा वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग दीर्घकालिक उपायों की रणनीति की समीक्षा कर उसे अभी से मजबूत करे, ताकि अगले वर्ष ऐसी स्थिति न आए। सवाल यह नहीं कि अदालती आदेश के बाद दिल्ली की हवा सुधरेगी या नहीं; बड़ा प्रश्न यह है कि क्या यह सुधार टिकाऊ होगा और क्या इसका दायरा दिल्ली से आगे बढ़ेगा? क्योंकि महज दिल्ली ही देश नहीं है। देश के दर्जनों शहर- कानपुर, लखनऊ, पटना, गुरुग्राम, फरीदाबाद, गाजियाबाद की हवा दिल्ली से कम विषैली नहीं। इन शहरों के लिए अदालत कब विचार करेगी और सरकारें कब चेतेंगी?

हवा को शुद्ध करने से पहले उसकी अशुद्धि मापना अनिवार्य है। देश के लगभग 50 प्रतिशत शहरों में पीएम 2.5 का मापन ही नहीं होता। 64 प्रतिशत जिले मॉनिटरिंग नेटवर्क से बाहर हैं। महानगरों में भी 22 से 55 प्रतिशत शहरी इलाके कवरेज से बाहर हैं और मात्र 2 प्रतिशत आबादी ही किसी मॉनिटरिंग स्टेशन के दो किलोमीटर के दायरे में रहती है। जब देश का दो प्रतिशत से भी कम हिस्सा सीधे मॉनिटरिंग कवरेज में हो और 10 किलोमीटर त्रिज्या जोड़ने पर भी यह हिस्सा दस प्रतिशत तक पहुंचे तो इतने कम सैंपल से राष्ट्रीय वायु गुणवत्ता का आकलन कैसे विश्वसनीय होगा? 289 शहरों के मैनुअल मॉनिटरिंग स्टेशन सप्ताह में केवल दो बार एयर सैंपल लेते हैं। यह तकनीकी अक्षमता नीतिगत अंधेपन को जन्म देती है। मैनुअल स्टेशनों को स्वचालित, रियल-टाइम सेंसर में बदले बिना और डेटा की गुणवत्ता सुनिश्चित किए बिना न चेतावनी समय पर जा सकती है, न उपचार सटीक होगा। आज स्थिति यह है कि देश की केवल 15 प्रतिशत आबादी ही रियल-टाइम मॉनिटरिंग के 10 किलोमीटर दायरे में है। इस कवरेज को 50 प्रतिशत तक ले जाने के लिए हजारों नए स्टेशन चाहिए और इसके लिए स्पष्ट टाइमलाइन, बजट और जवाबदेही तय करनी होगी। इस अक्षमता के चलते 85 प्रतिशत शहर समय पर एयर-क्वालिटी अलर्ट जारी करने में अक्षम हैं। इसके लिए डेटा इंटीग्रेशन, नगर-स्तरीय कंट्रोल रूम, स्कूलों-अस्पतालों के लिए प्रोटोकॉल और मोबाइल-आधारित चेतावनी प्रणालियां जरूरी हैं। उतना ही जरूरी है मॉनिटरिंग स्टेशनों का नियमित ऑडिट। क्या वे तय मानक प्रोटोकॉल पर काम कर रहे हैं, सेंसर कैलिब्रेट हैं या नहीं, यह पारदर्शी ढंग से सार्वजनिक किया जाए।

प्रदूषण नियंत्रण की जिम्मेदारी महज पर्यावरण मंत्रालय पर छोड़ कर वाणिज्य, ऊर्जा, स्वास्थ्य, उद्योग, रेलवे, शिक्षा और शहरी विकास मंत्रालयों की भी स्पष्ट भूमिकाएं तय होनी चाहिए। प्रदूषण कोई स्थानीय आपदा नहीं, यह राष्ट्रीय स्वास्थ्य आपातकाल है। इसे केवल न्यायालयों के भरोसे छोड़ना शासन की विफलता मानी जाएगी। अतीत गवाह है, सुप्रीम कोर्ट या उच्च न्यायालयों की फटकार से कुछ तात्कालिक कदम उठते हैं, पर जड़ में जाकर समस्या सुलझाने की राजनीतिक-प्रशासनिक इच्छाशक्ति अक्सर कमजोर पड़ जाती है।

प्रसंगवश

'रख दे कोई जरा सी खाके वतन कफन में'

19 दिसंबर 1927 को आज के ही दिन काकोरी कांड के अमर क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां एवं ठाकुर रोशन सिंह हंसते-हंसते फांसी के फंदे पर झूल गए। उनकी इस शहादत ने नौजवानों के दिलों में आजादी की ज्वाला को भड़का दिया। अंग्रेज सरकार के खिलाफ पूरे देश में गहरा आक्रोश फैल गया। नौजवान सिर पर कफन बांधकर जंगे आजादी में कूद पड़े।

देश की पराधीनता के दिन थे। भारत माता परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ी हुईं थीं। अंग्रेज शासकों के देश की जनता पर दमन एवं अत्याचार दिन-प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे थे। पूरे देश में लोगों के दिलों में आजादी की आग सुलग रही थी। देश की आजादी के लिए नौजवानों ने सशक्त क्रांति का मार्ग अपनाया। सशस्त्र क्रांति के लिए हथियारों की जरूरत थी। हथियार खरीदने के लिए धन कहां से जुटाया जाए? यह समस्या क्रांतिकारियों के सामने मुंह बाए खड़ी थी। काफी विचार-विमर्श के बाद क्रांतिकारियों ने सरकारी खजाने को लूटने का निर्णय लिया।

सुरेश बाबू मिश्रा

लेखक

प्रखर, क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद के नेतृत्व में इस खजाने को लूटने की योजना बनाई गई। अमर क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल, ठाकुर रोशन सिंह, अशफाक उल्ला खां, राजेंद्र लाहिड़ी इस योजना में शामिल थे। योजना के अनुसार सहारनपुर से लखनऊ जाने वाली पैसेंजर ट्रेन के द्वितीय श्रेणी के डिब्बे में कुछ नौजवान क्रांतिकारी यात्रियों के रूप में सवार हुए। जैसे ही ट्रेन काकोरी स्टेशन से आगे बढ़ी क्रांतिकारियों ने चैन पुलिंग कर ट्रेन को रोक लिया। उस स्थान पर कुछ सशस्त्र क्रांतिकारी नौजवान पहले से ही खड़े थे। यह घटना नौ अगस्त 1925 में काकोरी स्टेशन के पास घटी, इसलिए इतिहास में इसे काकोरी कांड के नाम से जाना जाता है।

क्रांतिकारियों की इस दुःसाहसिक वारदात को देखकर अंग्रेज दंग रह गए। अंग्रेज शासकों का दमन चक्र तेज हो गया। देशभर में क्रांतिकारियों की धर पकड़ तेज हो गई। रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, रोशन सिंह और राजेंद्र लाहिड़ी सहित 22 नौजवान क्रांतिकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया। इन्हें अलग-अलग जेलों में कैद कर उनके खिलाफ सरकारी खजाने की लूट सहित विभिन्न धाराओं में मुकदमा चलाया गया। 18 महीने तक चले मुकदमे के बाद राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, रोशन सिंह और राजेंद्र लाहिड़ी को फांसी की सजा सुनाई गई। शेष क्रांतिकारियों को आजन्म कारावास की सजा मिली।

19 दिसंबर सन 1927 को राम प्रसाद बिस्मिल को गोरखपुर जेल में फांसी दी गई। फांसी के तख्ते पर खड़े होकर उन्होंने एक शेर पढ़ा, "अब न अहले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़, एक मिट जाने की हसरत अब दिले बिस्मिल में है।" अशफाक उल्ला खां को फैजाबाद जिले में फांसी पर लटकाया गया। फांसी का फंदा चूमने से पहले उन्होंने यह शेर कहा, "कुछ आरजू नहीं है, है आरजू तो यह है, रख दे कोई जरा-सी, खाके-वतन कफन में।" फिर भारत माता की जय का नारा लगाते हुए वे फांसी के तख्ते पर झूल गए। ठाकुर रोशन सिंह को इलाहाबाद जेल में 19 दिसंबर को फांसी दी गई। जैसे ही जेलर का बुलावा आया, वे हाथ में गीता पकड़े मुस्कराते हुए चल दिए। फांसी के तख्ते पर चढ़ते ही उन्होंने 'वंदे मातरम्' का उद्घोष किया और शहीद हो गए। चौथे नौजवान क्रांतिकारी राजेंद्र लाहिड़ी को तेजी से बढ़ रहे जनाक्रोश से भयभीत अंग्रेज अफसरों ने गोंडा जेल में घोषित तिथि से दो दिन पहले ही फांसी दे दी। फांसी को फंदे को चूमने से पूर्व उन्होंने वंदे मातरम् का जयघोष किया। फिर उन्होंने मुस्कराते हुए फांसी का फंदा गले में डाल लिया।

अब मनरेगा पर मचा सियासी घमासान

विवेक सक्सेना

अयोध्या

मोदी सरकार ने महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) का नाम और कई प्रावधान बदले हैं। इससे संसद में बवाल मच गया है। मनरेगा का नया नाम विकसित भारत गारंटी फॉर रोजगार एंड अजीविका मिशन (ग्रामीण) अर्थात वीबी-जी रामजी कर देने से विपक्ष हमलावर है। शुरुआत में इस योजना का नाम नेशनल रूरल एंप्लायमेंट गारंटी एक्ट (नरेगा) था। वर्ष 2009 में यूपीए सरकार ने इसमें बदलाव किया और महात्मा गांधी का नाम जोड़ा।

इसके बाद यह महात्मा गांधी नेशनल रूरल एंप्लायमेंट गारंटी एक्ट (मनरेगा) कहलाने लगी। दोनों एक ही योजना हैं और नाम बदलने का उद्देश्य गांधीजी के ग्राम स्वराज के विचारों से इसे जोड़ना था। आजकल लोग इसे आमतौर पर मनरेगा ही कहते हैं। यह योजना साल 2005 में यूपीए सरकार के दौरान तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की अगुवाई में शुरू हुई। उस समय गांवों में काम की कमी के कारण लोग शहरों की ओर पलायन कर रहे थे।

इस योजना का उद्देश्य गांवों में गरीबी कम करना, बेरोजगारी दूर करना और लोगों को गांव में ही सम्मानजनक काम और कमाई देना था। पहले की कई योजनाओं, जैसे- जवाहर रोजगार योजना और संपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना को मिलाकर इसे नया और मजबूत रूप दिया गया था। गांवों में रहने वाले जरूरतमंद और मेहनतकश परिवारों के लिए मनरेगा एक ऐसी सरकारी योजना है, जो जीवन का सहारा बन चुकी है। यह योजना ग्रामीण इलाकों में बेरोजगारी और गरीबी से लड़ने का सबसे मजबूत हथियार है।

दुनिया की सबसे बड़ी रोजगार गारंटी योजना के रूप में जानी जाने वाली मनरेगा लाखों लोगों को साल भर में काम और कमाई का भरोसा देती है। यह न केवल रोजगार उपलब्ध कराती है, बल्कि गांवों का विकास भी करती है। अब केंद्र सरकार इस योजना का नाम बदलने जा रही है। अब इसको शॉर्ट में जी राम जी कहा जा रहा है, जिसको लेकर बवाल मचा है। सरकार का तर्क है कि इससे खेती और ग्रामीण अर्थव्यवस्था दोनों को संतुलित तरीके से मजबूती मिलेगी। रोजगार गारंटी 100 से बढ़ाकर 125 दिन करने का भी प्रावधान है। ग्रामीण परिवारों को 125 दिन का रोजगार मिलेगा, लेकिन राज्यों को खर्च का 10-40% वहन करना होगा। फसल के मौसम में काम नहीं मिलेगा, जिससे कृषि कार्यों में मजदूरों की कमी न हो।

केंद्र सरकार ने ग्रामीण रोजगार व्यवस्था को नए सांचे में ढालने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। सरकार का दावा है कि यह बिल 'विकसित भारत 2047' के राष्ट्रीय विजन के अनुरूप ग्रामीण रोजगार और आजीविका को मजबूत करेगा। नए बिल में यह भी प्रस्ताव है कि बुवाई और कटाई के मौसम के करीब 60 दिनों में इस योजना के तहत काम नहीं दिया जाएगा, ताकि कृषि कार्यों के दौरान मजदूरों की कमी न हो। वहीं इस बदलाव पर सियासी बहस तेज हो गई है।

बीजेपी सांसद दिनेश शर्मा ने कहा कि 'राम' शब्द पर विपक्ष का विरोध उनकी सोच दर्शाता है। योजना में सुधार जैसे ग्राम पंचायत योजनाओं को पीएम गति शक्ति से जोड़ना, जल संरक्षण पर जोर, बुआई-कटाई में काम रोकना और बायोमेट्रिक सत्यापन से फर्जीवाड़ा रुकना ग्रामीण आय व इंफ्रास्ट्रक्चर मजबूत करेगा। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बल मिलेगा और मजदूरों को अधिक रोजगार उपलब्ध होगा।

विपक्ष ने इस बिल को लेकर सरकार पर तीखा हमला बोला है। विपक्ष का कहना है कि इससे राज्यों पर आर्थिक बोझ बढ़ेगा और गरीबों का नुकसान होगा। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने कहा कि यह कानून मनरेगा को केंद्र के नियंत्रण का औजार बना देगा। बजट और नियम केंद्र तय करेगा, जबकि राज्यों पर अतिरिक्त बोझ डाला जाएगा। राहुल ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी को यह योजना हमेशा खटकती रही और 10 सालों से इसे कमजोर करने की कोशिश करते रहे हैं। आज वो मनरेगा का नामो-निशान मिटाने पर आमादा हैं।

कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी ने सरकार पर योजनाओं के नाम बदलने की 'सनक' का आरोप लगाया। समाजवादी पार्टी के सांसद अखिलेश यादव ने कहा कि नाम बदलने से जमीनी हकीकत नहीं बदलेगी, बल्कि राज्यों के सामने आर्थिक संकट खड़ा होगा। बिहार में भी इस बिल को लेकर सियासत गर्म है। राजद प्रवक्ता चितरंजन गगन ने कहा कि केंद्र सरकार का कोई नया विजन नहीं है और वह यूपीए काल की योजनाओं का नाम बदलकर अपनी उपलब्धि बता रही है।

केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने विपक्ष के आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि महात्मा गांधी केवल एक नाम नहीं, बल्कि प्रेरणा हैं। बापू रामराज की स्थापना की बात कहते थे। पता नहीं 'विकसित भारत- जी राम जी' के नाम पर विपक्ष क्यों भड़क गया। उनका संकल्प था कि सबसे अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति का कल्याण हो। उन्होंने दावा किया कि यह बिल गरीबों के सम्मान और गांधीजी के सपनों को साकार करने की दिशा में बड़ा कदम है।

यह भी उल्लेखनीय है कि मजदूरी के दिवस बढ़ाने के साथ राज्यों को वर्ष में 60 दिन काम रोकने का अधिकार दिया गया है। इसकी मांग भी होती थी। सरकार इस अधिनियम में बदलाव के जरिए ग्रामीण विकास को एक ऐसी दिशा देना चाहती है, जिससे विकसित भारत के लक्ष्य को आसानी से हासिल किया जा सके। उचित यह होगा कि संसद में इस विधेयक के गुण-दोष के आधार पर व्यापक बहस हो, जिससे कि इस अधिनियम को कहीं प्रभावी रूप दिया जा सके। सुधार की पहल के अतिरंजित विरोध से बचा जाना चाहिए।

मोदी सरकार ने मनरेगा का नाम और कई प्रावधान बदले हैं। नया नाम विकसित भारत गारंटी फॉर रोजगार एंड अजीविका मिशन (ग्रामीण) अर्थात वीबी-जी रामजी कर देने से विपक्ष हमलावर है।

आमने

अधिकारियों का काम था कि फोटो से सत्यापित करके लाते। उन (नीतीश कुमार) के दिमाग में रहा होगा कि वही हैं या कोई अलग हैं, इसलिए हिजाब हटा दिया होगा। इसे अलग तरह से नहीं लेना चाहिए। नकाब पर आप लोग इतना कह रहे हैं। कहीं चेहरा-वेहरा छू लेते तब क्या करते आप लोग?

–संजय निषाद

मंत्री, उत्तर प्रदेश

सामने

ये इनकी महिला विरोधी सोच को दिखाता है। एक गलत काम को सही साबित करने के लिए एक महिला की इज्जत को, उसके सम्मान को दरकिनार किया जा रहा है। चाहे वो बीजेपी हो या बीजेपी के सहयोगी दल। उत्तर से लेकर दक्षिण तक, ये सब महिला विरोधी मानसिकता वाले लोग हैं।

–प्रियंका चतुर्वेदी

नेता, शिवसेना (यूबीटी)

2025 के तीन बड़े आर्थिक सुधार और उम्मीदें

प्रो. एचसी पुरोहित

दून विश्वविद्यालय

2025 भारत में तीन बड़े आर्थिक सुधारों के लिए याद किया जाएगा, क्योंकि इन सुधारों से अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाई मिलेगी। इसमें आयकर स्लैब का बदलाव, जीएसटी दरों में कटौती तथा देश की श्रम शक्ति को समर्पित लंबे अंतराल के बाद श्रम कानून में सुधार की तीन श्रम संहिताएं प्रमुख हैं। इन सुधारों का असर दिखना शुरू हो गया है। आज विश्व में तकनीकी क्षेत्र की प्रमुख टेक कंपनियां भारत में निवेश के लिए आकर्षित हो रही हैं। हाल के वर्षों में गूगल, माइक्रोसॉफ्ट और अमेज़न जैसी दिग्गज कंपनियों ने भारत में कई अरब डॉलर निवेश की परियोजनाएं प्रारंभ करने की दिशा में कदम बढ़ाया है। यह निवेश तकनीकी नवाचार को प्रोत्साहित करने, विनिर्माण को गतिशील बनाने के साथ ही रोजगार सृजन का बड़ा माध्यम बनेगा।

निवेशकों का यह उत्साह वैश्विक स्तर पर भारत की राजनीतिक एवं आर्थिक स्थिरता तथा अन्य देशों की तुलना में अधिक विश्वसनीयता को समझा जा सकता है। तकनीकी क्षेत्र की इन तीन कंपनियों द्वारा भारत में तेजी से उभरते डिजिटल बाजार में निवेश की योजना, भारत की विकासोन्मुखी और निवेश-अनुकूल नीति को भी प्रदर्शित करती है। तकनीकी परियोजनाओं की स्थापना से रोजगार सृजन के साथ-साथ एआई, क्लाउड, मशीन लर्निंग, डेटा प्रोसेसिंग-प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में युवाओं को तकनीकी कौशल प्राप्त करने के अवसर उपलब्ध होंगे, जो औद्योगिक एवं वाणिज्यिक गतिविधियों के सुचारु संचालन में सहायक होंगे। देश में डिजिटल केंद्रों के विस्तार से नागरिक सेवाओं का विस्तार और उनका सुचारु संचालन संभव होगा। विशेष तौर पर कृषि एवं औद्योगिक उत्पादन, आपूर्ति श्रृंखला, स्वास्थ्य, ट्रैफिक, बैंकिंग, शिक्षा, बीमा इत्यादि सेवाओं के संचालन को एआई की मदद से गति मिलेगी, जिससे आर्थिक अर्थव्यवस्था की रफ्तार बढ़ना तय है।

भारत के उपभोक्ता वैश्विक आशावाद में सबसे आगे हैं, जैसा कि बीसीजी ग्लोबल कंज्यूमर रडार की रिपोर्ट से स्पष्ट है कि ऑटोमोबाइल और मोबाइल जैसी वस्तुओं के क्रय में उनका खर्च करने का इरादा है। रिपोर्ट से यह भी स्पष्ट है कि 62% भारतीय उपभोक्ता दैनिक जीवन की खरीदारी के लिए जेनरेटिव एआई (Generative AI) टूल का उपयोग कर रहे हैं, इस कारण भारत उपभोग के लिए एआई अपनाने में वैश्विक स्तर पर अग्रणी देश बन गया है।

भारत के उपभोक्ताओं का तकनीक के प्रति विश्वास और खर्च करने का इरादा भारत के घरेलू उपभोग चक्र में महत्वपूर्ण वृद्धि ला रहा है। इससे ऑटोमोबाइल, मोबाइल उपकरण और खुदरा क्षेत्रों को लाभ होने की संभावना है। उपभोक्ताओं की इस प्रवृत्ति का लाभ उठाने में वे ब्रांड या कंपनियां सर्वोत्तम स्थिति में होंगे, जो तकनीकी मदद से वस्तुओं का क्रय-विक्रय कर रहे हैं। भारतीय उपभोक्ताओं का तकनीक के प्रति यह लचीलापन देश का एक मजबूत आर्थिक आधार एवं पारदर्शी तंत्र का संदेश देता है।

हाल ही में एशियाई विकास बैंक (एडीबी) द्वारा जारी अनुमानों के अनुसार भारत की विकास दर 6.5 प्रतिशत से बढ़कर 7.2 प्रतिशत रहने की संभावना है। एडीबी की रिपोर्ट से पूर्व फिच और आरबीआई ने भी भारत की विकास को तेज गति से बढ़ने का पूर्वानुमान किया है। इसका प्रमुख कारण भारत की दीर्घकालीन सुधारवादी नीतियां हैं, जिनके कारण विनिर्माण क्षेत्र में लगातार वृद्धि देखी जा रही है। साथ ही सेवा क्षेत्र का प्रदर्शन भी निरंतर सुधर रहा है, जो अर्थव्यवस्था के प्रदर्शन को गतिशील बनाए रखने में सहायक हो रहा है।

इस वर्ष हुए तीन बड़े सुधारों का आर्थिक मोर्चे पर प्रभाव आने वाले समय में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। साथ ही विनिर्माण क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआई) के जारी रहने से घरेलू विनिर्माण क्षेत्र को लगातार गति मिल रही है और इस योजना का असर पिछले कुछ वर्षों के निर्यात में भी दिखा है। अमेरिका द्वारा टैरिफ दर बढ़ने के बावजूद भी भारत का निर्यात 19.3 फीसदी बढ़कर छह माह के उच्चतम स्तर 38.13 अरब डॉलर पर पहुंचा है और व्यापार घाटा पांच माह के निचले स्तर पर 24.53 अरब डॉलर पर पहुंचा है, जबकि आयात 1.88 फीसदी घटकर 62.66 अरब डॉलर रह गया है। विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि और आर्थिक सुधारों से बेरोजगारी दर अप्रैल माह के बाद घटकर नवंबर में 4.7 फीसदी रह गई है, जैसा कि राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के सर्वे इंगित कर रहे हैं।

अर्थव्यवस्था कि यह वृद्धि सिर्फ शहरी क्षेत्रों तक सीमित नहीं है, इसका ग्रामीण इलाकों में भी व्यापक प्रभाव दिख रहा है। ग्रामीण क्षेत्र के उपभोक्ताओं की भी क्रय शक्ति में खासा इजाफा हो रहा है, जैसा कि नाबार्ड के आठवें ग्रामीण आर्थिक स्थिति एवं मत सर्वेक्षण (आरईसीएसएस) इशारा कर रहे हैं कि पिछले एक वर्ष में ग्रामीण क्षेत्रों में मांग में उल्लेखनीय सुधार, आय में बढ़ोतरी और जीवन स्तर में बेहतर बदलाव के स्पष्ट संकेत मिले हैं। नाबार्ड के अध्ययन से पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष खपत की रफ्तार तेज रही है और इसके और बढ़ने की उम्मीद है।

2025 भारत में तीन बड़े आर्थिक सुधारों के लिए याद किया जाएगा। इसमें आयकर स्लैब का बदलाव, जीएसटी दरों में कटौती तथा श्रम कानून में सुधार प्रमुख हैं। इन सुधारों से अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाई मिलने की उम्मीद है।

सोशल फोरम

कला के दो दिग्गज भाई बलराज और भीष्म

रंजन शर्मा

रिटायर ऑफिसर

बलराज साहनी और भीष्म साहनी : दो भाई, दो दिग्गज। कुछ रिश्ते सिर्फ खून के नहीं होते, वो इतिहास रचते हैं। बलराज साहनी और भीष्म साहनी ऐसे ही दो नाम हैं, जिन्होंने भारतीय सिनेमा और साहित्य को एक नई दिशा दी। बलराज साहनी, भारतीय सिनेमा के सबसे सशक्त और सहज अभिनेताओं में से एक थे। 'दो बीघा जमीन' का संघर्षशील किसान हो या 'काबुलीवाला' की इंसानियत, या 'वक्त' का ज़िम्मेदार पिता- उन्होंने हर किरदार को जीवन से भर दिया। उनकी आखिरी फिल्म 'गर्म हवा' आज भी विभाजन की त्रासदी को सबसे मार्मिक ढंग से दिखाती है। वे केवल एक अभिनेता नहीं, बल्कि एक चिंतक, लेखक और समाज के लिए आवाज़ उठाने वाले इंसान थे।

भीष्म साहनी, छोटे भाई, लेकिन साहित्य की दुनिया के विशाल स्तंभ। उपन्यास 'तमस' ने जैसे भारत के बंटवारे की पीड़ा को शब्दों में उकेर दिया। उन्होंने आम आदमी की कहानियों को गहराई और सच्चाई के साथ कहा। सिर्फ लेखक नहीं, मंच और फ़िल्मों के भी उम्दा कलाकार थे। 'मोहन जोशी हाज़िर हों!' और 'मिस्टर एंड मिसेज अय्यर' जैसी फिल्मों में उनका अभिनय भी यादगार रहा।

एक ने परदे पर कहानियां जीवंत कीं, तो दूसरे ने काग़ज़ पर, लेकिन दोनों के दिलों में एक ही आग थी- सच्चाई को सामने लाने की, समाज को जगाने की। इन दो महान आत्माओं की विरासत हमें आज भी प्रेरणा देती है। यही सच्ची कला की ताक़त है।

सामयिकी

युद्ध में आम इंसानों को निशाना बनाने पर चिंता

मौजूदा दौर में समूची दुनिया में लगातार गहराती हिंसा, युद्ध, जातीय संघर्ष और धार्मिक उन्माद चिंता का विषय बने हुए हैं। कई देशों में आम नागरिक सीधे निशाने पर हैं, कहीं घर उजड़ रहे हैं और कहीं सत्ता के संघर्ष में निर्दोष लोग बलि चढ़ रहे हैं। इस वैश्विक चिंता के दौर में हाल ही में जनसंहार की रोकथाम का जिम्मा संभालने के लिए संयुक्त राष्ट्र में नव नियुक्त सलाहकार चलोका बेयानी ने पूरी दुनिया को आगाह करते हुए कहा कि अनेक देशों में टकरावों और युद्धों के दौरान आम लोगों को जानबूझ कर निशाना बनाए जाने की प्रवृत्ति बढ़ रही है, जिससे अत्याचार और गंभीर मानवाधिकार अपराधों का जोखिम तीव्र गति से बढ़ा है। उन्होंने नौ दिसंबर को जनसंहार के भुक्तभोगियों की समृति व गरिमा और इस अपराध की रोकथाम के अंतर्राष्ट्रीय दिवस के अवसर पर इस बात पर भी चिंता जताई है कि अंतर्राष्ट्रीय कानूनों के प्रति सम्मान में आ रही गिरावट एक बेहद खतरनाक संकेत है।

अमरपाल सिंह वर्मा

वरिष्ठ पत्रकार

बेयानी की यह चेतावनी एक ओर जहां समस्या की गंभीरता को दर्शाने वाली है, वहीं पूरी मानवता के सामने संकट को व्यापक रूप में प्रस्तुत करती है। इसी के साथ यह तथ्य भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि भारत को लेकर विश्व के किसी भी मंच पर इस प्रकार की कोई आशंका व्यक्त नहीं की गई है। इस बात पर हर देशवासी को गर्व होना चाहिए कि समूचा विश्व आज भी भारत को एक ऐसे देश के रूप में देखता है, जहां विविध संस्कृतियों, भाषाओं, खान-पान, जाति-धर्मों के बावजूद परस्पर सहयोग, शांति, समन्वय और लोकतांत्रिक संतुलन कायम है।

दुनिया में हमारा देश ही ऐसा है, जहां सैकड़ों भाषाएं, अनेक धर्म, दर्जनों जातियां और अनगिनत सांस्कृतिक धाराएं एक साथ बहती चली आ रही हैं। अनेक विविधताओं के बावजूद हमारा समाज आज भी सहअस्तित्व, भाईचारे और सहयोग की भावना को अपने में समेटे हुए है। हमारे गांवों से लेकर शहरों तक, सबका अलग पहनावा है। अलग बोली है। अपने-अपने त्योहार हैं। अलग खान-पान है, फिर भी सब एकजुटता से परिवार, समाज और देश को आगे बढ़ाने में जुटे हुए हैं। इसी मजबूत आधार पर देश खड़ा है और यह संदेश देता प्रतीत होता है कि अगर दृढ़ इच्छा हो तो विविधता को भी सबसे बड़ी ताकत बनाया जा सकता है।

इस बात को स्वीकारना होगा कि बीते कुछ सालों में देश के कुछ हिस्सों से हिंसा और सामाजिक तनाव की चंद घटनाएं सामने आई हैं। कहीं भीड़ के हाथों किसी की जान गई है। कहीं धार्मिक पहचान को लेकर आंशिक टकराव की स्थिति बनी है। कहीं उत्तेजक बयान देने वालों ने सामाजिक एकता में विष घोलने का प्रयास किया है, मगर ऐसी घटनाओं की संख्या, उनका प्रभाव और उनके फैलाव को हम भारत की विशाल जनसंख्या और व्यापक सामाजिक ढांचे के संदर्भ में देखें तो यह कोई बड़ी बात नजर नहीं आती। हमारा संविधान इस मामले में देश की ढाल बना हुआ है, जो प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार, समान सुरक्षा और समान अवसर की गारंटी देता है।

संयुक्त राष्ट्र सलाहकार बेयानी ने यह भी स्पष्ट किया है कि जब किसी क्षेत्र में इन जोखिमों का स्वरूप लगातार हिंसक होने लगता है, तब उनका कार्यालय चेतावनियां जारी करता है और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समन्वय स्थापित किया जाता है। इस प्रक्रिया में संयुक्त राष्ट्र के साथ-साथ अफ्रीकी संघ, यूरोपीय संघ जैसे क्षेत्रीय संगठनों और अन्य अंतर्राष्ट्रीय प्रणालियों से भी निकट संपर्क रखा जाता है। वह कहते हैं कि जब एक बार खतरे की घंटी बज जाती है, तो इसका अर्थ यह होता है कि संकट अपनी सीमा लांघने के बेहद करीब पहुंच चुका है।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक त्रिनाथ शुक्ला द्वारा 25/16-ए, जाप्लिंग रोड, लखनऊ-226001 (उ.प्र.) से प्रकाशित एवं प्लाट नं.-42, निकट बद्री नगर,इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज, लखनऊ-226008 (उ.प्र.) से मुद्रित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, कार्यकारी संपादक- अनिल त्रिगुणायत***

0522-4008111 (कार्यालय), ईमेल-editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-50986/1989 *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी। (नोट-सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा)।

सूर्य चिकित्सा

खरी है आधुनिक विज्ञान की कसौटी पर

आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा में धूप स्नान या सूर्य की किरणों से उपचार की परंपरा हजारों वर्ष पुरानी है, जिसे आधुनिक विज्ञान की कसौटी पर भी खरा पाया गया है। युवा वैज्ञानिक और शोधार्थी डॉ. प्रभात उपाध्याय ने इस विषय पर गहराई से अध्ययन किया तो सुखद व आश्चर्यजनक परिणाम सामने आए हैं। प्रकाश चिकित्सा विज्ञान (मेडिकल साइंस) में क्रांतिकारी हथियार के रूप में उभर रहा है। इसे फोटोमेडिसिन या प्रकाश चिकित्सा कहा गया है, जिससे प्रकाश की किरणें बीमारियों से लड़ने के लिए इस्तेमाल की जा रही हैं। यह न केवल त्वचा की समस्याओं का इलाज करती है, बल्कि मांसपेशियों को मजबूत करने, आंतों के सूक्ष्म जीवों को संतुलित करने और यहां तक कि कैंसर जैसी जटिल बीमारियों पर नियंत्रण पाने में सहायक सिद्ध हो रही है। शोधार्थी डॉ. उपाध्याय के शोध ने आंतों के सूक्ष्म जीवों और मांसपेशियों के बीच के रहस्य को उजागर किया है। साथ ही प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति से जुड़ाव और भारत में इसके उपयोगी अनुप्रयोगों पर विस्तार से बताया है। हाल ही में प्रकाशित शोध 'प्रकाश संवर्धन द्वारा आंतों के सूक्ष्म जीवों के माध्यम से मांसपेशियों को मजबूत करना' ने फोटो मेडिसिन को एक नई दिशा दी है। यह अध्ययन लखनऊ विश्वविद्यालय और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के शोधार्थी डॉ. प्रभात उपाध्याय और उनके सहयोगियों द्वारा किया गया। *–मार्कण्डेय पाण्डेय*

शोध में निकले नतीजे

- गैर-आक्रामक फोटो बायोमॉडुलेशन थेरेपी मांसपेशी सहनशक्ति बढ़ाती है।
- पेट पर प्रकाश लागू करने से आंत मांसपेशी अक्ष पुनर्गठित होता है।
- यह उपचार तीव्र व्यायाम से बिगड़े आंत माइक्रोबायोटा को संतुलित करता है।
- शॉर्टचेन फैटी एसिड उत्पादक बैक्टीरिया को बढ़ाता है।
- रोगजनक जीवाणुओं को घटाता है और जैव-विविधता में वृद्धि करता है।
- इससे मांसपेशियों की थकान घटती है और माइटोकॉन्ड्रिया की ऊर्जा उत्पादन क्षमता बढ़ती है।
- पहली बार सिद्ध हुआ है कि बाहरी प्रकाश बिना किसी औषधि या शल्य-प्रक्रिया के आंतों के सूक्ष्मजीवों को प्रभावित कर सकता है। यह खोज आयुर्वेद की "सूर्य चिकित्सा" की आधुनिक पुनर्व्याख्या के समान है।

आधुनिक फोटो मेडिसिन का प्रारंभ

भारत में हजारों वर्ष से सूर्य चिकित्सा की विभिन्न प्रणालियां प्रचलित हैं, लेकिन आधुनिक दौर में 1970 के दशक में अमेरिका के मैसाचुसेट्स में लेजर तकनीक सामने आई। यहां पर स्थित वेलमैन सेंटर ने इसे चिकित्सा क्षेत्र में इसका प्रयोग शुरू किया। अब यह सेंटर विश्व का सबसे बड़ा शैक्षणिक अनुसंधान केंद्र है, जो प्रकाश के जीवविज्ञान और चिकित्सा पर प्रभावों की जांच करता है। यहां प्रकाशिकी, फोटॉनिकी, अभियंत्रण, रसायन विज्ञान, भौतिकी और उन्नत जैविक तकनीकों पर शोध चल रहे हैं। इस केंद्र के अनुसंधान से विकसित 26 से अधिक चिकित्सीय नवाचार वर्तमान में उपयोग में हैं। इनमें लगभग 20 प्रमुख प्लेटफॉर्म तकनीकें शामिल हैं, जिनके अनेक अनुप्रयोग हैं और 40 से अधिक स्टार्टअप कंपनियां इन पर आधारित हैं। उदाहरण के तौर पर लेजर द्वारा बाल हटाने, टैटू मिटाने, ऊतक मरम्मत (झुर्रियां, निशान और त्वचा की रंगत सुधारने) जैसी तकनीकें अब सामान्य चिकित्सा का हिस्सा बन चुकी हैं।

प्राचीन ज्ञान व आधुनिक विज्ञान का संगम

भारत में प्रकाश चिकित्सा का इतिहास प्राचीन है। आयुर्वेद में सूर्य चिकित्सा या सूर्योपासना का उल्लेख मिलता है, जिसमें सूर्य की किरणों से शरीर के दोषों– वात, पित्त और कफ को संतुलित करने की विधियां बताई गई हैं। 'त्राटक' जैसी विधियां, जहां दीपक की लौ पर दृष्टि केंद्रित की जाती है। यह सभी विधियां आधुनिक फोटोथेरेपी के सिद्धांतों से मेल खाती हैं। हाल के अध्ययनों में यह भी पाया गया है कि सूर्य प्रकाश शरीर के चक्रों को सक्रिय कर ऊर्जा संतुलन स्थापित करता है, जो फोटो बायोमॉडुलेशन के सिद्धांतों के समान है।

भारत में सस्ता, सुरक्षित चिकित्सा विकल्प

भारत में जहां लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण है, फोटो मेडिसिन विशेष रूप से उपयोगी हो सकती है। प्रकाश आधारित उपचार गैर आक्रामक हैं, इनमें न दर्द है न दवा का दुष्प्रभाव। उपकरण भी किफायती हैं। साधारण एलईडी युक्त चिकित्सा उपकरण 5 हजार से 10 हजार रुपये तक में उपलब्ध हैं। यह चिकित्सा विधि वृद्धावस्था में मांसपेशी कमजोरी, आंत–संबंधी विकार, थकान, मधुमेह और संक्रमण जैसी स्थितियों में सहायक सिद्ध हो सकती है। व्यायाम के साथ इनका प्रयोग मांसपेशियों की पुन :स्थापना की गति को लगभग 30 प्रतिशत तक बढ़ा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह घाव भरने और संक्रमण नियंत्रण के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकती है। डॉ. प्रभात उपाध्याय जैसे शोधकर्ता इस क्षेत्र में वैज्ञानिक दृष्टि से योगदान के साथ आयुर्वेदिक परंपराओं को आधुनिक प्रमाणों से जोड़ रहे हैं। भारत में प्रकाश चिकित्सा करोड़ों लोगों के लिए सुलभ, सस्ती और सुरक्षित स्वास्थ्य प्रणाली का रूप ले सकती है। वास्तव में प्रकाश ही भविष्य है, भारत उसका उज्ज्वल अध्याय लिखने की दहलीज पर है।

लेजर कृत्रिम प्रकाश पर आधारित है आधुनिक विज्ञान

आधुनिक विज्ञान लेजर और कृत्रिम प्रकाश पर केंद्रित है, वहीं आयुर्वेद प्राकृतिक प्रकाश को उपचार का साधन मानता है। त्रिफला जैसी औषधियों के साथ प्रकाश चिकित्सा का संयोजन भविष्य की समग्र (होलिस्टिक) चिकित्सा प्रणाली का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

जंगल की दुनिया

सिवेट पाम: भारत का रहस्यमयी निशाचर जीव

भारत की समृद्ध जैव-विविधता में सिवेट पाम एक ऐसा स्तनधारी है, जिसके बारे में आम लोगों को बहुत कम जानकारी है। यह भारत में पाई जाने वाली सबसे व्यापक सिवेट प्रजातियों में से एक है। अत्यधिक शुष्क पश्चिमी क्षेत्रों को छोड़कर यह लगभग पूरे देश में पाई जाती है। जंगलों के साथ-साथ ग्रामीण और अर्ध-शहरी इलाकों में भी इसकी मौजूदगी देखी गई है। अपने निशाचर स्वभाव के कारण यह दिन में छिपी रहती है और रात के समय सक्रिय होकर भोजन की तलाश में निकलती है।

सिवेट पाम को ताड़ के फलों के प्रति विशेष लगाव होता है, इसी वजह से इसका नाम सिवेट पाम पड़ा। हालांकि इसे आम बोलचाल में सिवेट कैट या टॉडी कैट कहा जाता है, लेकिन यह बिल्ली परिवार का सदस्य नहीं है। इसका शरीर लंबा और पतला होता है, चेहरे पर नुकीली बनावट और लंबी, घनी पूंछ इसकी पहचान है। इसकी चाल-ढाल और फुर्ती इसे अन्य छोटे मांसाहारी जीवों से अलग बनाती है। इस प्रजाति की एक खास बात यह है कि यह मानव बस्तियों के आसपास भी आसानी से रह लेती है। पारंपरिक घरों की छप्पर वाली छतें, पुराने गोदाम, सूखी नालियां, बाहरी शौचालय और सुनसान कोने इसके पसंदीदा आश्रय स्थल होते हैं। दिन के समय यह इन्हीं स्थानों में छिपकर आराम करती है और रात ढलते ही भोजन की खोज में निकल पड़ती है। इसका भोजन मुख्य रूप से फल, कीड़े-मकोड़े और छोटे जीव होते हैं। निशाचर और अत्यंत सतर्क स्वभाव के कारण सिवेट पाम को प्रत्यक्ष रूप से देख पाना मुश्किल होता है। यही वजह है कि वन्यजीव विशेषज्ञ इसकी गतिविधियों पर नजर रखने के लिए कैमरा ट्रैप और दूरस्थ निगरानी उपकरणों का सहारा लेते हैं। इन अध्ययनों से पता चलता है कि यह जीव पारिस्थितिकी तंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। फलों को खाने के बाद बीजों को अलग-अलग स्थानों पर छोड़कर यह प्राकृतिक रूप से वनस्पतियों के प्रसार में योगदान देता है।

आज बदलते पर्यावरण, आवासों के नष्ट होने और मानवीय गतिविधियों के कारण सिवेट पाम के प्राकृतिक ठिकानों पर दबाव बढ़ रहा है। इसके बावजूद यह जीव मानव-वन्यजीव सह-अस्तित्व का एक अनोखा उदाहरण है। सिवेट पाम का संरक्षण न केवल इस प्रजाति के लिए, बल्कि पूरे पारिस्थितिकी संतुलन को बनाए रखने के लिए भी अत्यंत आवश्यक है।

पृथ्वी की है एक चुंबकीय पूंछ

सुनकर अजीब लगता है कि पृथ्वी की एक पूंछ भी है और यह बहुत लंबी है। यह चुंबकीय पूंछ अंतरिक्ष में 20 लाख किलोमीटर लंबाई में फैली हुई है। यह पूंछ नंगी आंखों से दिखाई नहीं देती, लेकिन अंतरिक्ष में घूमने वाले हमारे उपग्रह और दूरबीन इसे देख सकते हैं। सौर मंडल में हमारी पृथ्वी ब्रह्मांडीय वातावरण की ताकतों के साथ कैसे अपना अस्तित्व कायम रखती है , यह पूंछ के बारे में वैज्ञानिक जानकारी जुटाने से मालूम होता है। पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र या मैग्नेटोस्फीयर एक कुदरती फिनॉमिना है, जो हमारे लिए एक अदृश्य ढाल है, जो हमें कॉस्मिक और गामा किरणों के अलावा एक्स–रेज के प्रभाव और सौर–तूफानों से बचाता है। इस चुंबकीय क्षेत्र के परिणामस्वरूप पृथ्वी के उत्तरी अक्षांशों में नीली–पीली रौशनी अर्थात ऑरोरा दिखने की शानदार ब्रह्मंडलीय घटनाएं होती हैं।

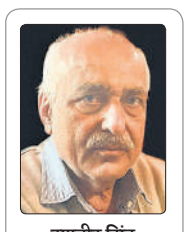

रणबीर सिंह
विज्ञान लेखक

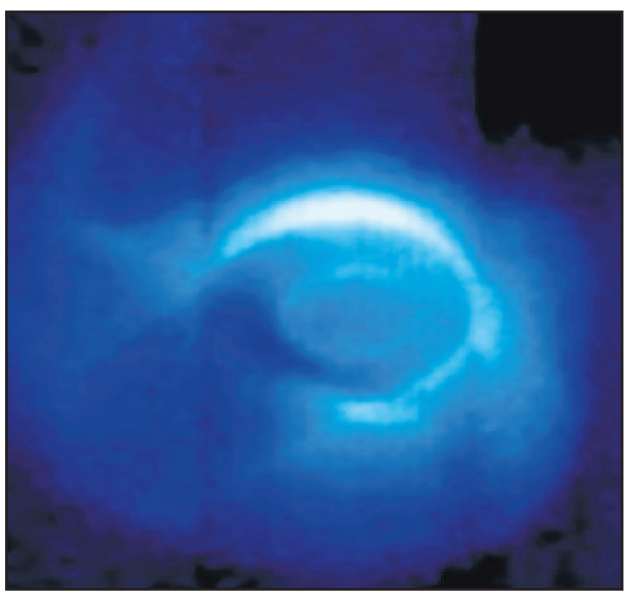

पृथ्वी के मैग्नेटोस्फीयर

मैग्नेटोस्फीयर पृथ्वी के बाहरी कोर के अंदर पिघली हुई धातुओं की गति अर्थात डायनामिक्स ऑफ अर्थ्स मैटेलिक कोर के कारण बनता है। यह चुंबकीय क्षेत्र सूर्य की सतह के नीचे मौजूद प्लाज्मा से बाहर की तरफ तेज आंधी के तरह निकलने वाले आवेशित ऊर्जा कणों सोलर कोरोनल मॉस इजेक्शन को फंसाता और निर्देशित करता है। पृथ्वी का अपना एक चुंबकीय क्षेत्र है, यह अच्छी तरह से ज्ञात है, लेकिन इस बाबत पूरे तौर से मालूम नहीं कि हमारे ग्रह और चुंबकीय क्षेत्र का रिश्ता कितना गहरा है और यह पूंछ की शक्ल में क्यों दिखाई देता है? इसकी वास्तविकता अब उन्नत अंतरिक्ष अन्वेषी उपकरणों द्वारा इसे देखे और दर्ज किए जाने के बाद ही मालूम हुई। अब यह अनेक खगोल विज्ञानियों का ध्यान आकर्षित कर रही है ताकि इसकी प्रकृति और भूमिका के बारे में अधिक तथ्य जुटाए जा सकें।

धूमकेतु या अन्य खगोलीय पिंडों पर देखी जाने वाली पूंछों के विपरीत, पृथ्वी की पूंछ अदृश्य और बहुत कम स्पष्ट है। यह पूंछ प्लाज्मा से बनी है, जो चार्ज कणों से बनी एक गैस है और जिसे मैग्नेटोस्फीयर पकड़ लेता है। जैसे ही सौर विकिरण या पवन पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र से टकराता है वे इस पृथ्वी के पिघले हुए मैटेलिक कोर प्लाज्मा को पीछे धकेलती हैं। इसी के प्रभाव से एक पूंछ बनती है, जो लाखों किलोमीटर तक खिंच जाती है।

पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र और सौर हवा के बीच इंटरैक्शन का के परिणाम को हम एक बूंद की उपमा से समझ सकते हैं। सौर हवा पृथ्वी के मैग्नेटोस्फीयर को एक आंसू के आकार में बदल देती है, जिसकी पूंछ पीछे की ओर फैली होती है। इससे अंतरिक्ष में एक जटिल और गतिशील संरचना बनती है, जोकि बहुत सुंदर दिखती है। इस विशाल संरचना को औपचारिक रूप से मैग्नेटोटेल नाम दिया गया है। यह पूंछ पृथ्वी ग्रह के वायुमंडल से बहुत दूर तक फैला हुआ है। यह स्थिर भी नहीं है और सौर-पवन की तीव्रता और दिशा परिवर्तन की वजह से लहराता भी है। अर्थात सौर हवाओं की ताकत के आधार पर यह पूंछ अपना आकार बदलती है। सौर हवा सूर्य से निकलने वाले चार्ज्ड कणों का एक निरंतर प्रवाह है, जोकि कभी तेज, कभी बहुत तेज और कभी अत्यंत प्रबल हो जाता है। जब ये कण पृथ्वी के मैग्नेटोस्फीयर के साथ इंटरैक्ट करते हैं, तो वे उतार-चढ़ाव पैदा करते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप मैग्नेटोटेल खिंचता और सिकुड़ता है। जब सौर गतिविधि विशेष रूप से तीव्र होती है, जैसे कि सौर ज्वालाओं या कोरोनल मास इंजेक्शन के दौरान, तो मैग्नेटोटेल में काफी बदलाव हो सकता है। दशकों के अंतरिक्ष अन्वेषण के बावजूद, मैग्नेटोटेल की वास्तविक प्रकृति हमारे ग्रह की अंतरिक्ष के साथ सक्रिय होने के अनजान और रहस्यमय पहलुओं में से एक है।

अनजान और रहस्यमय मैग्नेटोटेल की वास्तविक प्रकृति

जब सोलर एक्टिविटी ज्यादा होती है, जैसे कि सोलर फ्लेयर्स के समय, तो पूंछ में बहुत ज्यादा बदलाव आ सकता है और इससे सैटेलाइट ऑपरेशन, कम्युनिकेशन और यहां तक कि पृथ्वी पर पावर ग्रिड भी प्रभावित हो सकते हैं। मैग्नेटोटेल और सोलर हवा के इंटरैक्शन की डायनामिक्स को समझना स्पेस वेदर का अनुमान लगाने और आधुनिक टेक्नोलॉजिकल सिस्टम को बचाने के लिए बहुत जरूरी है। पूंछ में प्लाज्मा पृथ्वी के रात वाले हिस्से से एक वापसी पैटर्न में सूर्या की तरफ बहता है, जिससे यह अंतरिक्ष में कणों की बहती नदी जैसा दिखता है। प्लाज्मा का सूर्य की ओर वापस प्रवाह एक जटिल प्रणाली का सिर्फ एक हिस्सा है और वैज्ञानिकों का मानना है कि यह पृथ्वी और सूर्य की शक्तियों के बीच संतुलन बनाए रखने में भूमिका निभाता है। हालांकि मैग्नेटोटेल सीधे पृथ्वी पर जीवन को प्रभावित नहीं करता है, लेकिन यह हमारे ग्रह के आसपास के व्यापक अंतरिक्ष परिवेश पर गहरा प्रभाव डालता है। असल में पृथ्वी की मैग्नेटो–शील्ड ही पृथ्वी को नुकसानदायक सौर और कॉस्मिक रेडिएशन से बचाकर धरती पर जीवन को फलने–फूलने देती है। स्पेस वेदर में मैग्नेटोटेल की एक महत्वपूर्ण भूमिका होने का अनुमान है। अभी जोर इस बात पर है कि पृथ्वी की मैग्नेटोटेल की मैपिंग की जाए। इस पूरी स्थिति को लेबोरेटरी में दोहराया गया है। इस तरीके को सिमुलेशन कहते हैं, जिसके नतीजे हमें यह समझने में मदद करते हैं कि मैग्नेटोटेल इन सौर हवा के बदलावों पर कैसे और कितनी तेजी से प्रतिक्रिया करती है। अमेरिका में गोडार्ड स्पेस फ्लाइट सेंटर के कम्युनिटी कोऑर्डिनेटेड मॉडलिंग सेंटर में सौर हवा और पृथ्वी के मैग्नेटोस्फीयर के इंटरैक्शन के लिए मिशिगन विश्वविद्यालय के बीएटीएस–आर–यूएस ग्लोबल मैग्नेटो–हाइड्रोडायनामिक मॉडल को उपर्युक्त सिमुलेशन स्टडी के लिए इस्तेमाल किया गया है। दूर के मैग्नेटोटेल के आकार से जुड़े एक लंबे समय से चले आ रहे सवाल को हल करने के अलावा, सिमुलेशन अध्ययन दिखाता है कि सौर हवा में बदलाव के प्रति इसकी प्रतिक्रिया बहुत तेज होती है। चूंकि मैग्नेटोटेल को नए कॉन्फिगरेशन में बदलने में एक या ज्यादा घंटे लगेंगे, इसलिए 10–15 मिनट की प्रतिक्रिया में कोई दूसरी, तेज प्रक्रिया शामिल होनी चाहिए। परिणाम बताते हैं कि यह प्रक्रिया पृथ्वी के डे–साइड मैग्नेटोपॉज पर मैग्नेटिक रिकनेक्शन है। सौर हवा का प्रवाह नए सिरे से जुड़े इंटरप्लेनेटरी और मैग्नेटोस्फेरिक मैग्नेटिक फील्ड लाइनों को सूर्य से दूर ले जाता है और उन्हें तुरंत मैग्नेटोटेल स्थानों पर जमा कर देता है, जो इनिशियल मॉस फंक्शन ओरिएंटेशन पर निर्भर करते हैं। नतीजतन, मैग्नेटोटेल के आकार, आकृति और संरचना पर भविष्य का काम दूर, डेसाइड मैग्नेटोपॉज पर रिकनेक्शन की प्रकृति के बारे में महत्वपूर्ण सुराग भी प्रदान कर सकता है। इनिशियल मॉस फंक्शन तारों के बनने के समय उनकी आबादी के लिए द्रव्यमान के डिस्ट्रीब्यूशन का वर्णन करता है, जो तारे बनने और गैलेक्सी के विकास को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इनिशियल मॉस फंक्शन एक अनुभवजन्य फंक्शन है, जो किसी दिए गए क्षेत्र में बने तारों के द्रव्यमान के शुरुआती डिस्ट्रीब्यूशन को दिखाता है। इसे आमतौर पर एक प्रोबेबिलिटी डेंसिटी फंक्शन के रूप में व्यक्त किया जाता है, जो तारे के बनने के दौरान एक विशिष्ट द्रव्यमान होने की संभावना को बताता है। इनिशियल मॉस फंक्शन खगोलविदों के लिए जरूरी है, क्योंकि यह अलग–अलग तारों के बनने और विकास को गैलेक्सी बनने और विकास के व्यापक संदर्भ से जोड़ने में मदद करता है।

बाजार	सेंसेक्स ↓	निफ्टी ↓
बंद हुआ	84,481.81	25,815 .55
गिरावट	77 .84	3
प्रतिशत में	0 .09	0 .01

सोना 1,36,500 प्रति 10 ग्राम

चांदी 2,07,600 प्रति किलो

अमृत विचार

लखनऊ, शुक्रवार, 19 दिसंबर 2025

www.amritvichar.com

बिजनेस ब्रीफ

आईसीआईसीआई बैंक को जीएसटी नोटिस जारी

नई दिल्ली। आईसीआईसीआई बैंक को आयकर विभाग ने कम जीएसटी भुगतान को लेकर 238 करोड़ का नोटिस भेजा है। बैंक ने गुरुवार को शेयर बाजार को बताया कि उसे महाराष्ट्र माल एवं सेवा कर (जीएसटी) अधिनियम, 2017 की धारा 73 के तहत संबंधित प्राधिकरण से एक आदेश मिला, जिसमें 237,90,04,448 रुपये की जीएसटी मांग है। इसमें 216,27,31,316 रुपये कर और 21,62,73,132 रुपये जुर्माना हैं। इसमें ब्याज भी है। वह पहले भी ऐसे ही मामलों में जारी आदेशों और कारण बताओ नोटिस पर कानूनी लड़ाई लड़ रहा है। हालांकि, इस मामले में राशि अधिक होने के कारण इसकी जानकारी सार्वजनिक की गई है।

पीपीएसएल को काम की आरबीआई ने दी मंजूरी

नई दिल्ली। वित्तीय प्रौद्योगिकी कंपनी वन97 कम्युनिकेशंस की अनुषंगी कंपनी पेटीएम पेमेंट्स सर्विसेज लिमिटेड (पीपीएसएल) को भारतीय रिजर्व बैंक से ऑफलाइन भुगतान और सीमा पार लेनदेन के लिए पेमेंट एग्रीगेटर के रूप में काम करने की अनुमति मिल गई है। केंद्रीय बैंक ने पीपीएसएल को ऑनलाइन भुगतान की पिछले महीने अनुमति दे दी थी। पेटीएम ने गुरुवार को शेयर बाजार को बताया कि आरबीआई ने 17 दिसंबर को पीपीएसएल को ऑफलाइन भुगतान एवं सीमा-पार लेनदेन के लिए भुगतान एग्रीगेटर के रूप में संचालन की अनुमति प्रदान की।

ग्रामीण बैंकों के लिए नया प्रतीक चिह्न जारी

नई दिल्ली। वित्त मंत्रालय ने क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (आरआरबी) के लिए नया प्रतीक चिह्न गुरुवार को जारी किया। वित्त मंत्रालय के वित्तीय सेवा विभाग ने एक राज्य एक क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक के सिद्धांत पर, 11 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में स्थित 26 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (आरआरबी) का एकीकरण किया है, जो एक मई 2025 से प्रभावी हो गया। यह सुधार अधिक सशक्त एवं कुशल आरआरबी के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। वर्तमान में 28 आरआरबी 700 से अधिक जिलों में 22,000 से अधिक शाखाओं के व्यापक नेटवर्क के माध्यम से राष्ट्र की सेवा कर रहे हैं। यह ग्रामीण समुदायों की सेवा करने वाली इन संस्थाओं की पहचान और दृश्यता को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

भारत, ओमान बने साझेदार, मुक्त व्यापार समझौते पर किए हस्ताक्षर

वस्त्र, कृषि उत्पाद तथा चमड़े के सामान सहित भारत के 98 प्रतिशत निर्यात ओमान में होंगे शुल्क मुक्त

- खजूर, संगमरमर और पेट्रो रसायन जैसे ओमान के उत्पादों पर शुल्क कम करेगा भारत

मस्कट, एजेंसी

प्रधानमंत्री मोदी के सामने समझौते पर हस्ताक्षर करते केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल और ओमान के मंत्री कैस बिन मोहम्मद अल यूसुफ।

भारत और ओमान ने गुरुवार को मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए। इसके तहत वस्त्र, कृषि उत्पाद तथा चमड़े के सामान सहित भारत के 98 प्रतिशत निर्यात ओमान में शुल्क मुक्त होंगे। दूसरी ओर भारत खजूर, संगमरमर और पेट्रो रसायन वस्तुओं जैसे ओमान के उत्पादों पर शुल्क कम करेगा। इस समझौता के 2026-27 की पहली तिमाही से लागू होने की उम्मीद है। यह समझौता ऐसे समय में हो रहा है जब भारत को अमेरिका में भारी शुल्क का सामना करना पड़ रहा है। इस समझौते पर वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल और ओमान के वाणिज्य, उद्योग एवं निवेश संवर्धन मंत्री कैस बिन मोहम्मद अल यूसुफ ने मस्कट में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।

ओमान ने 98 प्रतिशत से अधिक शुल्क श्रेणियों (या उत्पाद श्रेणियों) पर शून्य शुल्क की पेशकश की है, जिसमें ओमान को भारत के निर्यात का 99.38 प्रतिशत हिस्सा है। रत्न एवं आभूषण, वस्त्र, चमड़ा, जूते, खेल के सामान, प्लास्टिक, फर्नीचर, कृषि उत्पाद, इंजीनियरिंग उत्पाद, औषधि, चिकित्सकीय उपकरण और मोटर वाहन सहित सभी प्रमुख श्रम-प्रधान क्षेत्रों को पूर्ण रूप से शुल्क मुक्त कर दिया गया है। इनमें से 97.96 प्रतिशत उत्पाद श्रेणियों पर तत्काल शुल्क उन्मूलन की पेशकश की जा रही है। दूसरी ओर, भारत अपनी कुल शुल्क श्रेणियों (12,556) में से 77.79 प्रतिशत पर शुल्क उदारीकरण की पेशकश कर रहा है, जिसमें मूल्य के हिसाब से ओमान से भारत के आयात का 94.81 प्रतिशत हिस्सा शामिल है। ओमान के लिए निर्यात के लिहाज से महत्वपूर्ण और भारत के लिए संवेदनशील उत्पादों के लिए, यह प्रस्ताव मुख्य रूप से खजूर, संगमरमर और पेट्रोरसायन उत्पादों जैसी वस्तुओं के लिए शुल्क-दर कोटा (टीआरक्यू) आधारित शुल्क उदारीकरण है।

भारत ने अपने हितों की रक्षा के लिए संवेदनशील उत्पादों को बिना किसी रियायत की पेशकश किए अलग श्रेणी में रखा है। विशेष रूप से कृषि उत्पाद, जिनमें दुग्ध, चाय, कॉफी, रबर एवं तंबाकू उत्पाद, सोना व चांदी की सिल्लियां, आभूषण, अन्य श्रम-प्रधान उत्पाद जैसे जूते, खेल के सामान और कई निम्न धातुओं का कबाड़ शामिल हैं। ओमान में वर्तमान में श्रम प्रधान वस्तुओं पर पांच प्रतिशत आयात शुल्क लगता है। सेवा क्षेत्र के मोर्चे पर ओमान कंप्यूटर संबंधी सेवाओं, व्यावसायिक एवं पेशेवर सेवाओं, ऑडियो-विजुअल सेवाओं, अनुसंधान एवं विकास, शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं सहित विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रतिबद्धताएं व्यक्त करेगा। ओमान का वैश्विक सेवा आयात 12.52 अरब अमेरिकी डॉलर रहा जिसमें भारत की हिस्सेदारी केवल 5.31 प्रतिशत थी। यह भारतीय सेवा प्रदाताओं के लिए अपार संभावनाओं को दर्शाता है। सीईपीए की एक प्रमुख विशेषता भारतीय पेशेवरों के लिए आवाजाही की बेहतर रूपरेखा है।

कंपनी में कर्मचारियों की सीमा की 50 प्रतिशत

ओमान ने पहली बार कुशल पेशेवरों की आवाजाही (मोड-4) के तहत व्यापक प्रतिबद्धताएं पेश की हैं, जिनमें कंपनी के भीतर स्थानांतरित होने वाले कर्मचारियों की सीमा को 20 प्रतिशत से बढ़ाकर 50 प्रतिशत कर दिया है। संविदा आधार पर सेवा प्रदान करने वालों के लिए ठहरने की स्वीकृत अवधि में भी वृद्धि की गई है। इसे मौजूदा 90 दिन से बढ़ाकर दो वर्ष कर दिया गया है। इसे दो वर्ष के लिए और बढ़ाया जा सकता है। यह समझौता लेखांकन, कराधान, वास्तुकला, चिकित्सा और संबद्ध सेवाओं जैसे प्रमुख क्षेत्रों में कुशल पेशेवरों के लिए अधिक उदार प्रवेश एवं ठहरने की शर्तों का प्रावधान भी करता है जिससे गहन तथा अधिक सुगम व्यावसायिक जुड़ाव को बढ़ावा मिलता है। इस समझौते में ओमान के प्रमुख सेवा क्षेत्रों में भारतीय कंपनियों द्वारा 100 प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रावधान भी है। इसके तहत वाणिज्यिक उपस्थिति के माध्यम से भारत के सेवा उद्योग को इस क्षेत्र में अपने परिचालन का विस्तार करने के लिए व्यापक अवसर मिलेंगे।

डेयरी, सोना-चांदी, फुटवियर संवेदनशील सूची में

भारत ने ओमान के साथ गुरुवार को संपन्न व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते (सीईपीए) के तहत घरेलू किसानों और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के हितों की रक्षा के लिए कई संवेदनशील उत्पादों पर कोई शुल्क रियायत नहीं दी है। वाणिज्य मंत्रालय ने कहा कि राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा के लिए इन संवेदनशील उत्पादों को 'छूट से बाहर की श्रेणी' में रखा गया है। मंत्रालय के मुताबिक, शुल्क छूट से बाहर रखे गए उत्पादों में डेयरी एवं कृषि उत्पाद, चाय, कॉफी, रबर, तंबाकू उत्पाद, सोना-चांदी का बुलियन एवं आभूषण और जूते-चप्पल, खेल सामान और कई मूल धातुओं के स्क्रैप शामिल हैं। संवेदनशील क्षेत्रों की सुरक्षा के लिए इन उत्पादों पर किसी भी तरह की शुल्क रियायत नहीं दी गई है ताकि घरेलू उत्पादकों और एमएसएमई पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। जिन उत्पादों में ओमान की निर्यात रुचि है और जो भारत के लिए संवेदनशील हैं, वहां अधिकांश मामलों में शुल्क-दर कोटा (टीआरक्यू) आधारित शुल्क उदारीकरण की पेशकश की गई है।

भारत में यूपीआई से लेन-देन में 33.5% की वृद्धि

कोलकाता, एजेंसी

- वर्ल्डलाइन इंडिया के अनुसार 2025 की तीसरी तिमाही में डिजिटल पेमेंट क्षेत्र में तेजी

भारत के डिजिटल पेमेंट क्षेत्र में काफी तेजी से विकास हो रहा है। इस बात का खुलासा वर्ल्डलाइन इंडिया ने किया है। वर्ल्डलाइन इंडिया ने गुरुवार को डेटा से भरपूर संक्षिप्त विवरण जारी किया, जिसमें 2025 की तीसरी तिमाही में देश के डिजिटल पेमेंट क्षेत्र में तेज़ी से हो रहे विकास को दर्शाया गया।

इसमें यूपीआई के जरिये लेन-देन की संख्या सालाना 33.5 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 59.33 अरब हो गई है। यह विवरण वर्ल्डलाइन की प्रमुख इंडिया डिजिटल पेमेंट्स रिपोर्ट का ही एक विस्तार है, जो इस तिमाही में पेमेंट कर्ताओं के बारे में समय पर जानकारी देता है। इस एनालिसिस में यूपीआई के लगातार दबदबे, क्यूआर-आधारित व्यापार स्वीकृति में तेज़ी से बढ़ोतरी, कार्ड जारी करने में लगातार ग्रोथ और मेट्रो शहरों तथा उभरते भारत दोनों में डिजिटल अपनाने में गहराई को उजागर किया गया। क्यू3- 2025 ने दुनिया की सबसे डायनामिक रियल-टाइम पेमेंट अर्थव्यवस्था के रूप में भारत की स्थिति को और मज़बूत किया और कहा कि यहां हर स्कैन, टैप और क्लिक उपभोक्ताओं और कारोबारियों के व्यवहार को बदल रहा है।

रिपोर्ट में बताया गया है कि यूपीआई ने रिकॉर्ड तोड़ने का सिलसिला जारी रखा, लेन-देन सालाना आधार पर 33.5 प्रतिशत बढ़कर 59.33 अरब हो गया और लेन-देन का मूल्य सालाना आधार पर 21 प्रतिशत बढ़कर 74.84 लाख करोड़ रुपये हो गया है। व्यक्ति से कारोबारी (पी2एम) लेन-देन व्यक्ति से व्यक्ति (पी2पी) से आगे रहे, जो रोज़मर्रा के खुदरा लेन-देन में यूपीआई के दबदबे को दिखाता है।

भारत में 70.90 करोड़ सक्रिय यूपीआई क्यूआर

रिपोर्ट के अनुसार पी2एम लेन-देन 35 प्रतिशत बढ़कर 37.46 अरब हो गया और पी2पी 29 वृद्धि के साथ 21.65 अरब लेन-देन हो गया है। औसत टिकट साइज़ घटकर 1,262 रुपये (1,363 रुपये से) हो गया, जो रोजमर्रा के सामान, खाना, हेल्थकेयर की ज़रूरी चीज़ों और हाइपरलोकल कॉमर्स जैसे छोटे लेने-देन के लिए बढ़ते इस्तेमाल को दिखाता है। भारत में 70.90 करोड़ सक्रिय यूपीआई क्यूआर हो गए हैं, जो जुलाई 2024 से 21 प्रतिशत ज्यादा हैं। किराना, फार्मेसी, ट्रांसपोर्ट हब और ग्रामीण बाजारों में क्यूआर की व्यापक स्वीकार्यता ने स्कैन-एंड-पे को देश भर में डिफ़ॉल्ट पेमेंट मोड बना दिया है। पीओएस टर्मिनल 35 प्रतिशत बढ़कर 121.2 लाख हो गए (जुलाई 2024-जुलाई 2025), भारत क्यूआर 61.0 लाख पर रहा, जिसमें यूपीआई क्यूआर के दबदबे की ओर बदलाव के बीच मामूली गिरावट देखी गई। रिपोर्ट में बताया गया है कि इस मामले में निजी बैंक आगे हैं जिनका मार्केट शेयर 84 प्रतिशत था। क्रेडिट कार्ड जारी करने में सालाना 35 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई और यह 1133.9 लाख कार्ड तक पहुंच गया। वहीं, डेबिट कार्ड 1.02 अरब हो गए, जबकि प्रीपेड कार्ड 47.01 करोड़ थे। क्रेडिट कार्ड से लेन-देन में 26 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई और इसकी संख्या 1.45 अरब हो गयी, जिसका मूल्य 4.08 लाख करोड़ रुपये था।

चांदी 1,800 रुपये चढ़कर उच्च स्तर पर

नई दिल्ली, एजेंसी

- एक साल में हो चुकी है 1,17,100 रुपये यानी 129.4% तक की बढ़ोतरी

चांदी गुरुवार को राष्ट्रीय राजधानी के सर्राफा बाजार में 1,800 रुपये उछलकर 2,07,600 रुपये प्रति किलोग्राम के नए सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गई। इसका कारण कारोबारियों की निरंतर खरीदारी है। अखिल भारतीय सर्राफा संघ ने यह जानकारी दी।

चांदी बुधवार को 7,300 रुपये उछलकर पहली बार दो लाख रुपये प्रति किग्रा को पार कर 2,05,800 रुपये प्रति किग्रा पर बंद हुई थी। इस वृद्धि के साथ, चांदी की कीमत इस साल एक जनवरी को दर्ज की गई 90,500 रुपये प्रति किग्रा से 1,17,100 रुपये किलो यानी 129.4 प्रतिशत बढ़ चुकी है। सर्राफा संघ के अनुसार, सर्राफा बाजार में, 99.9 प्रतिशत शुद्धता वाले सोने की कीमत 1,36,500 रुपये प्रति 10 ग्राम (सभी करों सहित) पर स्थिर रहा। अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में, हाजिर सोना 13.16 डॉलर यानी 0.31 प्रतिशत घटकर 4,325.02 डॉलर प्रति औंस रह गया। रिलायंस सिक्योरिटीज के वरिष्ठ अनुसंधान विश्लेषक जिगर त्रिवेदी ने कहा कि सोना गुरुवार को 4,330 डॉलर प्रति औंस तक गिर गया, लेकिन अक्टूबर में पहुंचे रिकॉर्ड उच्च स्तर के करीब रहा। इसका कारण अमेरिकी दर में कटौती की उम्मीदों और चल रहे भू-राजनीतिक जोखिमों से सोने को समर्थन मिलना है। इस बीच, बाजार की धारणा फेडरल रिजर्व के गवर्नर क्रिस्टोफर वालर की टिप्पणियों से प्रभावित हुई। उन्होंने बुधवार को अतिरिक्त ब्याज दर में कटौती का समर्थन किया, जबकि यह भी कहा कि नीति निर्माता सावधानी से आगे बढ़ सकते हैं। उनकी टिप्पणियां अमेरिकी श्रम डेटा के बाद आईं, जो आगे नरमी का संकेत दे रहा था। इसमें बेरोजगारी दर चार साल के उच्च स्तर पर पहुंच गई और नवंबर में नौकरियों में वृद्धि अक्टूबर में देखी गई नरमी की भरपाई करने में विफल रही। विदेशी बाजारों में हाजिर चांदी 0.25% घटकर 66.04 डॉलर प्रति औंस रह गई। पिछले सत्र में, चांदी 3.13 डॉलर यानी 4.91 प्रतिशत बढ़कर 66.88 डॉलर प्रति औंस के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गई थी।

राष्ट्रीय

संसद में परमाणु ऊर्जा में निजी भागीदारी वाला विधेयक पारित

राज्यसभा ने परमाणु ऊर्जा राज्य मंत्री के जवाब के बाद ध्वनिमत से दी गई मंजूरी, विपक्ष के संशोधनों को किया खारिज

नई दिल्ली, एजेंसी

संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान राज्यसभा को संबोधित करते राज्य मंत्री जितेंद्र सिंह।

संसद ने गुरुवार को परमाणु ऊर्जा क्षेत्र में निजी भागीदारी की अनुमति देने के प्रावधान वाले विधेयक को मंजूरी प्रदान कर दी। राज्यसभा ने भारत के रुपांतरण के लिए नाभिकीय ऊर्जा का संधारणीय दोहन और अभिवर्द्धन (शांति) विधेयक, 2025 को चर्चा एवं परमाणु ऊर्जा राज्य मंत्री जितेंद्र सिंह के जवाब के बाद ध्वनिमत से पारित कर दिया। उच्च सदन ने विपक्षी सदस्यों द्वारा पेश किए तमाम संशोधनों को भी ध्वनिमत से खारिज कर दिया। लोकसभा इस विधेयक को कल ही पारित कर चुकी है।

इससे पहले विधेयक पर चर्चा के दौरान जहां सत्ता पक्ष के सदस्यों ने विधेयक को ऐतिहासिक और 2047 तक भारत को विकसित देश बनाने के लक्ष्य को हासिल करने में महत्वपूर्ण करार दिया वहीं विपक्ष ने आरोप लगाया कि इसमें आपूर्तिकर्ता के उत्तरदायित्व का प्रावधान नहीं है तथा यह संवेदनशील क्षेत्र में निजी कॉरपोरेट समूहों के लिए रास्ता खोलने वाला है। जितेंद्र सिंह ने कहा कि इस विधेयक में कुछ ऐसे प्रावधान हैं, जो पहले भी थे, लेकिन सत्तापक्ष का विरोध करने के चक्कर में विपक्षी सदस्य अपने समय के प्रावधानों का ही विरोध कर देते हैं। परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र के लिए 37 हजार करोड़ रुपये से अधिक का बजट है। मंत्री ने कहा कि यदि हमने 2047 तक 100 गीगावाट स्वच्छ ऊर्जा का लक्ष्य रखा है तो पूरा करने में परमाणु क्षेत्र महत्वपूर्ण है। सिंह ने कहा कि आज की दुनिया में अलग-थलग रहने का दौर खत्म हो चुका है। उन्होंने कहा कि उन्हीं सुरक्षा उपायों को जारी रखा गया है जो प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के समय अमल में आए थे। सिंह ने कहा कि निजी क्षेत्र की भागीदारी होगी, लेकिन सुरक्षा का पूरा प्रबंध किया गया है। नुकसान की स्थिति में संचालक को भरपाई करनी होगी तथा परमाणु उत्तरदायित्व कोष होगा। उन्होंने कहा कि अब भारत अनुसरण नहीं करता है, बल्कि लोग भारत का अनुसरण करते हैं। सिंह ने कहा कि वह परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में नेहरू जी के योगदान को स्वीकार करते हैं। इससे पहले, सिंह ने विधेयक को सदन में चर्चा और पारित कराने के लिए रखते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ही इस तरह के बड़े फैसले ले सकते हैं।

राज्य मंत्री ने कहा कि यह एक ऐतिहासिक विधेयक है। संसद के इतिहास में वर्षों बाद कोई ऐसा क्षण आता है जब सदस्यों को ऐसा मौका मिलता है कि वे राष्ट्र की यात्रा को एक नयी दिशा दे सकें।'' उन्होंने कहा कि आने वाले समय में इस विधेयक को मील के पत्थर के रूप में उल्लेखित किया जाएगा। सिंह ने कहा, ''भारत की भौगोलिक स्तर पर भूमिका बढ़ रही है और ऐसे में हमें वैश्विक मानकों के अनुरूप होना होगा...दुनिया स्वच्छ ऊर्जा की तरफ बढ़ गयी है...बढ़ती ऊर्जा की जरूरतों को पूरा करने और 'आत्मनिर्भर भारत' के लक्ष्य को हासिल करने के लिए यह महत्वपूर्ण है।

विपक्ष ने की विधेयक को प्रवर समिति में भेजने की मांग

नई दिल्ली। राज्यसभा में विभिन्न विपक्षी दलों के सदस्यों ने परमाणु ऊर्जा विधेयक का विरोध करते हुए इसे व्यापक विचार-विमर्श के लिए प्रवर या स्थायी समिति में भेजने की मांग की। उच्च सदन में विपक्ष ने विरोध करते हुए इसे मानवता के खिलाफ बताया। बीआरएस सदस्य केआर सुरेश रेड्डी ने विधेयक को व्यापक चर्चा के लिए प्रवर समिति में भेजने की मांग की और कहा कि देश तेजी से आगे बढ़ रहा है और यहां औद्योगिकीकरण बढ़ा है इसलिए बिजली की मांग में तेजी भी आएगी। माकपा सदस्य एए रहीम ने इसे मानवता के खिलाफ बताया। सपा के रामगोपाल यादव ने आपूर्तिकर्ताओं की जवाबदेही तय करने की मांग की और कहा कि विभिन्न क्षेत्रों की तरह इस क्षेत्र में भी भविष्य में कुछ निजी कंपनियों का एकाधिकार हो जाएगा। बसपा के रामजी ने विधेयक को स्थायी समिति में भेजने की मांग की। भाजपा के जग्गेश ने विधेयक को भविष्य के लिए अहम बताया। शिवसेना (उबाठा) सदस्य प्रियंका चतुर्वेदी, राकांपा (एसपी) सदस्य फौजिया खान ने भी विधेयक का विरोध किया। भाजपा के परमार सालमसिंह ने विधेयक को दूर-दृष्टि वाला बताया। मनोनीत हर्षवर्धन श्रृंगला ने कहा कि देश को 15 साल से इस विधेयक की प्रतीक्षा थी।

प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्रियों को हटाने के प्रावधान वाले विधेयकों संबंधी समिति का कार्यकाल बढ़ा

प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्रियों और मंत्रियों को गंभीर आरोपों में लगातार 30 दिन तक हिरासत में रहने की स्थिति में पद से हटाने के प्रावधान वाले तीन विधेयकों पर विचार करने वाली संसदीय समिति को रिपोर्ट देने के लिए आगामी बजट सत्र के अंतिम सप्ताह के पहले दिन तक का समय दिया गया है। समिति की अध्यक्ष अपराजिता सारंगी ने लोकसभा में संविधान (130वां संशोधन) विधेयक, संघ राज्य क्षेत्र शासन (संशोधन) विधेयक और जम्मू कश्मीर पुनर्गठन (संशोधन) विधेयक के संबंध में यह प्रस्ताव रखा जिसे सदन ने ध्वनिमत से मंजूर कर लिया। गत 12 नवंबर को 31 सदस्यीय संयुक्त समिति का गठन किया गया था तथा भाजपा सांसद सारंगी को समिति का प्रमुख नियुक्त किया गया। लोकसभा सचिवालय के अनुसार इस समिति में लोकसभा के 21 और राज्यसभा के 10 सदस्य हैं। गृह मंत्री अमित शाह ने मानसून सत्र के आखिर में विपक्ष के विरोध और हंगामे के बीच सदन में सभी विधेयकों को पेश किया था।

हम वीडियो दिखाएंगे और आपसे पूछेंगे कि मानवता क्या होती है : न्यायालय

आवारा कुत्तों का मामला

नई दिल्ली, एजेंसी

उच्चतम न्यायालय ने याचिकाकर्ता द्वारा आवारा कुत्तों के साथ अमानवीय बर्ताव किए जाने की टिप्पणी पर गुरुवार को उससे कहा कि अगली सुनवाई पर एक वीडियो दिखाया जाएगा और आपसे पूछा जाएगा कि मानवता क्या होती है। आवारा कुत्तों के मामले में पैरवी कर रहे वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ को बताया कि मामले की सुनवाई के लिए गुरुवार को बैठने वाली तीन न्यायाधीशों की विशेष पीठ को रद्द कर दिया गया है।

न्यायमूर्ति नाथ ने कहा कि मामले पर अगली सुनवाई सात जनवरी को होगी। सिब्बल ने कहा कि समस्या यह है कि दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) ने इस बीच कुछ नियम बनाए हैं जो पूरी तरह विपरीत हैं। उन्होंने पीठ से मामले की सुनवाई शुक्रवार को करने का आग्रह करते हुए कहा कि अधिकारियों के पास कुत्तों के आश्रय स्थल भी नहीं हैं। जो किया जा रहा है वह बहुत अमानवीय है। न्यायमूर्ति मेहता ने आवारा कुत्तों की समस्या का संदर्भ देते हुए कहा कि अगली तारीख पर हम आपकी सुविधा के लिए वीडियो चलाएंगे और आपसे पूछेंगे कि मानवता क्या होती है। सिब्बल ने कहा कि वह भी यह दिखाने के लिए वीडियो चलाएंगे कि क्या हो रहा है। पीठ ने कहा कि वह इस पर 7 जनवरी को विचार करेगी।

भूमि अधिग्रहण की याचिका रद्द

उच्चतम न्यायालय ने गुरुवार को उज्जैन में महाकाल लोक परिसर के पार्किंग क्षेत्र की जगह बढ़ाने के लिए भूमि अधिग्रहण की कार्यवाही को चुनौती देने वाली याचिका पर विचार करने से इन्कार कर दिया। न्यायमूर्ति विक्रमनाथ और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ ने मध्य प्रदेश हाईकोर्ट के 11 जनवरी के आदेश के खिलाफ याचिका पर सुनवाई करते हुए यह आदेश पारित किया।

शराब घोटाला : सुनवाई जनवरी तक स्थगित

उच्चतम न्यायालय ने छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के बेटे की कथित शराब घोटाले में गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई गुरुवार को जनवरी तक के लिए स्थगित कर दी और कहा कि मामले को टुकड़ों में नहीं सुना जा सकता। ईडी द्वारा 18 जुलाई को गिरफ्तार किए गए चैतन्य बघेल ने धन शोधन निवारण अधिनियम के कुछ प्रावधानों को भी चुनौती दी है। प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ इस पर सुनवाई की।

स्कूली-उच्च शिक्षा संस्थानों में समन्वय की पहल

वीआईटी का मंथन 2025

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : विद्यालय-विश्वविद्यालय के अंतर को पाटने के लिए वीआईटी भोपाल विश्वविद्यालय ने शनिवार 13 दिसंबर को मंथन 2025 का आयोजन किया। यह कार्यक्रम हजरतगंज के महात्मा गांधी मार्ग स्थित क्लार्क्स अवध में हुआ। इसका उद्देश्य स्कूली शिक्षा और उच्च शिक्षा संस्थानों के बीच बेहतर सहयोग बनाना था।

मंथन 2025 में 70 विद्यालयों के प्रधानाचार्यों ने भाग लिया। स्कूली शिक्षा में उनके योगदान के लिए वीआईटी ने प्रधानाचार्यों को सम्मानित किया। उल्लेखनीय है कि वीआईटी भोपाल विवि शिक्षा, शोध और नवाचार के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए जाना जाता है। प्रसिद्ध लेखक, प्रेरक वक्ता, सामाजिक उद्यमी तथा डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम सेंटर के सह-संस्थापक एवं सीईओ सृजन पाल सिंह ने मंथन 2025- उज्ज्वल भविष्य के लिए अपनी यात्रा को प्रज्वलित करें विषय पर संबोधन दिया। इस दौरान शिक्षकों को आधुनिक शिक्षण पद्धतियों और तकनीक से जोड़ने, विद्यार्थियों की भागीदारी बढ़ाने को तकनीकी, गैर-तकनीकी और सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने तथा विद्यालयी पाठ्यक्रम को विवि की अपेक्षाओं के अनुसार बनाने जैसे विषयों पर चर्चा की गई।

इस कार्यक्रम ने विद्यालय प्रमुखों और विश्वविद्यालय प्रतिनिधियों को एक-दूसरे से विचार साझा करने और भविष्य में सहयोग के नए अवसर तलाशने का अवसर दिया। कार्यक्रम के माध्यम से वीआईटी विवि ने शिक्षा में नवाचार, अकादमिक सहयोग और शिक्षकों की क्षमता बढ़ाने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया।

दिल्ली में नो पीयूसी, नो फ्यूल नियम लागू

नई दिल्ली, एजेंसी

दिल्ली में बिगड़ते वायु प्रदूषण से निपटने को प्राधिकारियों द्वारा उठाए गए कदमों के तहत गुरुवार से दिल्ली के बाहर पंजीकृत गैर बीएस-6 निजी वाहनों के प्रवेश पर प्रतिबंध लागू हो गया और साथ ही उन वाहनों को पेट्रोल पंप पर ईंधन नहीं मिलेगा, जिनके पास प्रदूषण नियंत्रण प्रमाणपत्र (पीयूसी) नहीं हैं। पेट्रोल पंप वैध पीयूसी प्रमाणपत्र के बिना वाहनों को ईंधन नहीं दे रहे हैं और इसे स्वचालित नंबर प्लेट रीडर कैमरे, पंपों पर वॉयस अलर्ट और पुलिस की मदद से लागू किया जा रहा है।

जिन वाहनों के पास पीयूसी नहीं होगा, उन्हें पेट्रोल नहीं मिलेगा यानी नो पीयूसी, नो फ्यूल। दिल्ली की सीमाओं सहित 126 जांच चौकियों पर 580 पुलिस कर्मियों को तैनात किया गया है। इसके अतिरिक्त प्रभावी क्रियान्वयन के लिए परिवहन विभाग की कई प्रवर्तन टीम को पेट्रोल पंपों और सीमा चौकियों पर तैनात किया गया है।

कड़े उपायों के बावजूद वायु गुणवत्ता बिगड़ी

दिल्ली में गुरुवार को धुंध की चादर छा गई, जिससे पूरे शहर में दृश्यता कम हो गई और वायु प्रदूषण की स्थिति और खराब हो गई। 24 घंटे का औसत एक्यूआई बहुत खराब श्रेणी में रहा और इसका स्तर एक दिन पहले के 334 से बढ़कर 373 हो गया। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के समीर एप के अनुसार शहर में स्थित 40 वायु गुणवत्ता निगरानी केंद्रों में से 15 केंद्रों पर वायु गुणवत्ता गंभीर रही। आनंद विहार में सबसे अधिक 441 एक्यूआई दर्ज किया गया जो गंभीर-प्लस श्रेणी में आता है जबकि 24 केंद्रों पर वायु गुणवत्ता अत्यंत खराब दर्ज की गई।

कोहरे से दिल्ली हवाई अड्डे पर 27 उड़ानें रद्द

मुंबई। घने कोहरे और दृश्यता कम होने से गुरुवार को दिल्ली हवाई अड्डे पर विभिन्न एयरलाइन की 27 उड़ानें रद्द कर दी गईं और कई अन्य के परिचालन में देरी हुई। दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा लिमिटेड (डायल) के अधिकारी ने गुरुवार को बताया कि घने कोहरे और कम दृश्यता के कारण दिल्ली हवाई अड्डे पर 16 प्रस्थान और 11 आगमन से जुड़ी अब तक 27 उड़ानें रद्द हो चुकी हैं।

कोमा में पड़े व्यक्ति के अभिभावकों से मिलेंगे न्यायाधीश

उच्चतम न्यायालय ने 31-वर्षीय उस व्यक्ति के अभिभावकों से मिलने की गुरुवार को इच्छा जताई, जो 12 वर्षों से कोमा में है। शीर्ष अदालत व्यक्ति के पिता की उस याचिका पर विचार कर रही थी जिसमें उन्होंने कृत्रिम जीवन रक्षक प्रणाली को हटाकर पुत्र को निष्क्रिय इच्छा-मृत्यु का अनुरोध किया है। 2013 में इमारत की चौथी मंजिल से गिरने के बाद व्यक्ति के सिर में चोट लगी थी। तब से वह कृत्रिम जीवन रक्षक प्रणाली पर है। निष्क्रिय इच्छा-मृत्यु वह प्रक्रिया हैं, जिसमें मरीज का जीवन बचाने के लिए जीवन रक्षक उपकरण हटाकर वह स्थिति पैदा की जाती है, जिससे उसके प्राण निकल सकें।

वर्ल्ड ब्रीफ

नेपाल : जेन जी प्रदर्शन की जांच के लिए एक महीने का मांगा विस्तार

काठमांडू। नेपाल में जेन जी के विरोध प्रदर्शनों से जुड़े घटनाक्रम की जांच के लिए गठित आयोग ने सरकार से अपना कार्यकाल एक माह बढ़ाने का अनुरोध किया है। आयोग ने कहा है कि बयान दर्ज करने की प्रक्रिया पूरी करने के लिए अतिरिक्त समय की जरूरत है। आयोग के अध्यक्ष गौरी बहादुर कार्की ने बताया कि बुधवार को प्रधानमंत्री सुशीला कार्की के साथ हुई बैठक के दौरान आयोग के अधिकारियों ने समय सीमा बढ़ाने का अनुरोध किया। सुशीला कार्की सरकार ने 21 सितंबर को इस आयोग का गठन कर तीन महीने की समय सीमा तय की थी, जो अगले सप्ताह समाप्त होने वाली है। हालांकि बयान दर्ज करने की प्रक्रिया अभी भी जारी है।

बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री जिया की सेहत अब भी गंभीर

ढाका। बांग्लादेश की राजधानी ढाका के एक अस्पताल में पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया की हालत अब भी गंभीर बनी हुई है। बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) की 80 वर्षीय अध्यक्ष जिया कई स्वास्थ्य समस्याओं के कारण 23 नवंबर से ढाका के एवरकेयर अस्पताल में उपचाराधीन हैं। बाद में उन्हें कोरोनरी केयर यूनिट (सीसीयू) में स्थानांतरित कर दिया गया था। जिया के निजी डॉक्टर एवं बीएनपी की नीति निर्धारण संबंधी स्थायी समिति के सदस्य जाहिद हुसैन ने पत्रकारों को बताया कि 11 दिसंबर को उनके फेफड़ों और अन्य महत्वपूर्ण अंगों को आराम देने के लिए जिया को ऐच्छिक वेंटिलेटर सपोर्ट पर रखा गया ।

चीन की राजधानी में छाई धुंध, 215 पर पहुंचा एक्यूआई

बीजिंग। चीन की राजधानी बीजिंग में बृहस्पतिवार को धुंध छाई रही और एक्यूआई बढ़कर 215 पर पहुंच गया, जो बेहद अस्वास्थ्यकारी स्तर माना जाता है। बीजिंग में वर्षों तक हवा साफ करने के लिए अभियान चलाया गया, जिसके बाद प्रदूषण इतनी तेजी से बढ़ना दुर्लभ माना जा रहा है। चीन की राष्ट्रीय वेधशाला ने बुधवार को 'येलो अलर्ट' जारी करते हुए देश के कुछ हिस्सों में भारी धुंध फैलने का पूर्वानुमान जताया है। वेधशाला ने कहा कि हेबेई, बीजिंग, तियानजिन, हेनान, अनहुई, जियांग्सू, हुबेई, सिचुआन बेसिन और चोंगचिंग में बृहस्पतिवार को भारी धुंध छाई रहने का पूर्वानुमान है।

भारत ने ढाका में फिर शुरू किया वीजा केंद्र, दो अन्य केंद्र बंद किए

ढाका, एजेंसी

- **भारत विरोधी प्रदर्शनकारियों की धमकी के मद्देनजर उठाया कदम**

भारत ने बृहस्पतिवार को ढाका में अपने वीजा आवेदन केंद्र का संचालन फिर शुरू कर दिया। सुरक्षा संबंधी चिंताओं में वृद्धि के कारण एक दिन पहले इसे बंद कर दिया गया था। हालांकि, यही कारण बताते हुए अब बांग्लादेश के खुलना और राजशाही में स्थित इसी तरह के दो अन्य केंद्रों को बंद कर दिया गया है।

दक्षिण-पश्चिमी खुलना और उत्तर-पश्चिमी राजशाही में स्थित भारतीय वीजा आवेदन केंद्र (आईवीएसी) को सुरक्षा संबंधी चिंताओं के कारण बंद कर दिया गया था। बांग्लादेश में पांच आईवीएसी केंद्र हैं। ढाका, खुलना और राजशाही के अलावा, अन्य दो केंद्र पूर्वोत्तर बंदरगाह शहर चटोग्राम और सिलहट में स्थित हैं। ढाका के जमुना फ्यूचर पार्क में स्थित आईवीएसी राजधानी में सभी भारतीय वीजा सेवाओं के लिए मुख्य एकीकृत केंद्र है।

भारत विरोधी प्रदर्शनकारियों के एक बड़े समूह के भारतीय उच्चायोग की ओर बढ़ने के बाद तनाव बढ़ने के मद्देनजर, आईवीएसी के ढाका केंद्र को बुधवार को अस्थायी रूप से बंद करने की घोषणा की गई थी। ढाका केंद्र ने अपनी वेबसाइट पर कहा कि आईवीएसी ने बृहस्पतिवार को खुलना और राजशाही में स्थित अपने दोनों केंद्र बंद कर दिए हैं।

ऊर्जा क्षेत्र में भारत का बड़ा कदम

भारत सरकार की ओर से परमाणु ऊर्जा क्षेत्र में निजी और विदेशी भागीदारी की अनुमति देने के लिए लाए गए शांति विधेयक के जरिए स्वतंत्रता के बाद पहली बार निजी कंपनियों को परमाणु ऊर्जा संयंत्रों के निर्माण, स्वामित्व और संचालन की अनुमति दी जाएगी। निजी कंपनियां परमाणु ऊर्जा परियोजनाओं में 49% तक की हिस्सेदारी रख पाएंगी। नया कानून परमाणु ऊर्जा अधिनियम 1962 और सिविल लायबिलिटी फॉर न्यूक्लियर डैमेज एक्ट 2010 की जगह लेगा। विपक्ष की ओर से इस विधेयक को लेकर कई आशंकाएं जताने के साथ संवेदनशील क्षेत्र में निजी कॉर्पोरेट समूहों के लिए रास्ता खोलने का आरोप लगाया गया है, हालांकि दुनिया के कई देशों में परमाणु ऊर्जा क्षेत्र में निजी भागीदारी की अनुमति है। यह अलग बात है कि इन देशों में नियामकीय व्यवस्था बेहद कठोर है।

परमाणु ऊर्जा विधेयक

क्या हैं विशेषताएं

- विधेयक का उद्देश्य भारत की परमाणु ऊर्जा क्षमता को वर्तमान 8 गीगावाट से बढ़ाकर 2047 तक 100 गीगावाट करना है।
- विदेशी निवेश आकर्षित करने को बड़े रिएक्टरों के लिए ऑपरेटर का दायित्व बढ़ाकर सप्लायर्स पर बोझ कम किया है।
- परमाणु ऊर्जा नियामक बोर्ड को वैधानिक दर्जा दिया जाएगा, एक समर्पित परमाणु विवाद न्यायाधिकरण की स्थापना होगी।
- यूरेनियम खनन, परमाणु ईंधन संवर्धन और अपशिष्ट प्रबंधन जैसे संवेदनशील क्षेत्र पूरी तरह सरकारी नियंत्रण में रहेंगे।
- स्मॉल मॉड्यूलर रिएक्टर्स के अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देता है, बजट 2025-26 में 20,000 करोड़ का प्रावधान।

पुराने कानून के प्रावधान

- मूल अधिनियम के तहत परमाणु ऊर्जा का उत्पादन और संचालन केवल केंद्र सरकार या उसकी सरकारी कंपनियों तक सीमित था।
- संशोधन ने एनपीसीआईएल को अन्य सार्वजनिक उपक्रमों के साथ संयुक्त उद्यम बनाने की अनुमति दी, पर निजी क्षेत्र को दूर रखा।
- सीएलएनडी एक्ट 2010 परमाणु घटना की स्थिति में ऑपरेटर (सरकारी कंपनी) पर 1500 करोड़ तक का 'नो-फॉल्ट' दायित्व डालता है।
- दुर्घटना की स्थिति में विदेशी या निजी आपूर्तिकर्ताओं से क्षतिपूर्ति मांगने का प्रावधान जो विदेशी निवेश के रास्ते में बड़ी बाधा रहा है।

विदेशी निवेश पर आशंका

- आलोचकों का कहना है कि विदेशी नियंत्रण से स्वदेशी परमाणु कार्यक्रम, रणनीतिक निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्रभावित हो सकती है।
- विदेशी और निजी भागीदारी से संवेदनशील तकनीक और परमाणु सामग्री की सुरक्षा सुनिश्चित करने में जटिलता बढ़ सकती है।
- विदेशी कंपनियां स्थानीय हालात से अनभिज्ञ हो सकती हैं, एनपीसीआईएल जैसी पुरानी कंपनियों जैसा अनुभव उनके पास नहीं होगा।
- दुर्घटना होने पर विदेशी कंपनियां जिम्मेदारी से बचने की कोशिश करती हैं तो पीड़ितों को मुआवजा दिलाने में पेच फंस सकते हैं।

निजी कॉरपोरेट समूह

- नए बदलावों के तहत अब निजी कंपनियां परमाणु संयंत्रों का निर्माण, स्वामित्व और संचालन कर सकेंगी।
- कंपनियां छोटे मॉड्यूलर रिएक्टर जैसी आधुनिक तकनीकों में निवेश कर ऊर्जा पोर्टफोलियो बढ़ा सकेंगी।
- निजी ऑपरेटरों की देयता सीमित होगी, बड़े वित्तीय जोखिम सरकार या अंतरराष्ट्रीय फंडों पर साझा होंगे।
- भारतीय निजी समूह अब विदेशी तकनीक दिग्गजों के साथ सीधे रणनीतिक-तकनीकी सहयोग कर पाएंगे।

दूसरे देश

- अमेरिका में परमाणु संयंत्रों का स्वामित्व और संचालन निजी कंपनियों पर, हालांकि सख्त नियामक नियंत्रण।
- कनाडा-ब्रिटेन में भी निजी ऑपरेटरों को परमाणु संयंत्र चलाने की अनुमति दी गई है, फ्रांस में भी ऐसा कानून।

अमेरिका ताइवान को 10 अरब डॉलर के उन्नत हथियार बेचेगा, भड़का चीन

कहा- सफल नहीं होगी स्वतंत्र होने के लिए ताइवान की मदद की यह कोशिश

वाशिंगटन, एजेंसी

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के प्रशासन ने ताइवान को 10 अरब डॉलर से अधिक मूल्य के हथियारों की बिक्री के एक विशाल पैकेज की घोषणा की है, जिसमें मध्यम दूरी की मिसाइलें, होवित्जर तोपें और ड्रोन शामिल हैं। अमेरिका के इस कदम का कड़ा विरोध करते हुए चीन ने आक्रोश जताया है। चीन के विदेश मंत्रालय ने कहा है कि स्वतंत्र होने के लिए ताइवान की मदद करने की अमेरिका की यह कोशिश सफल नहीं होगी बल्कि उसे उल्टी पड़ेगी।

अमेरिकी विदेश विभाग ने बुधवार देर रात इन हथियार सौदों की घोषणा राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित संबोधन के दौरान की। अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने कहा कि ये हथियार बिक्री प्राप्तकर्ता देश के सशस्त्र बलों के आधुनिकीकरण के निरंतर प्रयासों का समर्थन और अमेरिका के राष्ट्रीय, आर्थिक और सुरक्षा हितों की पूर्ति करते हैं। चीन के विदेश मंत्रालय ने कड़ी आलोचना करते हुए कहा कि इससे चीन-अमेरिका के बीच हुए कूटनीतिक समझौतों का उल्लंघन होगा, चीन की संप्रभुता, सुरक्षा और क्षेत्रीय अखंडता को गंभीर नुकसान पहुंचेगा। चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता गुओ जियाकुन ने कहा, 'ताइवान स्वतंत्रता' की ताकतें बल के जरिए स्वतंत्रता हासिल करना और पुनःएकीकरण का विरोध करना चाहती हैं। वे ताइवान को बारूद के ढेर में बदलने की कीमत पर जनता की मेहनत की कमाई को हथियार खरीदने में बर्बाद कर रहे हैं।

ताइवान का इस्तेमाल कर हमें रोक नहीं पाएंगे: चीन

चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता गुओ जियाकुन ने कहा, हथियारों के जरिए ताइवान स्वतंत्रता का समर्थन करना अंततः अमेरिका के लिए ही उल्टा साबित होगा। ताइवान का इस्तेमाल कर चीन को रोकने की कोशिश सफल नहीं होगी। ताइवान के रक्षा मंत्रालय ने बृहस्पतिवार को जारी एक बयान में हथियारों की बिक्री को लेकर अमेरिका के प्रति आभार व्यक्त किया। मंत्रालय ने कहा कि इससे ताइवान को पर्याप्त आत्मरक्षा क्षमताएं बनाए रखने में मदद मिलेगी और मजबूत प्रतिरोधक क्षमता हासिल होगी। बयान में कहा गया कि ताइवान का अपनी रक्षा क्षमताओं को मजबूत करना क्षेत्रीय शांति और स्थिरता बनाए रखने की बुनियाद है।

यूक्रेन को भी यही हथियार दिए थे अमेरिका ने

आठ हथियार बिक्री समझौतों में 82 उच्च गतिशीलता वाली तोपखाना रॉकेट प्रणाली (हिमार्स) और 420 सैन्य सामरिक मिसाइल प्रणाली शामिल हैं। ये वही प्रणालियां हैं जैसी पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडन के प्रशासन के दौरान अमेरिका ने रूस के खिलाफ आत्मरक्षा के लिए यूक्रेन को प्रदान की थीं। इनकी कुल कीमत चार अरब डॉलर से अधिक बताई गई है। इसके अलावा इस पैकेज में 60 स्वचालित होवित्जर प्रणालियां और उनसे जुड़े उपकरण भी शामिल हैं, जिनकी कीमत भी चार अरब डॉलर से अधिक है। साथ ही ड्रोन की बिक्री लगभग एक अरब डॉलर से अधिक मूल्य की बताई गई है। अन्य सौदों में एक अरब डॉलर से अधिक मूल्य का सैन्य सॉफ्टवेयर, 70 करोड़ डॉलर से अधिक के जैवेलिन और टीओडब्ल्यू मिसाइल, 9.6 करोड़ डॉलर के हेलीकॉप्टर के पुर्जे और हार्पून मिसाइलों के लिए 9.1 करोड़ डॉलर की नवीनीकरण किट शामिल हैं।

बेहाल दिल्ली

राष्ट्रीय राजधानी में भीषण वायु प्रदूषण के बीच गुरुवार शाम धुंध की चादर छा जाने से सैकड़ों वाहन जाम में फंस गए। इस बीच गैर बीएस-6 वाहनों के प्रवेश पर प्रतिबंध लागू हो गया है जिसके बाद दिल्ली पुलिस ने पूरे शहर में प्रवर्तन को तेज कर दिया है।

सीमा संघर्ष में अब तक 18 कंबोडियाई नागरिकों की मौत

नोम पेन्ह। कंबोडिया और थाईलैंड के बीच सीमा पर जारी झड़पों के बीच कंबोडिया के आंतरिक मंत्रालय के प्रवक्ता टच सोखक ने गुरुवार सुबह बताया कि बुधवार शाम 6 बजे तक संघर्ष में मारे गए कंबोडियाई नागरिकों की संख्या 18 तक पहुंच गई है और घायलों की संख्या 78 हो गई है।

सोखक ने कहा कि विस्थापितों की संख्या बढ़कर 1,44,066 परिवारों तक पहुंच गई है, जिसमें 4,76,179 व्यक्ति शामिल हैं। इनमें 2,40,000 से अधिक महिलाएं और लगभग 1,30,000 बच्चे हैं। कंबोडियाई रक्षा मंत्रालय की प्रवक्ता लेफ्टिनेंट जनरल माली सोचेता ने कहा कि बुधवार आधी रात से गुरुवार सुबह तक, थाई सैन्य बलों ने कंबोडियाई क्षेत्र में कई ठिकानों पर हमले किए। कंबोडिया-थाईलैंड सीमा विवाद सात दिसंबर से फिर से भड़क गया है।

राष्ट्र के नाम संदेश में ट्रंप ने किया अपना गुणगान

न्यूयॉर्क/वाशिंगटन, एजेंसी

- **अपनी आर्थिक और आव्रजन संबंधी उपलब्धियों की तारीफ की, महंगाई का दोष बाइडन पर मढ़ा**

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने साल के अंत में व्हाइट हाउस से राष्ट्र के नाम दिए गए संबोधन में आप्रवासन और आठ युद्ध रुकवाने में अपने प्रशासन की सफलताएं गिनाईं। उन्होंने आर्थिक और आव्रजन संबंधी अपने कई निर्णयों का उपलब्धियों के तौर पर उल्लेख किया और देश में कीमतें बढ़ने और अवैध आव्रजन का दोष अपने पूर्ववर्ती जो बाइडन पर मढ़ दिया।

ट्रंप ने बुधवार को राष्ट्र के नाम 19 मिनट के संबोधन में कहा, 11 महीने पहले, मैंने एक गड़बड़ी का पता लगाया, और मैं इसे ठीक कर रहा हूं। ट्रंप ने इस वर्ष जनवरी में अपने दूसरे कार्यकाल की शुरुआत के बाद से अपने प्रशासन की उपलब्धियां गिनाईं, जिसमें सीमा को सुरक्षित करना, विपरीत प्रवासन, महंगाई कम करना, संघर्षों को समाप्त करना, शुल्क का उपयोग करके देश के लिए अरबों डॉलर अर्जित करना, रोजगार सृजन को बढ़ावा देना और आप्रवासन पर कड़ी कार्रवाई करना शामिल है। उन्होंने कहा, मैंने अमेरिकी ताकत को पुनर्स्थापित किया, 10 महीने में आठ युद्ध समाप्त किए, ईरान के परमाणु खतरे को नष्ट किया और गाजा में युद्ध पर विराम लगाया, जिसके चलते 3,000 साल में पहली बार पश्चिम एशिया में शांति आई। मैंने मृत या जीवित अवस्था में बंधकों की रिहाई सुनिश्चित की।

भारत-नीदरलैंड रक्षा व उद्योग के क्षेत्र में बढ़ाएंगे साझेदारी

नई दिल्ली, एजेंसी

- **दोनों देशों के बीच आशय पत्रों का आदान-प्रदान किया गया**

भारत और नीदरलैंड ने रक्षा क्षेत्र में साझेदारी और रक्षा प्रौद्योगिकी तथा उद्योग के क्षेत्र में सहयोग बढाने के लिए गुरुवार को यहां आशय पत्रों का आदान-प्रदान किया। इस अवसर पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और नीदरलैंड के विदेश मंत्री डेविड वैन वील मौजूद थे।

सिंह ने यहां वैन के साथ वार्ता की और दोनों देशों के बीच मजबूत तथा बढ़ती रक्षा साझेदारी की पुष्टि की। दोनों मंत्रियों ने रक्षा उपकरणों के सह-विकास और सह-उत्पादन के लिए प्राथमिकता वाले क्षेत्रों सहित कई द्विपक्षीय सुरक्षा और रक्षा मुद्दों पर चर्चा की। उन्होंने रणनीतिक साझेदारी के एक प्रमुख स्तंभ के रूप में रक्षा सहयोग विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करते हुए सैन्य-से-सैन्य सहयोग बढ़ाने की प्रतिबद्धता की पुष्टि की। बातचीत के दौरान दोनों देशों ने स्वतंत्र, खुले, समावेशी और नियम-आधारित हिन्द प्रशांत क्षेत्र के प्रति साझा प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला। मंत्रियों ने घनिष्ठ रक्षा साझेदारी और दोनों देशों के रक्षा उद्योगों को खासकर विशिष्ट प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जोड़ने की जरूरत पर जोर दिया।

दोनों मंत्रियों की उपस्थिति में रक्षा सचिव राजेश सिंह और भारत में नीदरलैंड की राजदूत मारिसा गेराड्र्स ने रक्षा सहयोग पर आशय पत्र का आदान-प्रदान किया । दोनों देशों ने प्रौद्योगिकी सहयोग, प्लेटफॉर्म और उपकरणों के सह-उत्पादन तथा सह-विकास के लिए रक्षा औद्योगिक रोडमैप विकसित करके पहचाने गए क्षेत्रों में रक्षा सहयोग की संभावनाओं का पता लगाने का इरादा जताया।

एपस्टीन विवाद से सुर्खियों में आए बोंगिनो देंगे इस्तीफा

वाशिंगटन। संघीय जांच ब्यूरो (एफबीआई) के उप निदेशक डैन बोंगिनो ने बुधवार को कहा कि वह अगले महीने इस्तीफा दे देंगे, जिससे उनका छोटा लेकिन उथलपुथल भरा कार्यकाल समाप्त हो जाएगा।

उनके कार्यकाल के दौरान अमेरिकी निवेशक एंव यौन अपराधी जेफरी एपस्टीन की फाइलों को लेकर न्याय विभाग के साथ उनका टकराव हुआ। बोंगिनो के इस्तीफे की पहले से ही उम्मीद थी और उनका इस्तीफा ट्रंप प्रशासन के सबसे चर्चित इस्तीफों में से एक होगा। यह घटनाक्रम ऐसे समय में सामने आया है जब एफबीआई नेतृत्व को निदेशक काश पटेल द्वारा सरकारी विमान का निजी इस्तेमाल करने और सक्रिय जांच के बारे में सोशल मीडिया पर पोस्ट करने को लेकर आलोचनाओं का सामना करना पड़ रहा है। एफबीआई में दूसरे महत्वपूर्ण पद के लिए बोंगिनो का चयन हमेशा से ही अपरंपरागत रहा है।

छत्तीसगढ़ में बीएसएफ के जवान ने गोली मारकर की आत्महत्या

नारायणपुर। छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित नारायणपुर जिले के अबूझमाड़ क्षेत्र में बीएसएफ के एक जवान ने होरादी कैंप में आत्महत्या कर ली। मृतक जवान की पहचान कांस्टेबल सचिन कुमार के रूप में हुई है, जो उत्तर प्रदेश के बागपत जिले के सिंगोली गांव के निवासी थे।

जवान ने अपनी सर्विस राइफल से खुद को गोली मार ली। पुलिस अधीक्षक कार्यालय से गुरुवार को मिली जानकारी के अनुसार, यह घटना होरादी कैंप परिसर में घटित हुई। गोली चलने की आवाज सुनते ही अन्य जवान मौके पर पहुंचे, जहां सचिन कुमार को गंभीर अवस्था में पाया गया। अधिकारियों को सूचना दी गई लेकिन तब तक उनकी मृत्यु हो चुकी थी। घटना से पूरे कैंप में शोक और स्तब्धता का माहौल है।

एआई सबसे बड़ा खतरा दफ्तर की नौकरियों के लिए

नई दिल्ली, एजेंसी

केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के सचिव एस कृष्णन ने बृहस्पतिवार को कहा कि कृत्रिम मेधा (एआई) से कार्योंलयों में काम करने वालों की नौकरियों को सबसे अधिक खतरा है। उद्योग मंडल फिक्की के 'एआई इंडिया' सम्मेलन में कृष्णन ने कहा कि चूंकि एआई अब सीधे तौर पर सोच-विचार कर किए जाने वाले और विश्लेषण से जुड़े कार्यों को चुनौती दे रहा है, इसलिए कार्योलयों में काम करने वाली कर्मचारियों की नौकरी पर सबसे अधिक खतरा मंडरा रहा है।

- **फिक्की के एआई इंडिया सम्मेलन में बोले सूचना प्रौद्योगिकी सचिव**

सूचना प्रौद्योगिकी सचिव ने कहा, पिछली औद्योगिक क्रांतियों को देखें तो उनमें अधिकतर बदलाव शारीरिक और लोगों द्वारा किए जाने वाले काम को स्वचालित करने के थे। पहली बार एआई सोचसमझकर किए जाने वाले काम की जगह ले रहा है। इसलिए जो लोग सोच-विचार से जुड़े या विश्लेषण से जुड़े काम करते हैं उन्हीं की नौकरी पर सबसे अधिक खतरा है।

उन्होंने तर्क दिया कि कौशल विकास के माध्यम से नए रोजगार के अवसर उत्पन्न करने की क्षमता, वर्तमान में नौकरियों को हो रहे नुकसान कहीं अधिक है। सचिव ने कहा, कई कंपनियों के लिए तात्कालिक प्रलोभन यह हो सकता है कि वे शुरुआती सफलताओं पर ध्यान दें और भविष्य में आने वाली दीर्घकालिक समस्याओं को भूल जाएं लेकिन सरकार के रूप में हम इस मामले के दोनों पहलुओं को लेकर चिंतित हैं।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 19 दिसंबर, शुक्रवार 2025 संवत-2082, शक संवत 1947 मास- पौष, पक्ष-कृष्ण पक्ष, अमावस्या पूर्ण रात्रि तक।

आज का पंचांग

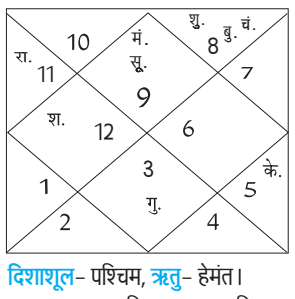

दिशाशूल- पश्चिम, **ऋतु**- हेमंत।
चन्द्रबल- वृषभ, मिथुन, कन्या, वृश्चिक, मकर, कुंभ।
ताराबल- अश्विनी, भरणी, रोहिणी, आर्द्रा, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, हस्त, स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, श्रवण, शतभिषा, उत्तराभाद्रपद, रेवती।
नक्षत्र-ज्येष्ठा 22.51 तक तत्पश्चात मूल।

मेष - आज थकान की वजह से आप अपने कार्यों में अधिक ध्यान नहीं दे पाएंगे। धन से जुड़े मामलों में लापरवाही करना उचित नहीं है। अनावश्यक खर्चों को लेकर परेशान हो सकते हैं। अपने आसपास के लोगों से सावधान रहें।

वृष - आज दिन का शुरुआती भाग अत्यंत शुभ रहेगा। बुरी नीयत वाले लोगों से सावधान रहें। विद्युत उपकरणों का प्रयोग सावधानी से करें। जिस किसी बात से आप प्रसन्न होंगे, उसी बात पर आपको दुखी होना पड़ेगा।

मिथुन - आज दिन अत्यंत शुभ एवं उत्साहवर्धक रहेगा। आय के नए स्रोत विकसित हो सकते हैं। शेयर मार्केट से बड़ा लाभ हो सकता है। अपने काम दूसरों पर डालने से बचें। अविवाहितों के विवाह संबंधी बात आगे बढ़ सकती है।

कर्क - आज व्यापार में अपेक्षा से अधिक लाभ होगा। लोग आपके विचारों से सहमत होंगे। अपने खर्चों पर धीरे-धीरे नियंत्रण पा लेंगे। प्रेमी जन के साथ आप अच्छा समय बिताएंगे। उच्चाधिकारी आपसे अत्यंत प्रसन्न रहेंगे।

सिंह - आज व्यर्थ की बातों पर ज्यादा समय बर्बाद न करें। प्रशासन से जुड़े लोगों के लिए दिन कुछ उतार-चढ़ाव भरा रहेगा। आपके स्वाभिमान को ठेस पहुंच सकती है। धैर्य और संयम के साथ काम करें। किसी पर भी आवश्यकता से अधिक विश्वास न करें।

कन्या - आज आपकी व्यवहार कुशलता की प्रशंसा होगी। अपने काम का विस्तार करने का विचार बनाएंगे। आप किसी सामाजिक कार्यक्रम में सम्मिलित हो सकते हैं। पर्यटन व्यवसाय से जुड़े लोगों को बड़ी व्यापारिक डील मिल सकती है।

तुला - आज अधिकारी वर्ग की आज्ञा का उल्लंघन न करें। सामाजिक सम्मान में वृद्धि होगी। शाम को तनाव से राहत मिल सकती है। कार्यक्षेत्र में सहकर्मी आपके साथ दुर्व्यवहार कर सकते हैं। नए कार्यों की शुरुआत करना उचित नहीं है।

वृश्चिक - आज आपको नई जॉब ऑफर हो सकती है। कड़ी मेहनत का उत्तम परिणाम मिलेगा। छोटी-मोटी गलतियों को सुधारने का प्रयास करें। अपनी प्रतिभा को विकसित करने में सफल रहेंगे। सम्मानित लोगों के बीच आपकी पैठ मजबूत होगी।

धनु - आज अपने प्रतिद्वंद्वियों को हल्के में न लें। आपका मन उदास हो सकता है। व्यवसाय में अपेक्षित परिणाम न मिलने के कारण कुछ बदलाव को लेकर सोच सकते हैं। विवाहेतर संबंधों से दूर रहें। परिवार व समाज में प्रतिष्ठा की चिंता रहेगी।

मकर - आज धार्मिक कार्यों में आप भाग लेंगे। आपकी एकाग्रता में वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। व्यापार में नए अनुबंध होने की संभावना बन रही है। सभी तरफ से शुभ समाचार मिलेंगे। इससे आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

कुंभ - आज आय के साधनों में वृद्धि होगी। परिजनों के साथ अपने मन की बातें शेयर करेंगे। बच्चों के साथ पिकनिक की योजना बना सकते हैं। विवाह योग्य लोगों को उत्तम प्रस्ताव मिलेंगे। अपनी कार्यशैली से संतुष्ट रहेंगे। प्रेम संबंधों में नजदीकी बढ़ेगी।

मीन - आज आपके सद्गुणों की लोग प्रशंसा करेंगे। घर की बातें बाहर वालों से शेयर न करें। होटल व्यवसाय से जुड़े लोगों को उत्तम धन लाभ होगा। उच्च शिक्षा में सफलता मिलेगी। गुरुजनों से चर्चा और विचार-विमर्श करके नया काम शुरू करें।

सुडोकू -6

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

	3				2	9		
7		8			3			
	1		7		4		5	3
2				6	1		3	
	5						1	
	4		2	8				7
3	2		9		8		6	
			5			2		1
		4	1				8	

सुडोकू - 5 का हल

4	8	5	6	3	9	7	1	2
3	6	9	2	7	1	5	8	4
2	1	7	8	4	5	6	9	3
1	7	3	4	9	6	2	5	8
6	5	8	3	1	2	4	7	9
9	2	4	5	8	7	1	3	6
7	4	2	9	5	8	3	6	1
8	3	1	7	6	4	9	2	5
5	9	6	1	2	3	8	4	7

जसप्रीत बुमराह बेमिसाल मैच विजेता हैं व उनके कार्यभार का प्रबंध करना बेहद जरूरी है। तेज गेंदबाजी शायद इस खेल का सबसे मुश्किल कौशल है और बुमराह इसे बेहद तेज गति से और चुनौतीपूर्ण एक्शन के साथ करते हैं। उम्मीद है कि वह विश्व कप तक निरंतरता बनाए रखेंगे।

-रॉबिन उथप्पा

स्टेडियम

लखनऊ, शुक्रवार, 19 दिसंबर 2025

अमृत विचार

www.amritvichar.com

हाईलाइट

आईपीएल सत्र के लिए उपलब्ध नहीं होंगे जॉश इंग्लिस

सिडनी। अप्रैल में शादी करने जा रहे लखनऊ सुपर जायंट्स के ऑस्ट्रेलियाई विकेटकीपर जॉश इंग्लिस 26 मार्च से 31 मई तक खेले जाने वाले टूर्नामेंट इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2026 के पूरे सत्र में उपलब्ध नहीं रहेंगे। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2026 की छोटी नीलामी में लखनऊ सुपर जायंट्स ने जॉश इंग्लिस को 8.6 करोड़ रूपये में खरीदा था। इंग्लिस ने बताया कि वह अप्रैल में शादी करने जा रहे हैं। इंग्लिस ने एबीसी स्पोर्ट से कहा मैंने आईपीएल नीलामी देखी और मेरी बारी देर से आई। मैं इस साल पूरे सीजन उपलब्ध नहीं रह पाऊंगा। मैं अप्रैल की शुरुआत में शादी करने जा रहा हूं। सच कहूं तो मुझे उम्मीद नहीं थी कि मुझे खरीदा जाएगा।

टाइगर्स ऑफ कोलकाता से जुड़े गांगुली

कोलकाता। पूर्व भारतीय कप्तान सौरव गांगुली इंडियन स्ट्रीट प्रीमियर लीग (आईएसपीएल) के तीसरे सत्र से पूर्व सह मालिक और मेंटर के रूप में टाइगर्स ऑफ कोलकाता के साथ जुड़ गए। लीग का अगला सत्र सूरत में नौ जनवरी से छह फरवरी तक खेला जाएगा। आईएसपीएल का टी10 टेनिस गेंद प्रारूप गली क्रिकेट से जुड़ा है। इसका लक्ष्य गली स्तर के प्रतिभावान खिलाड़ियों की काबिलियत को एक टिकाऊ और लंबे समय तक चलने वाले क्रिकेटिंग सफर में बदलना है। गांगुली ने कहा मैं इस नई यात्रा को शुरू करने के लिए उत्साहित हूं। टेनिस गेंद क्रिकेट हमेशा से खेल की जड़ों के करीब रहा है। यह बुनियाद पूरे कोलकाता और विशेष रूप से पूर्व में बहुत मजबूत है।

चोटरानी व सूरज की जीत के साथ शुरुआत

मुंबई। शीर्ष वरीय वीर चोटरानी और दूसरे वरीय सूरज चंद ने बृहस्पतिवार को यहां सीसीआई वेस्टर्न इंडिया स्क्वाश टूर्नामेंट में अपने अभियान की शुरुआत जीत के साथ की। खिताब के प्रबल दावेदार चोटरानी ने अयान खान को 11-1, 11-1, 11-1 से हराकर राउंड ऑफ 32 में जगह बनाई। सूरज ने अजिंक्य पाटिल को 11-4, 11-4, 11-3 से हराया। लड़कों के अंडर-15 वर्ग में दूसरे वरीय यूसुफ पारदीवाला ने अर्जुन पारसरामपुरिया को 11-3, 11-7, 11-7 से हराकर अंतिम आठ में जगह बनाई। लड़कों के अंडर-17 वर्ग के अगस्त्य बंसल ने हर्ष बंसाल को 11-5, 11-6, 11-6 से हराकर क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया।

अल्कराज ने कोच फेरेरो से नाता तोड़ा

मैड्रिड। दुनिया के नंबर वन टेनिस खिलाड़ी कार्लोस अल्कराज ने अपने कोच जुआन कार्लोस फेरेरो के साथ चली आ रही सात साल की साझेदारी को समाप्त कर दिया है। नये साल की शुरुआत से सैमुअल लोपेज, अल्काराज के नये कोच होंगे। 22 साल के स्पेनिश खिलाड़ी ने फेरेरो के साथ तब काम करना शुरू किया था जब वह 15 साल के थे। फेरेरो के मार्गदर्शन में वह रैंकिंग में शीर्ष पर पहुंचे और कुल छह ग्रैंड स्लैम खिताब और 22 टूर्नामेंट जीते। अल्काराज ने बुधवार को सोशल मीडिया मंच पर जारी एक बयान में बताया हम शीर्ष पर पहुंचने में कामयाब रहे हैं।

शृंखला जीतने उतरेगा भारत सूर्यकुमार पर होगी निगाह

दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पांचवां व अंतिम टी-20 मैच आज शाम 7 बजे से

कप्तान सूर्यकुमार यादव।

अहमदाबाद, एजेंसी

चयन को लेकर उठे सवालों और कुछ कमजोरियों के उजागर होने के बीच भारत शुक्रवार को यहां होने वाले पांचवें और अंतिम टी20 अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैच में जीत दर्ज करके दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ चुनौतीपूर्ण शृंखला का सकारात्मक अंत करने की कोशिश करेगा।

टेस्ट शृंखला में 0-2 से हारने के बाद भारत ने शानदार वापसी करते हुए वनडे शृंखला जीती। अब उसने टी20 शृंखला में 2-1 की अजेय बढ़त बना ली है, क्योंकि बुधवार को लखनऊ में खराब मौसम के कारण चौथा मैच रद्द कर दिया गया था।

यह सुनिश्चित है कि भारत अब इस शृंखला को हार नहीं सकता है जो मुख्य कोच गौतम गंभीर के लिए राहत की बात होनी चाहिए क्योंकि टीम के दो प्रमुख खिलाड़ी सूर्यकुमार यादव तथा टेस्ट और वनडे कप्तान शुभमन गिल पिछले कुछ समय से रन बनाने के लिए जूझ रहे हैं। कुछ समय पहले तक विश्व के नंबर एक खिलाड़ी रहे सूर्यकुमार की फॉर्म भारत के लिए सबसे बड़ी चिंता का विषय है। उन्होंने टी20 में इस साल 20 मैचों में 18 पारियों में एक भी अर्धशतक नहीं बनाया। इस दौरान उन्होंने 14.20 के औसत से 213 रन बनाए।

गिल का छोटे प्रारूप में नहीं चल पाना भी भारत के लिए अगले साल के शुरू में होने वाले टी20 विश्व कप से पहले चिंता का विषय होगा। वह पिछले मैच में अभ्यास के दौरान चोटिल हो गए थे जिससे उनका अंतिम मैच में खेलना संदिग्ध है। भारतीय टीम किसी तरह का जोखिम लेना उचित नहीं समझेगी क्योंकि उसके पास शीर्ष क्रम में संजू सैमसन के रूप में एक अच्छा विकल्प मौजूद है। सैमसन निचले क्रम में बल्लेबाजी के लिए कभी भी सही विकल्प नहीं थे। उन्होंने सलामी बल्लेबाज के रूप में अच्छा प्रदर्शन किया है जबकि मध्यक्रम में वह अपेक्षित प्रदर्शन नहीं कर पाए हैं। उन्होंने अपने तीनों टी20 अंतरराष्ट्रीय शतक शीर्ष क्रम पर खेलते हुए बनाए हैं।

अंतिम मैच में गिल की अनुपलब्धता की स्थिति में मौका मिलने पर केरल का यह विकेटकीपर-बल्लेबाज इसका पूरा फायदा उठाने की कोशिश करेगा। इसके अलावा भारतीय टीम संतुलित नजर आती है, क्योंकि दोनों ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या और शिवम दुबे अब तक खेले गए तीनों मैचों में अंतिम एकादश में शामिल रहे हैं। तेज गेंदबाजी आक्रमण में अर्शदीप सिंह अपनी लय में आ रहे हैं जबकि हर्षित राणा ने भी अच्छा प्रदर्शन किया है। इस बीच निजी कारणों से तीसरे टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में नहीं खेल पाने वाले जसप्रीत बुमराह चौथे मैच से पहले टीम से जुड़ गए हैं। यहां की पिच बल्लेबाजी के लिए अनुकूल मानी जाती है जो इस श्रृंखला में भारत के सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज वरुण चक्रवर्ती (छह विकेट) के लिए चुनौती पेश करेगी। जहां तक दक्षिण अफ्रीका का सवाल है तो उसके बल्लेबाजों का प्रदर्शन उतार चढ़ाव वाला रहा है। अगर उसे श्रृंखला बराबर करनी है तो उसके बल्लेबाजों को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होगा।

दक्षिण अफ्रीका की टीम रीजा हेंड्रिक्स की जगह एडेन मार्क्रम को शीर्ष क्रम में वापस लाने पर विचार कर सकती है। रीजा हेंड्रिक्स इस दौरे पर अपनी लय हासिल नहीं कर पाए हैं। दक्षिण अफ्रीका को इसके अलावा युवा बल्लेबाज डेवाल्ड ब्रेविस से भी अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद रहेगी जो अभी तक अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतरे हैं। दक्षिण अफ्रीका को मार्को यानसन की आक्रामक पारियों की कमी भी खली है, लेकिन लुंगी एनगिडी और ओटनेल बार्टमैन ने गेंदबाजी में अच्छा प्रदर्शन किया है।

अहमदाबाद में सरदार वल्लभभाई पटेल एयरपोर्ट पर पहुंचे पर दक्षिण अफ्रीका के क्विंटन डी कॉक (मध्य) व टीम के अन्य सदस्य।

चोटिल शुभमन गिल भी पहुंचे अहमदाबाद

अहमदाबाद : शुभमन गिल दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पांचवें और आखिरी टी20 मैच के लिए यहां पहुंच गए हैं हालांकि चौथे मैच से पहले लगी चोट के कारण उनका खेलना संदिग्ध माना जा रहा है। गिल का नेट्स पर लगी चोट के कारण लखनऊ में चौथे टी20 से बाहर होना तय था लेकिन खराब मौसम के कारण मैच ही रद्द हो गया। यह देखना होगा कि खराब फॉर्म से जूझ रहे गिल शुक्रवार को चौथे मैच के लिये उपलब्ध होंगे या नहीं या उनकी जगह संजू सैमसन को उतारा जायेगा। गिल इससे पहले गर्दन की चोट के कारण दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टेस्ट सीरीज में भी अधिकांश समय बाहर रहे थे।

टीम

भारत : सूर्यकुमार यादव (कप्तान), शुभमन गिल, संजू सैमसन (विकेटकीपर), जितेश शर्मा, अभिषेक शर्मा, तिलक वर्मा, शिवम दुबे, हार्दिक पंड्या, शाहबाज अहमद, वाशिंगटन सुंदर, अर्शदीप सिंह, जसप्रीत बुमराह, हर्षित राणा, कुलदीप यादव, वरुण चक्रवर्ती।

दक्षिण अफ्रीका : एडेन मार्क्रम (कप्तान), डेवाल्ड ब्रेविस, क्विंटन डी कॉक (विकेटकीपर), रीजा हेंड्रिक्स, डेविड मिलर, ट्रिस्टन स्टब्स, कॉर्बिन बॉश, डोनोवन फरेरा, मार्को यानसन, जॉर्ज लिंडे, ओटनील बार्टमैन, केशव महाराज, लुंगी एनगिडी, एनरिक नोर्किया, लूथो सिपाम्ला।

इंग्लैंड की टीम फिर मुश्किल में

एडिलेड, एजेंसी

एडिलेड टेस्ट

- **213 रनों पर गंवाए 8 विकेट अभी ऑस्ट्रेलिया से 158 रन पीछे**
- **नेथन लियोन ने रिकॉर्डतोड़ प्रदर्शन कर मैकग्रा को पीछे छोड़ा**

नेथन लियोन के रिकॉर्डतोड़ प्रदर्शन और इस मैच में वापसी करने वाले कप्तान पैट कमिंस की शानदार गेंदबाजी से ऑस्ट्रेलिया ने इंग्लैंड के खिलाफ तीसरे एशेज क्रिकेट टेस्ट के दूसरे दिन गुरुवार को यहां अपना पलड़ा भारी रखा। इंग्लैंड ने दूसरे दिन का खेल समाप्त होने तक अपनी पहली पारी में आठ विकेट पर 213 रन बनाए हैं और वह ऑस्ट्रेलिया से 158 रन पीछे है। ऑस्ट्रेलिया ने अपनी पहली पारी में 371 रन बनाए थे।

इंग्लैंड का दारोमदार कप्तान बेन स्टोक्स पर टिका है जो 151 गेंद पर 45 रन बनाकर खेल रहे हैं। उनके साथ दूसरे छोर पर खड़े जोफ्रा आर्चर ने 30 रन बनाए हैं। इंग्लैंड का स्कोर एक समय आठ विकेट पर 168 रन था और लग रहा था कि उसकी पहली पारी दूसरे दिन ही समाप्त हो जाएगी लेकिन स्टोक्स और आर्चर दिन के अंतिम 14 ओवर में कोई विकेट नहीं गिरने दिया। इन दोनों ने अभी तक नौवें विकेट के लिए 45 रन जोड़े हैं। इससे पहले ऑस्ट्रेलिया ने सुबह अपनी पहली पारी आठ विकेट पर 326 रन से आगे बढ़ाई। आर्चर (53 रन देकर पांच विकेट) ने मिचेल स्टार्क (54 रन) को बोल्ड और लियोन (09) को पगबाधा आउट करके पारी में पांच विकेट पूरे किए। स्कॉट बोलैंड 21 गेंदों पर 14 रन बनाकर नाबाद रहे। लियोन ने अपने पहले ही ओवर में दो विकेट लेकर ऑस्ट्रेलिया की सर्वकालिक सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी सूची में मैकग्रा को पीछे छोड़ते हुए दूसरा स्थान हासिल कर लिया। उन्होंने अब तक 51 रन देकर दो विकेट लिए हैं। कमिंस ने 54 रन देकर तीन जबकि बोलैंड ने 31 रन देकर दो विकेट लिए हैं। इस श्रृंखला में सर्वाधिक विकेट लेने वाले स्टार्क को 12 ओवर में अभी तक कोई विकेट नहीं मिला है।

इंग्लैंड ने सहज शुरुआत की और एक समय उसका स्कोर बिना किसी नुकसान के 37 रन था।

कमिंस ने जैक क्रॉली (09) को आउट करके श्रृंखला का अपना पहला विकेट लिया। इससे इंग्लैंड की पारी लड़खड़ा गई और उसने 15 गेंद और पांच रन के अंदर तीन विकेट गंवा दिए। ऑफ स्पिनर लियोन को 10वें ओवर में गेंद सौंपी गई। उन्होंने चार गेंदों के अंदर ओली पोप (03) और बेन डकेट (29) को आउट कर दिया, जिससे इंग्लैंड का स्कोर तीन विकेट पर 42 रन हो गया। उन्होंने पोप को एक घूमती हुई गेंद पर आगे बढ़कर खेलने के लिए मजबूर किया और उनके शॉट को जोश इंग्लिस ने मिडविकेट पर डाइव लगाते हुए कैच कर दिया। इससे उन्होंने तेज गेंदबाज मैकग्रा के 563 टेस्ट विकेटों की बराबरी कर ली।

इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स। एजेंसी

हरमनप्रीत भारत की अगुआई करने के लिए सर्वश्रेष्ठ : अंजुम

नई दिल्ली : पूर्व भारतीय क्रिकेटर अंजुम चोपड़ा का मानना है कि व्यस्त अंतर्रष्ट्रीय सत्र और आगामी महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) से पूर्व कप्तानी को लेकर बहस फिर से शुरू होने के बावजूद हरमनप्रीत कौर महिला राष्ट्रीय टीम की कप्तानी करने के लिए सर्वश्रेष्ठ हैं।

विश्व कप में जीत के बाद भारतीय महिला टीम श्रीलंका के खिलाफ टी20 श्रृंखला के साथ अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी करेगी और ऐसे में अंजुम का मानना है कि कप्तानी में बदलाव के बारे में अटकलें लगाने की जगह ध्यान इस लय को बरकरार रखने पर होना चाहिए। अंजुम ने कहा पिछले इतने वर्षों से मेरा निजी तौर पर मानना है कि हरमनप्रीत कौर एक मैच विजेता हैं। मुझे नहीं लगता कि मुझे और कुछ कहने की जरूरत है। उन्होंने कहा, वह इस भारतीय टीम की कप्तानी करने के लिए सर्वश्रेष्ठ हैं। अंजुम ने पूर्व भारतीय कप्तान शांता रंगास्वामी के कप्तान बदलने के हालिया सुझाव को खारिज करते हुए कहा कि ऐसे विचार निजी होते हैं। उन्होंने कहा, हर किसी को अपनी बात कहने का हक है। इसमें कुछ भी सही या गलत नहीं है।

जीत की खुशी

बैंकॉक में साउथईस्ट एशियन गेम्स में गुरुवार को टेनिस के महिला फाइनल में थाईलैंड की एम. सवांगकाव को हराने के बाद जश्न मनातीं फिलीपींस की एला एलेक्जेंड्रा। ● एजेंसी

डब्ल्यूएफआई ने नई चयन नीति लागू की

नई दिल्ली, एजेंसी

- **राष्ट्रीय शिविर में पहलवानों की भागीदारी अनिवार्य**
- **व्यक्तिगत अभ्यास कर रहे पहलवानों को छूट**

भारतीय कुश्ती महासंघ ने नई चयन नीति लागू की है जिसके तहत राष्ट्रीय चयन के लिए राष्ट्रीय शिविरों में भागीदारी अनिवार्य है हालांकि व्यक्तिगत अभ्यास कर रहे पहलवानों को इससे छूट रहेगी।

इसके साथ ही ओलंपिक खेलों में कोटा जीतने वाले पहलवानों को एक दौर के अंतिम चयन ट्रायल में भाग लेना होगा। डब्ल्यूएफआई की आम परिषद की हाल ही में अहमदाबाद में हुई बैठक में इस नीति को मंजूरी दी गई। इसे फीडबैक और समीक्षा लिये भारतीय खेल प्राधिकरण को भी दिया गया है। नीति में कहा गया राष्ट्रीय कोचिंग शिविरों में भागीदारी सभी पहलवानों के लिये अनिवार्य होगी जिसमे एलीट और दिग्गज पहलवान शामिल हैं।

बेंगलुरु में डब्ल्यूटीएल में शॉट लगातीं ईगल्स की पाउला बाडोसा। एजेंसी

बाडोसा के प्रदर्शन से ईगल्स जीता

बेंगलुरु, एजेंसी

सुमित नागल और पाउला बाडोसा के शानदार प्रदर्शन से ईगल्स ने बृहस्पतिवार को यहां काइट्स को हराकर विश्व टेनिस लीग (डब्ल्यूटीएल) में फाइनल की ओर मजबूत कदम बढ़ाए। नागल ने बेहद कड़े मुकाबले में दक्षिणेश्वर सुरेश को 40 मिनट में 7-6 से हराकर ईगल्स को विजयी शुरुआत दिलाई।

बाडोसा ने महिला एकल के एकतरफा मुकाबले में मार्टा कोस्त्युक को 6-1 से शिकस्त दी। बाडोसा ने इसके बाद गेल मोनफिल्स के साथ मिलकर दक्षिणेश्वर और कोस्त्युक की जोड़ी को 6-3 से हराया।

पुरुष युगल में भी मोनफिल्स और नागल ने निक किर्गियोस और दक्षिणेश्वर को 6-3 से हराकर ईगल्स की 25-13 से जीत सुनिश्चित की।

घोषणा फुटबॉल की सर्वोच्च संस्था फीफा ने की बढ़ोत्तरी, अमेरिका, कनाडा और मैक्सिको में 11 जून से 19 जुलाई तक होगा मुकाबला

विश्व कप विजेता को मिलेगी 5 करोड़ डॉलर की पुरस्कार राशि

मैनचेस्टर, एजेंसी

विश्व फुटबॉल की सर्वोच्च संस्था फीफा ने घोषणा की कि 2026 में होने वाले विश्व कप के विजेता को 655 मिलियन डॉलर की कुल पुरस्कार राशि में से 50 मिलियन डॉलर (पांच करोड डॉलर) मिलेंगे। अर्जेंटीना को 2022 में चैंपियन बनने पर 42 मिलियन डॉलर और फ्रांस को 2018 में विश्व कप जीतने पर 38 मिलियन डॉलर की पुरस्कार राशि मिली थी जिसमें इस बार बढ़ोतरी तो हुई है, लेकिन यह राशि इस साल अपेक्षाकृत कम चर्चित क्लब विश्व कप जीतने के लिए चेल्सी को मिली पुरस्कार राशि से आधे से भी कम है।

क्लब विश्व कप की कुल पुरस्कार राशि एक अरब डॉलर थी। चेल्सी को चैंपियन बनने पर 125 मिलियन डॉलर की पुरस्कार राशि मिली थी। अमेरिका, कनाडा और मैक्सिको में 11 जून से 19 जुलाई तक होने वाले विश्व कप के लिए कुल पुरस्कार राशि कतर में 2022 में आयोजित किए गए टूर्नामेंट के लिए निर्धारित 440 मिलियन डॉलर की तुलना में 48.9 प्रतिशत अधिक है। विश्व कप 2026 की कुल पुरस्कार राशि ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में 2023 में खेले गए महिला विश्व कप की 110 मिलियन डॉलर की पुरस्कार राशि से लगभग छह गुना अधिक होगी। फीफा अध्यक्ष जियानी इन्फेंटिनो ने अगले विश्व कप में पुरुष और महिला खिलाड़ियों के लिए समान पुरस्कार राशि का लक्ष्य निर्धारित किया है। अगला महिला विश्व कप 2027 में ब्राजील में होगा। विश्व कप 2026 में कुल 48 टीम भाग लेंगी। ग्रुप चरण में बाहर होने वाली टीमों को नौ मिलियन डॉलर, अगले दौर में पहुंचने वाली टीमों को 11 मिलियन डॉलर और राउंड ऑफ़ 16 में पहुंचने वाली टीमों को 15 मिलियन डॉलर मिलेंगे।

क्वार्टरफाइनल में पहुंचने वाली टीमों को 19 मिलियन डॉलर, चौथे स्थान पर रहने वाली टीम को 27 मिलियन डॉलर, तीसरे स्थान पर रहने वाली टीम को 29 मिलियन डॉलर और फाइनल में हारने वाली टीम को 33 मिलियन डॉलर की पुरस्कार राशि मिलेगी।

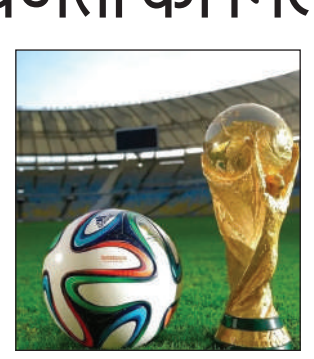

राज्यसभा में उठा भारतीय फुटबॉल के भविष्य का मुद्दा

नई दिल्ली। भारतीय फुटबॉल के भविष्य का मुद्दा गुरुवार को गुरुवार को राज्यसभा में भी उठाया गया तथा कांग्रेस के जोस के मणि ने कुराकाओ जैसे छोटा देश के विश्व कप के लिए क्वालीफाई करने का हवाला देते हुए खेल मंत्री मनसुख मांडविया से इस खेल के लिए सरकार की दीर्घकालिक योजना के बारे में पूछा। भारत में फुटबॉल का स्तर लगातार गिर रहा है तथा व्यावसायिक साझेदार नहीं मिलने के कारण इस साल अभी तक घरेलू सत्र भी शुरू नहीं हो पाया है। केरल का प्रतिनिधित्व करने वाले मणि ने पूछा कि क्या सरकार ने इस बात पर गौर किया है कि 158000 की आबादी वाले कुराकाओ ने हाल ही में अगले साल होने वाले फीफा विश्व कप के लिए क्वालीफाई कर लिया है। उन्होंने यह भी पूछा कि क्या सरकार के पास ऐसी कोई दीर्घकालिक योजनाएं हैं जिससे भारत को विश्व कप के लिए क्वालीफाई करने में मदद मिले। उन्होंने जानना चाहा कि देश में फुटबॉल प्रतिभा को आगे बढ़ाने के लिए जमीनी स्तर पर क्या कदम उठाए गए हैं। मांडविया ने कुराकाओ का जिक्र किए बिना जवाब दिया विश्व कप के लिए क्वालीफाई करना फुटबॉल की विश्व में सर्वोच्च संस्था फीफा द्वारा निर्धारित मानदंडों पर आधारित है। विश्व कप या विश्व चैंपियनशिप में भागीदारी के लिए कदम उठाने सहित किसी विशिष्ट खेल के विकास की जिम्मेदारी संबंधित राष्ट्रीय खेल महासंघ की होती है। उन्होंने कहा कि अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ को देश में फुटबॉल खेल को बढ़ावा देने के लिए मंत्रालय ने राष्ट्रीय खेल महासंघ के रूप में मान्यता दी है।